MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2018
Issue-22, Vol-06

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शुद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

अत: बीजोप्ति चक्र की महत्ता को कृषि की दृष्टि से शुभाशुभ फल का ज्ञान कराने वाले चक्र के रूप में अनन्य कहा जा सकता है।

संदर्भ :-

१. अहिलांगलबीजोप्तिवृषाख्यं सप्तनाडिकम्। चक्रं सांवत्सरस्थानं मासं चक्रं दिनाह्वयम्।। — नरपतिजयचर्यास्वरोदय:, व्या.पं. गणेशदत्त पाठक, चौखम्भा संस्कश्त संस्थान, वाराणसी, संस्करण २००८, सूत्र ३१

२. नरपतिजयचर्यास्वरोदय :, पृ. २०३

३. पूर्वकालामृतम्, यात्रादि प्रकरणम्, व्या. डॉ. सुरेश चन्द मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, संस्करण १९९९, सूत्र ३९

४. राहुभादष्टमं यावत्पूर्यभूपनखानि च। बीजोप्तिं वर्जयेत्तासां पुच्छस्यापि च चतुष्ट्यम्।।१।। सिक्तं कज्जलमन्नवृद्धिमधिकं निस्तण्डुलानि क्रमात्स्यादीतिप्रभवं भयं च फणितो बीजोप्तिकालेश्र्क्भात्।।२।। — नरपतिजयचयस्वरोदय:, पं. गणेश दत्त पाठक, पृ. २०३.

५. राहुभादष्टमं यावद् द्वादशं षोडशं तथा। त्रिंशजिनाच्चतुष्कं च बीजवापे परित्यजेत्।। — संस्कृत कृषि शास्त्र, डॉ. नीरज शर्मा, लिटरेरी सर्किल जयपुर, २०१३, पृ. २२४

६. कृषि पराशर, सूत्र १७०—१७१

७. धातृद्वये कौणपपित्र्यपुष्ये हस्तत्रये त्र्युत्तरमैत्रभेषु। पौष्णे धनिष्ठास्वथवाश्विनीषु बीजोप्तिरुत्कृष्ट फलप्रदा स्यात्।। — संस्कृत कृषि शास्त्र, पृ. २२३

८. पूर्वकालामश्तम्, मिश्र प्रकरणम्, सूत्र ४२

९. तत्रैव, सूत्र ४०

❑❑❑

45

भुंजिया जनजाति में शक्ति संरचना के प्रतिमान एवं उसमें होने वाला परिवर्तन

डॉ. अनिता राजपुरिया ,
प्राध्यापक समाजशास्त्र
बी.सी.एस. शास. स्ना. महाविद्यालय धमतरी

डॉ. राजेश शुक्ला ,
प्राध्यापक समाजशास्त्र
दुर्गा महाविद्यालय रायपुर

डॉ. प्रमिला नागवंशी ,
सहायक प्राध्यापक
चन्द्रकांत डड़सेना शा. महाविद्यालय पिथौरा

****

भुंजिया जनजाति छत्तीसगढ़ की अत्यंत पिछड़ी जनजातियों में से एक है छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रदेश में निवासरत पांच विशेष पिछड़ी आदिम जनजाति कमार, बैगा, अबूझमाड़िया, पहाड़ी कोरवा एवं बिरहोर की श्रेणी मे ही भुंजिया तथा पंडो जनजाति को चिन्हित किया गया है। भुंजिया जनजाति को राज्य सरकार द्वारा लघु अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया है । यह जनजाति नवगठित गरियाबंद जिला के गरियाबंद, मैनपुर, छुरा एवं धमतरी जिला के नगरी विकासखण्ड में निवासरत है हालांकि ये महासमुंद जिला के बागबाहरा, खल्लारी, महासमुंद तथा उड़ीसा प्रदेश के सीमावर्ती सोनाबेड़ा आदि में भी आबाद है । परन्तु इनका संकेन्द्रण या केन्द्रीय निवास गरियाबंद पूर्व का वृन्दावनगढ़ रहा है। शासन द्वारा जनजाति के सर्वांगीण विकास के लिये रुप में भुंजिया विकास अभिकरण बनाकर उसका मु यालय गरियाबंद को रखा गया है । भुंजिया जनजाति द्रविड़ भूमि की जनजाति है जिसके तीन सामाजिक विभाग है - (क) चौखुटिया भुंजिया (ख) चिड़ा भुंजिया (घ) खल्लारिया भुंजिया

भुंजिया जनजाति आज भी सामाजिक नियंत्रण के

अनौपचारिक साधनों द्वारा नियंत्रित है भुंजिया जनजाति की जाति पंचायत उसके सामाजिक संगठन का महत्वपूर्ण आधार है। भुंजिया जनजाति के समस्त सामाजिक , सांस्कृतिक जीवन का नियंत्रण समस्त विवादों एवं झगड़ों का निपटारा , जाति पंचायत के माध्यम से होता है । भुंजिया जाति पंचायत के द्वारा सुनाये निर्णयों का पूरा स मान करते है तथा उसके निर्णय को अंतिम फैसला के रुप में मानते हैं । भुंजिया जनजाति पंचायत द्वारा सुधारात्मक एवं व्यवस्थात्मक दण्ड भी दिये जाते हैं ।

भुंजिया जनजाति पंचायत में प्रत्येक ग्राम की स्वतंत्र जाति पंचायत होती है । जिसका मुखिया पुजारी होता है जो समस्त प्रकार के निर्णय लेने में स्वतंत्र होता है इसके बाद राजपाती , दीवान, चपरासी के पद होता है और अंतिम सदस्य पंच होते है । राजपाती कार्यकारी व्यक्ति के रुप में पंचायत का संचालन एवं नियंत्रण करता है । दीवान राजपाती का सहयोगी होता है तथा चौथे स्थान पर चपरासी होता है जो अपने से ऊपर एवं अपने से नीचे के सदस्यो में संदेशों का आदान प्रदान करता है । पंच, भुंजिया पंचायत की प्राथमिक इकाई के रुप में स्थानीय लोगों से संपर्क कर जाति पंचायत में किसी मामले को प्रस्तुत करने हेतु मार्गदर्शन देते हैं । बारह ग्रामों को मिलाकर परिक्षेत्र बनता है और सभी परिक्षेत्रों को मिलाकर भुंजिया महापंचायत का निर्माण होता है ।

भुंजिया जाति पंचायत, सामाजिक, धार्मिक , राजनीतिक सुधारात्मक कार्य करती है तथा अपराधों हेतु दण्ड निर्धारित करती है । भुंजिया जाति पंचायत की नियमावली होती है जिसके अनुसार विभिन्न अपराधों हेतु दण्ड निर्धारित होते हैं । जाति पंचायत की बैठकों के भी नियम होते हैं जाति पंचायत के ऊपर परिक्षेत्र स्तरीय पंचायत, फिर महापंचायत होती है । व्यक्ति जब पंचायत तथा महापंचायत के निर्णय से असंतुष्ट होता है तो वह महापंचायत में अपनी बात रखता है जो उसकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनकर निर्णय देता है ।

आज भुंजिया जाति पंचायत भी परिवर्तन की प्रक्रिया से जुड़ गयी है गैर जनजातिय व्यक्तियों और संगठन के प्रभाव, सरकारी योजनाओं का प्रभाव, राजनैतिक दलों के प्रभाव के कारण तथा स्थानीय ग्राम पंचायतो के प्रभाव के कारण , आवागमन संचार साधनों तथा नगरीय स पर्क का प्रभाव तथा शासन का हितकारी नीतियों के कारण आज भुंजिया लोगों की पर परागत सोच में एवं वैचारिकी में बदलाव आया है जिससे जाति पैंचायत एवं पर परागत शक्ति संरचना में बदलाव आया है ।

अध्ययन का उद्देश्य :-

क)भुंजियां जनजाति की पर परात्मक शक्ति संरचना के प्रतिमान तथा उसमें होने वाले परिवर्तनों को ज्ञात करना ।

ख) भुंजिया जनजाति की जाति पंचायत में वृद्ध एवं प्रौढ़ लोगों की तुलना में युवाओं की भूमिका की स्थिति को ज्ञात करना ।

अध्ययन क्षेत्र :-

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु गरियाबंद जिला की तीनों तहसीलों गरियाबंद, मैनपुर ,छुरा के चार-चार ग्रामों अर्थात कुल कछ ग्रामों के उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति से चयनित खक उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी है ।

अध्ययन का महत्व :-

भुंजिया जाति पंचायत की सर्वोच्चता एवं उसके बनाये नियमों के परिपालन में कमी आयी है । जाति पंचायत के नियमों की अवहेलना तथा उनमें वृद्धो के स्थान पर युवाओं की बढ़ती भागीदारी को ज्ञात करना ।

उपकल्पना :-

भुंजिया जाति पंचायत विभिन्न विवादास्पद मामलों के निराकरण में आज भी प्रभावशाली संस्था है यद्यपि कुछ मामलों में भुंजिया वैधानिक संस्थाओं से संबद्ध हो रहे हैं। भुंजिया जनजाति के शक्ति संरचना में वृद्धों की तुलना में युवाओं की भागीदारी बढ़ने के कारण इनकी शक्ति संरचना में परिवर्तन आया है ।

तालिका क्रमांक क

जातीय पंचायत की प्रभावशाली भूमिका विषयक राय

क्र.	राय	गरियाबंद आवृति प्रतिशत	मैनपुर आवृति प्रतिशत	छुरा आवृति प्रतिशत	योग आवृति प्रतिशत
क	हां	मछ (भ्र.फ्)	भ्ल (५-.फ्)	प (भ्फ.भ्ल)	क- (भ्र.ज्ञ)
ख	नहीं	प- (फ्.ख्)	फ (फ्.छ)	क- (फ.-प)	रर (फ्.फ्)
ग	जानकारी नहीं	कक (-.ख्)	- (-.फ्ल)	ल (कछ.१)	ख्ल (क.छ्य)

तालिका क्र. क के अनुसार अध्ययनगत उत्तरदाताओं से जातीय पंचायत की भूमिका प्रभावशाली है या नही इस

प्रश्न के उत्तर में ⅴ.ख प्रतिशत अर्थात आधे से अधिक उत्तरदाताओं ने प्रभावशाली भूमिका होने एवं एक तिहाई उत्तरदाताओं ने जातीय पंचायत की भूमिका प्रभावशाली न होने की जानकारी दी जबकि क.ख्म प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस संबंध मे जानकारी न होने की बात कही । इन उत्तरदाताओं का कहना है कि वे तो जातीय पंचायत के नियमों का पालन करते हैं परन्तु अन्य स्थानों पर €या स्थिति है ये वे नही जानते। अतः उत्तर देने में असमर्थ है। इससे स्पष्ट होता है कि आज भी आधे से अधिक उत्तरदाता जाति पंचायत की भूमिका को प्रभावशाली मानते हैं यह तथ्य शोध परिकल्पना की पुष्टि करता है ।

तालिका क्र. ख

जातीय पंचायत का सामाजिक विकास में योगदान

क्र.	योगदान	गरियाबंद आवृति प्रतिशत	मैनपुर आवृति प्रतिशत	छुरा आवृति प्रतिशत	योग आवृति प्रतिशत
त.	सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का नियमन	– (त.ळ)	ल (ख्ख.ध)	ख्ख (ल्प.–प)	खख्र (ल्प.लव)
ख.	धार्मिक पर पराओं प्रथाओं त्योहारों से संबंधी नियमों का संपादन एवं परिपालन	क्ख्ळ (क'''.''')	–ड (क''.'')	ध्द (क''.'')	ळ्ड (क''.'')
प.	यायिक एवं दण्ड संबंधी कार्य संपादन	रर (ल्लर.भ्र)	रछ (रभ.व्छ)	ध'' (९–.सर)	खछ (ल्प.पप)
ब.	राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि एवं जागरुकता में सहयोग	र (ल्लव्ल्स)	ल्हा (ल्हा.क्स)	ळ (र.ध्म)	छ (ल्प.पप)
भ.	शासन द्वारा प्रदत्त सुविधाएं प्रदान करने में सहयोग	ल्ल्ध (म्म.–ड)	म्छ (म्छ.भ्र)	ळ (ल्लर.भ्ल्ल)	क्रव्र (म्र.भ्क)
म.	पर परागत रुढ़ियों एवं अंधविश्वास के निराकरण में सहयोग	म्ड (भ्क.ख्ध)	ड– (ल्लव.रर)	ब्स (ल्ला.ल्ल–)	क्ल्ध (म्म.ख्–)
ल.	शिक्षा व्यवस्था में सुधार	ध– (भ्छ.म्र)	ल्ल्व (र.–ड)	म्छ (भ्ल.व्छ)	क्प्र (भ्छ.ल्ल्व)

(उत्तरदाताओं द्वारा एक से अधिक उत्तर दिये गये)

तालिका क्र. ख के अनुसार अध्ययनगत उत्तरदाताओं द्वारा जातीय पंचायत के द्वारा सामाजिक विकास हेतु किये जाने वाले योगदान से संबंधित प्रश्न के उत्तर में उत्तरदाताओं द्वारा एक से अधिक उत्तर दिये गये जिसमें शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने धार्मिक पर पराओं, प्रथाओं, त्योहारों से संबंधी नियमों का संपादन एवं परिपालन करने, ल्प.लव प्रतिशत उत्तरदाओं ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का नियमन करने की बात कही । इन उत्तरदाताओं ने बताया कि जन्म, मृत्यु, विवाह आदि सारे संस्कार एवं उत्सव एवं त्यौहारों को जातीय पंचायत के नियमों के अनुसार मनाया जाता है ।

ल्प.पप प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जाति पंचायत द्वारा न्यायिक एवं दण्ड संबंधी कार्य संपादित करने की बात कही । उत्तरदाताओं ने अनौपचारिक बातचीत में बताया कि जाति पंचायत द्वारा समाज के लोगों द्वारा मदिरापान निषेध संबंधी नियम तोड़ने पर भ्ध रुपये दण्ड , मदिरा बनाने एवं बेचने पर भ्ध रु दण्ड , सामाजिक कार्यों में मदिरा का उपयोग संबंधी नियम अर्थात एक पाव से अधिक शराब वैवाहिक या धार्मिक आयोजन में उपयोग करने पर भ्ध रु. अर्थदण्ड ,मारपीट करने पर भ्ध रुपये दण्ड जातीय पंचायत को और व्छ रुपये मार खाने वाले को देने एवं स्त्री को मारने पर कभ्ध रुपये दण्ड, गर्भस्थ स्त्री को मारने पर कभ्ध रुपये दण्ड, मातातुल्य स्त्री को मारने पर कभ्ध रुपये दण्ड तथा अवैध संबंध पाये जाने पर भ्ध रुपये दण्ड । इसके अतिरि€त विवाह विच्छेद करने पर , दुसरे जाति की स्त्री से विवाह कर पत्नि के रुप में रखने पर, नारी धर्म का पालन न करने पर, दण्ड दहेज की मांग करने आदि पर दण्ड का प्रावधान की जानकारी दी ।

ख्भ.ख्म प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि जाति पंचायत के मुखिया , विभिन्न राजनीतिक दलों से संबंध है जिसके कारण लोगों की राजनीति में भागीदारी बढ़ी है तथा लोगों में राजनीतिक जागरुकता बढ़ी है ।

म्र.भ्क प्रतिशत उत्तरदाताओं ने शासन से सुविधाएं प्राप्त कराने में सहयोग करने की बात कही। म्म.ख्- प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पर परागत अंधविश्वास एवं रुढ़ियों के निराकरण में सहयोग करने की एवं भ्छ.ख्ल प्रतिशत उत्तरदाताओं ने शिक्षा व्यवस्था में सुधार की बात कही । उत्तरदाताओं ने अनौपचारिक वार्तालाप में बताया कि अगर आर्थिक श€ित होने पर भी बच्चों को भ्वीं या आठवीं तक न पढ़ाने पर भ्ध रुपये अर्थदण्ड देना पड़ता है । भुंजिया जनजाति की श€ित संरचना का केन्द्र कही जाने वाली जाति पंचायत के द्वारा अनेक कार्य संपादित करके उन्हें सहयोग देने एवं उन पर नियंत्रण रखने का कार्य किया जाता है ।

तालिका क्र. प

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 UGC Approved Sr.No.62759 Vidyawarta® April To June 2018 Issue-22, Vol-06

बदलते परिवेश में जाति पंचायत की प्रभावशीलता में परिवर्तन का अनुभव करना

क्र.	अनुभव करना	गरियाबंद आवृति प्रतिशत	मैनपुर आवृति प्रतिशत	छुरा आवृति प्रतिशत	योग आवृति प्रतिशत
[illegible]	पूर्णत:	-	-	-	-
[illegible]	कुछ हद तक	[illegible] ([illegible])	[illegible] ([illegible])	[illegible] ([illegible])	[illegible] ([illegible])
[illegible]	बिलकुल नहीं	-	-	-	-
	योग	[illegible] ([illegible])	[illegible] ([illegible])	[illegible] ([illegible])	[illegible] ([illegible])

तालिका क्र. प के अनुसार बदलते परिवेश में भुंजिया जाति पंचायत की प्रभावशीलता में परिवर्तन अनुभव करने के संबंध में शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कुछ हद तक परिवर्तन की बात कही किसी भी उत्तरदाता ने न तो पूर्णत: परिवर्तन की बात कही न ही बिलकुल परिवर्तन नही । इन दोनों तथ्य से इंकार किया ।

इस तरह छत्तीसगढ़ की भुंजिया जनजाति की जनजातीय पंचायत एवं जनजातीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के लिये शासन के साथ साथ आम जनमानस स्वयंसेवी संगठनों, राजनीतिज्ञों के ईमानदारी पूर्ण प्रयास की महति आवश्यकता है ।

वेबसाइट सूची

* छत्तीसगढ़ की जनजातियां व www. cgsamanyagyan.com

* Chhattisgarh Exams, CGPSC, CGVYAPAM in Hindi www. chhattisgar hexam.in / 2016/11/special backword tribes-in - chhattisgarh.html? m=1

* टूट रहा है लाल बंगले का तिलस्म । मु यधारा में चल पड़ी है भुंजिया जनजाति की नई पीढ़ी, ज्ञानेश तिवारी http:// dakshinapath.blogspot.in/2012/ 12/blog-post.19html? m=1

* जनजातियों को छ: माह में प्रमाण पत्र www.deshbandhu.co.in/news/ chhattisgarh

* आर्थिक तंगी बनी भुंजिया आदिवासियों के शिक्षा में रोड़ा, कलेक्टर से मदद की आस m.patrika.com

* छत्तीसगढ़ की कुछ जनजातियों को संवैधानिक लाभ दिलाने का प्रस्ताव khabarveer.in

* chhattisgarh ki Bhunjia Janjati ka samajik arthik shanskritik adhyayan. www. academia.edu

* kamar bhunjia sheduled tribe is far away from govt. schemes

❑❑❑

UGC Approved Jr.No.43053

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

April 2018, Issue-40, Vol-04

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor

Dr. Ravindranath Kewat

(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 5.011(IIJIF) | Printing Area™ International Research journal | April 2018 Issue-40, Vol-04 | 06

Printing Area

Index

1) "Complications of Soybean Farming in Maharashtra State"
Dr. N. H. Awade, Mukhed - Mr. Suresh S. Kashide, Degloor. || 10

2) Hero and Heroism: Thomas carlyle's The Hero as a Poet
DR.Priya Bajaj, Bilaspur (CG) || 15

3) Religious Hypocrisy in Moliere's Tartuffe
Mr. Ashish Janardan Bhagat, Research Scholar || 18

4) Sea Beach of East Medinipur, heart of the Domestic Tourism of West B ...
Anima Dash, Mugberia : East Medinipur || 21

5) Study of Factors affecting self management towards elementary school ....
Dr. Hemlata Dinker, Bhopal || 25

6) Opportunities for Quality Enhancement in the Light of Revised Accreditation ....
Dr. Shriram G. Gahane, Desaiganj (Wadsa), Dist- Gadchiroli. || 27

7) EFFECT OF ROLE CONFLICT ON THE PRIMARY LEVEL TEACHERS OF....
Dr. Prakriti James, Bilaspur || 31

8) Indian Arbitration Act: Post amendment effect
Maynk Pratap, Banaras Hindu University || 35

9) Nature Images in the Poetry of Seamus Heaney
Dr. PoojanPrasad, Moradabad, U.P. India. || 41

10) JUDICIAL PRONOUNCEMENTS RELATED TO RULE OF ABSOLUTE ....
Robin Kumar, Hoshiarpur, Punjab || 44

11) A Study on Innovative Library Services
Yadla Prabhakar, Hyderabad || 48

12) THE INFLUENCE OF RESUDUAL AND EDUCATIONAL STATUS ON ....
Mrs.Kamlesh Upadhyay, Neemuch (MP) || 52

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

13) EFFECTIVENESS OF BRAND PREFERENCE ON CONSUMERS WITH ....
Dr. SHAIKH TABASSUM HAMEED, KALABURGI 585102, KARNATAKA || 55

14) WOMEN TRAFFICKING IN INDIA DURING 2011 TO 2016
Satendra Kumar Sharma, Allahabad || 60

15) Job Satisfaction Among Higher Secondary Schools Teachers of Bilaspur....
Dr. Anita Singh, Chhattisgarh Bilaspur || 63

16) THE INFLUENCE OF MEDIUM AND LEVEL OF EDUCATION ON NEEDS OF ....
Mrs.Kamlesh Upadhyay, Neemuch (MP) || 69

17) An Analysis of SSA in Upliftment of Socio-Economic Status in some .....
Dinesh Yadav, University of Allahabad || 71

18) Application of Graph Theory in Transportation
Sanjay Kumar Bisen, Bhopal - Dr. Brajendra Tiwari, Bhopal (M.P.) || 78

19) वैचारिक वाङ्मयाची संकल्पना व स्वरूप
डॉ.नागनाथ लक्ष्मण आवले, कलबुर्गी || 83

20) लोकसंस्कृतीचा उपासक: पोतराज
डॉ.बी.आर.दहिफळे, उदगीर जि.लातूर || 84

21) इंदिरा सागर प्रकल्पा अंतर्गत पुनर्वसित लोकांच्या सामाजिक व आर्थिक ...
प्रा. हरेश टि. गजभिये, चिमूर, जिल्हा चंद्रपूर || 88

22) कॅशलेस अर्थव्यवस्था:—एक दृष्टीक्षेप
प्रा.निलेश दे. हलामी, देसाईगंज जि.गडचिरोली || 91

23) क्रांतीकारक : बिरसा मुंडा
प्रा.डॉ. महावीर बि. कांबळे, रेठरे बुद्रुक, ता.कराड, जि.सातारा || 94

24) जागतीकीकरण आणि कृषी क्षेत्र
प्रा. संतोष ए. कावरे, तुकूम, चंद्रपूर || 97

25) वि.स.खांडेकरांच्या साहित्यातील सामाजिकता
प्रा.एकनाथ शामराव पाटील, हातकणंगले, जि. कोल्हापूर || 101

www.vidyawarta.com/03 _ http://www.printingarea.blogspot.com

26) बनगरवाडीतील समाजचित्रण
प्रा. विठ्ठल नामदेव रोटे, बोरगाव, ता. वाळवा, जि. सांगली || 105

27) चिंता आणि खेळ
डॉ. आर. तिवारी, गोंडपिपरी, जि. चंद्रपूर || 108

28) वर्धा जिल्ह्यातील सामाजिक विकास चळवळीमध्ये चेतना विकास संस्थेच .....
प्रा. डॉ. माया मनोहर वानखडे, चांदूर रेल्वे, जि. अमरावती || 114

29) वर्तिका नन्दा की कविताओं मे व्यक्त स्त्री भावना
डॉ. नीता श्रीकांत दौलतकर, धारवाड. || 118

30) कथक नृत्य के रायगढ़ घराने के शिल्पकार राजा चक्रधर सिंह
डॉ. सुचित्रा हरमलकर, इन्दौर || 120

31) भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में व्यंग्यबोध
डॉ. कलशेट्टी एम. के., मुरुम || 122

32) ''कथक के वात्सल्य रस प्रदर्शन मे सूर के पदों की उपादेयता''
सुश्री योगिता मण्डलिक, भवन इन्दौर || 125

33) सामन्ती व्यवस्था को चित्रित करता उपन्यास 'आंगन में एक वृक्ष'
प्रा.डॉ.कल्पना राजेंद्र पाटील, अमलनेर || 128

34) प्रवासी भारतीय साहित्यकारों का हिंदी कहानियों में योगदान (मॉरिशस के ...
प्रा. विजय सोनजे, फैजपूर, जि. जलगाँव || 133

35) भारतवर्ष में आत्महत्याएँ : समाजशास्त्रीय चिंतन
डॉ. राजेश शुक्ला, रायपुर – डॉ.अनिता राजपुरिया, धमतरी || 139

36) स्वराज्य की अवधारणा : भारतीय चिंतन के संदर्भ में
संजय कुमार साहु, हजारीबाग, झारखण्ड। || 144

37) भारतीय समाज और ग्रामीण विकास में शासन व्यवस्था एव ग्राम पंचायतों ...
शीरेन्द्र सिंह, इलाहाबाद || 150

38) कृषि विकास एवं सहकारी साख संस्थाएं
डॉ. नीरज कुमार सिंह, गोरखपुर || 154

39) डिजिटल बैंकिंग अवसर एवं चुनौतियाँ – (स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के विशेष सन्दर्भ में)
डॉ. राजीव कुमार झालानी – डॉ. अंजना गोरानी, इन्दौर || 159

40) साहित्यिक–संस्कृति और मूल्याधारित पाठोन्मुखी आलोचना
डॉ. विनोद कुमार, फगवाड़ा(पंजाब), || 164

41) आचार्य रजनीश और शिक्षक के उत्तरदायित्व
सत्येन्द्र पाल सिंह, डा० आराधना पाण्डे, लखनऊ || 171

42) भदोही जिले के कक्षा नौ के छात्र–छात्राओं के आत्मबोध का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के...
अखिलेश कुमार उपाध्याय, अल्मोड़ा, नैनीताल || 178

43) ईको टूरिज्म डेस्टीनेशन के क्षेत्र में केशोपुर कम्युनिटी रिजर्व, गुरदासपुर की अवधार...
विनोद कुमार, –अश्वनी कायरू || 182

44) वर्तमान स्त्रातेजिक परिदृश्य में भारत का रक्षा व्यय (२०१८–१९) : एक मूल्यांकन
वासुदेवन् मणि त्रिपाठी, इलाहाबाद –आकाश सिंह, इलाहाबाद। || 189

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
हर्षवर्धन पब्लिकेशन प्रा.लि.
मु.पो.लिंबागणेश, ता.जि.बीड पिन : ४३११२६ (महाराष्ट्र)
harshwardhanpubli@gamil.com, vaidyawarta@gmail.com
सर्व प्रकारच्या शैक्षणिक व संदर्भ ग्रंथाचे प्रकाशक आणि वितरक

http://www.printingarea.blogspot.com

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 5.011(IIJIF) | Printing Area™ International Research journal | April 2018 Issue-40, Vol-04 | 0139

35

भारतवर्ष में आत्महत्याएँ : समाजशास्त्रीय चिंतन

डॉ. राजेश शुक्ला,
प्राध्यापक समाजशास्त्र
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

डॉ.अनिता राजपुरिया ,
प्राध्यापक समाजशास्त्र
बी.सी.एस. शा.स्ना.महाविद्यालय धमतरी

==========***********==============

आत्महत्या वैयक्तिक विघटन की चरम ...व्यक्ति है व्यक्ति का आत्म जब विभिन्न ...जिक दबावों के इतने अधीन हो जाता है कि ... अपना जीवन समाप्त कर लेता है। तब इस ...ने को हम आत्महत्या कहते है। कई लोग ...महत्या को मानसिक दुर्बलता का परिणाम मानते ... वास्तविकता यह है कि यह एक सामाजिक ... या सामाजिक घटना भी है।

आत्महत्या को सामाजिक तथ्य के रूप में ...पित करने का श्रेय इमाईल दुर्खीम को जाता है ...र्खीम का ये मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति का ...िक सामूहिक चेतना के अधीन होता है यह ...तना व्यक्ति को एक निश्चित रूप में व्यवहार ...ने का आग्रह करती है और जब दबाव व्यक्ति ...प में न होकर आवश्यकता से अधिक या ...डनात्मक हो जाता है तो व्यक्ति आत्महत्या ...र लेता है या उसकी आत्महत्या करने की संभावना ...ढ़ जाती है।

आत्महत्या शब्द का सामान्य अर्थ व्यक्ति द्वारा जानबूझ कर अपने जीवन को समाप्त करना है। वैसे आत्महत्या की अवधारणा इतनी सरल नही है। क्योंकि आत्महत्या जैसे व्यवहार अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, मानसिक परिस्थितियाँ आदि जटिल तत्वों का समावेश होता है।

आत्महत्या क्या है?

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका द्वारा "आत्महत्या स्वच्छापूर्ण और जानबूझ कर की जाने वाली आत्महनन की क्रिया है।

दुर्खीम – आत्महत्या मृत्यु की उन समस्त घटनाओं के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द है जो मरने वाले की सकारात्मक या नकारात्मक क्रिया का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिणाम होता है। जिसके भावी परिणाम (मृत्यु) को वह जानता है। आत्महत्या की परिभाषाओं से निम्न पक्ष प्रगट होते है :–

१. आत्महत्या में स्वंय व्यक्ति अपने को मारता है। यह कार्य दूसरों की सहायता से नही करता।
२. यह इरादतन अपने आप को जानबूझकर मारने की क्रिया है।
३. आत्महत्या में व्यक्ति अपने क्रियाओं के प्रति जागरूक होता है तथा उसका परिणाम क्या होगा वह जानता है।
४. आत्महत्या के लिए व्यक्ति स्वंय ही प्रयास करता है तथा वही उस विधि का चयन करता है जो आत्महत्या के लिए प्रयोग करेगा।
५. आत्महत्या व्यक्ति विघटन के साथ–साथ सामाजिक विघटन का भी प्रतीक है।

वैश्विक परिदृश्य एवं भारत में आत्म हत्याएँ

वैश्विक परिदृश्य मे देखे तो दुनिया में लगभग आठ लाख लोग हर वर्ष हत्या करते है अर्थात दुनिया के किसी न किसी हिस्से में लगभग हर ४० सेकेण्ड में एक आत्महत्या दर्ज की गई तथा इसके २५ गुना लोग आत्महत्या का प्रयास करते है। इस तरह आत्महत्या एक वैश्विक समस्या भी है। दुनिया में आत्महत्या की दर गयाना में सर्वाधिक ४४.२ प्रतिशत पाई गई। तत्पश्चात क्रमशः दक्षिण कोरिया (२८.८९ प्रतिशत) लंका (२८.८ प्रतिशत),

लिथुआनिया (२८.२ प्रतिशत), सुरीनाम (२७.८ प्रतिशत), तंजानिया (२४.९ प्रतिशत), नेपाल (२४. प्रतिशत), कजाखिस्तान (२३.८ प्रतिशत), बुरुंडी (२३.१ प्रतिशत), एवं भारत (२१.१ प्रतिशत) का क्रम है। इस तरह वैश्विक परिदृश्य में भारत का स्थान दसवें नंबर पर है।

भारत में भी आत्महत्या की घटनाएं अब चिन्ता का कारण बनती जा रही है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के वर्ष २०१५ के आंकड़ों के अनुसार भारत में हर घण्टे में ०१ विद्यार्थी आत्महत्या करता है। पिछले पांच वर्षों में लगभग ४०००० विद्यार्थी ने आत्महत्या की। विश्व में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली आत्महत्या में भारत शीर्ष स्थान पर है। विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली आत्महत्या में क्रमशः महाराष्ट्र (१२३०), प्रथम तमिलनाडु (९५५) द्वितीय एवं छत्तीसगढ़ (७३०) तृतीय स्थान पर है। युवाओं में आत्महत्या के कारणों में माता–पिता के साथ कमजोर रिश्ते, अत्यधिक उम्मीदें, असफलता को सहन न कर पाना, [illegible] संबंध आदि कारण है। वैसे तो भारत में २०१४ के आंकड़ों के अनुसार प्रतिघण्टे १५ व्यक्ति आत्महत्या करते है। पुरूषों में २०१४ की तुलना में २०१५ में आत्महत्या की दर में ०२ प्रतिशत वृद्धि हुई। अगर पतियों की बात की जाए तो आंकड़ा ०८ प्रतिशत है। डॉ. इन्दु ने अपने रिपोर्ट में बताया कि २०१५ में ६८५३८ पतियों द्वारा की गई आत्महत्या इतिहास में दर्ज आज तक की सबसे बड़ी संख्या है। इन आंकड़ों के मुताबिक [illegible] पतियों द्वारा [illegible] आत्महत्या की गई [illegible] प्रत्येक दिन १८० लोगों ने आत्महत्या की। [illegible] पत्नियों की संख्या ७८ पाई गई। पुरूषों में सर्वाधिक आत्महत्या का कारण पारिवारिक [illegible], बीमारी को माना गया। इसी तरह किसानों द्वारा भारत में वर्ष २०१३ में [illegible], वर्ष २०१४ में १२३६० तथा वर्ष २०१५ में [illegible] लोगों ने आत्महत्या की।

तालिका क्रमांक ०१

Number of Suicides, Growth of Population and Rate of Suicides during 2011 - 2015

Sl. No.	Year	Total Number of Suicides	Mid-Year Projected Population (in Lakh)	Rate of Suicides (Col.3/Col.4)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1	2011	1,35,585	12,101.9	11.2
2	2012	1,35,445	12,133.7	11.2
3	2013	1,34,799	12,287.9	11.0
4	2014	1,31,666	12,440.4	10.6
5	2015	1,33,623	12,591.1	10.6

[illegible]

तालिका क्रमांक ०१ के अनुसार भारत में आत्म हत्या के आंकड़ों पर ध्यान दे तो तालिका अनुसार वर्ष २०११ में १३५५८५ लोगों की तुलना में २०१५ में १३३६२३ लोगों ने आत्महत्या की। परन्तु एक दशक अर्थात २००५ से २०१५ के आंकड़ों के अनुसार वह १७.३ प्रतिशत बढ़ी है। क्योंकि वर्ष २००५ में११३९१४ लोगों ने आत्महत्या की थी। यह अवश्य है कि २०११ में आत्महत्या का प्रतिशत ११.२ था जो २०१५ में १०.६ प्रतिशत हो गया।

चित्र क्रमांक ०१

State/UT wise Major Percentage Share of Suicides in States during 20

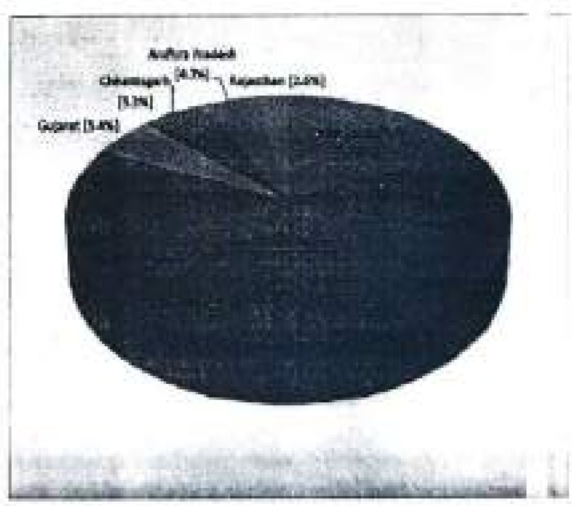

[illegible]

चित्र क्रमांक ०१ के अनुसार राज्य एवं केन्द्र द्वारा प्रशासित राज्यों की २०१५ की रिपोर्ट के आधार पर सर्वाधिक आत्महत्या १२.७ प्रतिशत (१६९७०), महाराष्ट्र में तत्पश्चात क्रमशः तामिलनाडु, पश्चिमबंगाल, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, आदि का क्रम है।

STATE/UT - WISE TOTAL NUMBER OF SUICIDES DURING 2015

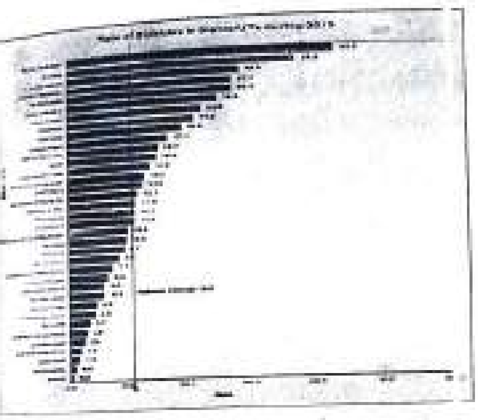

त्र क्रमांक ०२

STATE/UT - WISE SUICIDE RATE DURING 2015

चित्र क्रमांक ०२ के अनुसार भारत में २०१५ में आत्महत्या की दर १०.६ रहें। परन्तु राज्यों की कुल जनसंख्या में प्रति ०१ लाख जनसंख्या पर आत्महत्या की दर में पाण्डेचेरी राज्य में आत्महत्या की दर ४३.२ प्रतिशत दर्ज की गई। इसके पश्चात् क्रमश: सिक्किम, अण्डमान निकोबार और छत्तीसगढ़ का नाम आता है।

चित्र क्रमांक ०३

Percentage Share of Various Causes of Suicides During 2015

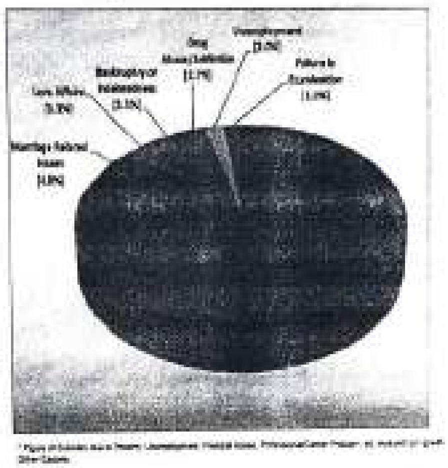

चित्र क्रमांक ०३ के अनुसार वर्ष २०१५ में आत्महत्या के कारणों का आंकलन करने पर सर्वाधिक २७.६ प्रतिशत आत्महत्यों का कारण पारिवारिक समस्याएं तथा १५.८ प्रति. आत्महत्याओं का कारण बीमारी पाया गया। इसके अलावा अन्य कारण भी बताया गया।

चित्र क्रमांक ०४

चित्र क्रमांक ०४ के अनुसार लिंग के आधार पर प्रस्तुत विवरण के अनुसार पर २०१५ में पुरुष एवं महिला आत्महत्या का अनुपात ६८.५:३१.५ है। जो २०१४ में ६७.

७.३२.३ था अर्थात महिलाओं की तुलना में पुरूषों में आत्महत्या की दर अधिक है। आयु के आधार पर आत्महत्या करने वालों में ३० से ४५ वर्ष के लोगों की संख्या सर्वाधिक है। तत्पश्चात् १८ से ३० वर्ष के लोगों का स्थान है।१८ वर्ष से कम उम्र के बच्चों में आत्महत्या की दर सबसे कम पाई गई।

आत्महत्या के कारण

१. दोशपूर्ण सामाजीकरण— समाजीकरण की प्रकिया द्वारा एक जैविकीय प्राणी को सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। वर्तमान में समाजीकरण की संस्थाओं ने जैसे परिवार, शिक्षण संस्था, पडोस आदि में विकार उत्पन्न होने से व्यक्ति का सामाजीकरण सही न हो पाने से जीवन में थोडी सी भी निराशा या दिशाहीनता आने पर व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है।

२. सामाजिक कुरीतियाँ— दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, विधवा विवाह निशेध आदि कुरीतियों से उत्पन्न परेशानियाँ आत्महत्या का कारण बनती है।

३. पद की हानि:— समाज में व्यक्ति की प्राप्त प्रस्थिति (पद) से हटना जैसे व्यापार में दीवालिया होना, व्यापारिक उतार—चढ़ाव, राजनीतिक उथल—पुथल, आर्थिक मंदी, प्रशासनिक पदों में अवनति से होने वाला तनाव आत्महत्या का कारण बनता है।

४. सामाजिक विघटन:— सामाजिक समस्याओं की अधिकता से समाज में विघटन का आना भी आत्महत्या का कारण है।

५. पारिवारिक कारक:— अनेक पारिवारिक कारक व्यक्ति को आत्महत्या की ओर ले जाते है।

अ) पारिवारिक कलह— परिवार में नियंत्रण एवं अनुशासन का समाप्त होना। जिससे परिवार में लड़ाई झगड़ो का होना, आत्महत्या का कारण है।

ब) दाम्पत्य में असामंजस्य:— पति/पत्नि में सामंजस्य का अभाव होना, अहम की भावना या पुरूष द्वारा अपना वर्चस्व स्थापित करना जैसे कारक आत्महत्या को प्रेरित करते है।

स) संयुक्त परिवारों का विघटन एवं भग्न परिवार:— एकल परिवारों के विकास होने एवं संयुक्त परिवारों के टूटने से एवं परिवार में माता या पिता, पति या पत्नि द्वारा एक दूसरे का परित्याग, अनबन से परिवार के टूटने से पारिवारिक सदस्यों पर नियंत्रण न होने से आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ती है।

द) रोमांस :— प्रेम में असफल होना या अत्यधिक प्यार में विश्वासघात होना, विवाह में असफल होना या एक तरफा प्यार व्यक्ति को आत्महत्या के लिए प्रेरित करता है।

इ) घरेलु हिंसा एवं दुर्व्यवहार:— सौतेले माता/पिता का बच्चों से दुर्व्यवहार या सास—ससुर या पारिवारिक सदस्यों द्वारा दुर्व्यवहार एवं हिंसात्मक गतिविधियों आत्महत्या को जन्म देती है।

६. अदमित आवश्यकताए एवं साधन:— व्यक्ति की अदमित आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर एवं आवश्यकता पूर्ति के साधन न प्राप्त होने से व्यक्ति आत्महत्या की ओर अग्रसर होता है।

७. अत्यधिक अपेक्षाएँ:— व्यक्ति जब अपने परिवार, मित्रों, परिजनो से अपेक्षाएँ रखता है या वे उससे अपेक्षाएँ रखते है और जब उसकी अपेक्षा पूर्ति नहीं होती या वह अपेक्षा पूर्ति नहीं कर पाता तो आत्महत्या कर लेता है।

८. तीव्र सामाजिक परिवर्तन:— समाज में होने वाले तीव्र परिवर्तन से जब व्यक्ति ताल मेल स्थापित नहीं कर पाता और वह अपनी पुरानी स्थिति में रहना चाहता है। जिससे वह वातावरण से सामंजस्य स्थापित न करने के कारण भी आत्महत्या कर लेता है।

९. सामाजिक नियंत्रण का कमजोर होना:— समाज में नियंत्रण स्थापित करने के औपचारिक साधनों के अतिरिक्त अनौपचारिक साधन परिवार जाति, धर्म प्रथाओं, परम्पराओं का कमजोर पड़ने से व्यक्ति अनुशासनहीन होकर अपनी मनमानी करने लगता है। समाज द्वारा उसके गलत व्यवहार पर रोक लगाने पर वह अपनी उपेक्षा समझकर अपने अहम को ठेस अनुभव करता है और वह आत्महत्या कर लेता है। दुर्खिम ने अहमवादी आत्महत्या कहा है।

१०. व्यक्ति वादी प्रवृत्ति का बढ़ना:— व्यक्तिवादी प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति सिर्फ अपना हित चिन्तन करता है। ऐसे में वह अकेलापन और निराशा से घिर कर आत्महत्या की ओर प्रवृत्त होता है।

आत्महत्या के रोकथाम

१. आत्महत्या के इच्छुक व्यक्ति से सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करके उसकी मनः स्थिति को समझ कर संबंधित समस्या या संभावित कठिनाईयों की वास्तविकता का ज्ञान कराकर उसके भावावेग को कम किया जाए।

२. आत्महत्या एक प्रकार का आवेग है जिसका समाधान मनोवैज्ञानिक तरीको द्वारा किया जावे

३. पर्यावरण संबंधी परिस्थिति भी आत्महत्या की प्रेरणा देती है। उन्हे सामाजिक सुरक्षा के प्रावधानों द्वारा सुधार किया जावे।

४. समाज में निराश या हताश व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए समितियों का गठन किया जावे। जो उन्हे कुछ समय सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा प्रदान करे।

५. आत्महत्या की रोकथाम के लिए लाईफ लाईन या हेल्प लाईन राष्ट्रीय स्तर पर प्रारंभ की जाए। १८००–२३३–८२५५ यह लाईफ लाईन है जिसमें प्रशिक्षित काउंसलर समस्याओं का जवाब एवं सलाह पूर्णतः गुप्त रूप से निःशुल्क देते है। ऐसी अन्य हेल्पलाईन भारत में उपलब्ध है।

६. पिछड़े निराश्रित वर्गो को रोजगार सुविधाएँ दी जाए वृद्धो, अपंगो को राज्य जरूरत पूर्ति हेतु पर्याप्त आर्थिक सहायता प्रदान करें। स्त्रियों का शोषण करने वाले प्रथाओं के प्रभाव को कानून द्वारा समाप्त किया जाए।

७. किसी व्यक्ति को आत्महत्या के लिए उकसाने वाले व्यक्ति को कठोर दण्ड दिया जाए।

८. परिवार एवं समाज के विभिन्न वर्गो की बीच स्वस्थ संबंधों का विकास किया जाए।

९. ध्यान एवं योग द्वारा मानसिक तनाव, बेचैनी, क्रोध, उद्वेग को कम किया जाए।

१०. स्कूलों के पाठ्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण को जोड़ा जाना चाहिए।

समाज वैज्ञानिक प्रो.वीरेन कुंडू का कहना है कि ''यह समस्या महज मासिक स्वास्थ्य से नहीं जुड़ी है। बल्कि सामाजिक और सर्वजानिक स्वास्थ्य जैसे पहलू भी है। इस संबंध पर काबू पाने के लिए तमाम पहलूओं का ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ना होगा'' ऐसा नहीं होने तक देश को भविश्य कही जाने वाली युवा पीढ़ी आसानी से अपने समस्या के स्थायी समाधान की राह के रूप में आत्महत्या के रोकथाम लिए कानून की अपेक्षा सामाजिक पुनर्निर्माण की आवश्यकता है। सामाजीकरण की प्रकिया में दोश ढूढ़ने की आवश्यकता है और साथ ही समाज में मानवीय गुणों की प्रछ न्नता और प्रवाह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. www.facebook.com
2. thelivelovelaugh foundation.org/hi/7-reasons-why indians-commit- suicide
3. http://p.dw.com/p/2Vodx
4. aajkhabarnews.in
5. www.shabdankan.com
6. whatsknowledge.com/how-to- prevent-suicide-in-hindi/

36

स्वराज्य की अवधारणा : भारतीय चिंतन के संदर्भ में

संजय कुमार साहु
शोधछात्र, राजनीति विज्ञान विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग,
झारखण्ड।

=============**********=============

आधुनिक भारतीय राजनीतिक इतिहास में राष्ट्रवाद और स्वराज्य की अवधारणा साथ–साथ विकसित हुई, जो दासता से भारत की मुक्ति के लिए तथा एक समृद्ध राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना करने में राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक प्रबुद्धता का संदेशवाहक रहा है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उत्थान के क्रम में भारतीय विचारकों का ध्यान भारतीय संस्कृति की प्राचीन परम्पराओं की ओर गया। उन्होंने भारतीय इतिहास के उन सभी पहलुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया जो राजनीतिक–सामाजिक एकता का आधार बन सकते थे। इसके लिए अनेक विचारकों ने तत्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल तथा भावी भारतीय राजव्यवस्था के प्रति सामाजिक–राजनीतिक एकता बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया जो धीरे–धीरे स्वराज्य की अवधारणा के रूप में प्रस्फुटित हुआ। स्वराज्य की अवधारणा का विकास भारतीय चिंतन परम्परा का एक महत्वपूर्ण अध्याय है जो भारतीय इतिहास की एक विचारधारा के रूप में दृष्टिगोचर हुआ है। आधुनिक भारत की विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं में भी इसके भाव प्रतिबिम्बित होते हैं। ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में जो आठ प्रकार की राज्य व्यवस्था बताये गये हैं, उसमें स्वराज्य को एक गिना गया है जो सार्वभौमिक एवं लोकसम्मति के गुणों का प्रतीक है।

आयद् वामीयचक्षसा मित्र वयं च सूरयः।

PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH

An International Journal

PRINT ISSN NO 2250 - 1991

UGC Sr. No. 47432

A Peer Reviewed, Referred, Refereed & Indexed International Journal

INDEX COPERNICUS IC VALUE : 86.18

Journal DOI : 10.15373/22501991

IMPACT FACTOR - 6.761

Volume-8 | Issue-3 | MARCH-2019 | ₹ 500/-

Journal for All Subjects

PRINT ISSN NO 2250 - 1991

PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH

Editor In-Chief

Dr.Nitin D Shah

Head, Department of Statistics, Prin. M. C. Shah Commerce College,
Gujarat University, Ahmedabad

Editorial Advisory Board

Dr.Mathews Plamoottil
Head of the Department & Assistant Professor in Zoology, Department of Zoology, Baby John Memorial Govt. College, Chavara, Kollam, Kerala

Dr. (Ms.) Urmila Shrawankar
Associate Professor, Department of Computer Science & Engineering, G H Raisoni College of Engineering, RTM Nagpur University

Dr. Nitin D Shah
Dean- Gujarat university, Associate Professor & Head, Statistics Department, Prin. M C Shah Commerce College, Ahmedabad

Dr. Mahipal Singh Shekhawat
Assistant Professor, Biotechnology Laboratory, Mahatma Gandhi Govt. College, Mahe, U.T. of Pondicherry- 605 008

Dr.Madan Lal Bhasin
Professor, School of Accountancy, Universiti Utara Malaysia (UUM), Sintok, Kedah, Malaysia

Dr. R Ganpathy
Assistant Professor in Commerce, Directorate of Distance Education, Alagappa University, Karaikudi.

Dr.Alaa Kareem Niamah
Basrah University, College of Agriculture, Dept. of Food Science, Basrah City, Iraq

Dr.Balasahab Pawar
Department of Botany, Shri Muktanand College, Gangapur- 431 109.

Dr.Ranjit Lingaraj
Associate Professor and Head, Department of Social Work, NGM College, Pollachi

Prof M. Perumal
Dept. of Economics, Urumu Dhanalakshmi College, Kattur, Trichy-19.

Dr.Michael Eskay
Department of Educational Foundations, University of Nigeria, Nsukka.

Dr.A.R.Saravankumar
Assistant Professor in Education DDE, Alagappa University, Tamilnadu

ADVERTISEMENT DETAILS

Position	B/w (single Color)	Four Color
Full Inside Cover	₹ 6000/-	₹ 12500/-
Full Page (Inside)	₹ 5000/-	-

SUBSCRIPTION DETAILS

Period	Rate	Discount	Amount Payable
One Year (12 Issues)	₹ 3000/-	Nil	₹ 3000/-
Two Years (24 Issues)	₹ 6000/-	200/-	₹ 5800/-
Three Years (36 Issues)	₹ 9000/-	300/-	₹ 8700/-
Five Years (60 Issues)	₹ 15000/-	₹ 600/-	₹ 14400/-

You can download the Advertisement / Subscription form from website www.paripex.in. You will require to print the form. Please fill the form completely and send it to the **Editor, PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH** along with the payment in the form of Demand Draft/Cheque at Par drawn in favour of **PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH** payable at Ahmedabad.

1. Thoughts, language, vision and examples in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both the editor, and editorial board agrees with the author. The responsibility of the matter of research paper/article is entirely of author
2. Editing of the **PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH** is processed without any remittance. The selection and publication is done after recommendations of at least two subject expert referees.
3. In any condition if any National/International University denies accepting the research paper published in PIJR, then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Management
4. Only the first author is entitle to receive the copies of all co-authors
5. Before re-use of published paper in any manner, it is compulsory to take written permission from the Editor-PIJR unless it will be assumed as disobedience of copyright rules
6. All the legal undertaking related to **PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH** is subject to Ahmedabad Jurisdiction.
7. The research journal will be send by normal post. If the Journal is not received by the author of research paper then it will not be the responsibility of the Editor and publisher. The amount for registered post should be borne by author of the research paper in case of second copy of the journal.

Editor,
PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH
303, Maharana Pratap Complex, Opp. Kapadia Guest House, B/H V.S.Hospital, Paldi, Ahmedabad - 380006.
Gujarat (INDIA) | Cell: +91 8866 00 3636, +91 8866 11 3636
Website : www.paripex.in | Email : editor@paripex.in

INDEX

Sr. No.	Title	Page No.
1	Carbon Trading - An Overview Prof. Lalajee P. Thakor	1-2
2	Gyan Singh Maan Krut Upanyas 'Deemak aur dayare' me Rungrastata Ki Samasya Dr. Parveen Kumar	3-4
3	Malukdas ke kavya me samajik Jivan Ram Chandra	5-6
4	Hindi Upanyas Sahitya me Parivarik Mulyo ka vighatan Vinod Kumar	7-7
5	Samkalin Pravasi Hindi Sahitya Ki Prasangikata Renu M.	8-9
6	ECONOMIC IMPACT OF SPORTS ON SOCIETY Dr. Manisha Mondal	10-11
7	A STUDY OF CONSUMER BEHAVIOUR OF SBI ATM USERS OF RAJKOT CITY. Dr. CHITRALEKHA H. DHADHAL	12-15
8	LAW AND SOCIAL TRANSFORMATION THROUGH GANDHIAN THEORY Dr. SAMIR A. RUNJA	16-17
9	Survey On Advanced and the best solution for Home Security using Sensor and IOT P.Ajitha	18-19
10	A Study on the Impact of Mothers Educational Qualifications on their Children's Academic Performances in Imphal West District, Manipur. Dr. Premlata Maisnam	20-21
11	Ramdhari Singh Dinkar ke kavya me rashtriy chetana Suman Rani	22-24
12	Bheeshma Sahanee ke natak Hanush me vividh Aayam Kavita Rani	25-27
13	Bhaktikaleen Sahitya me vibhinna Vimarsh Deepak Kumar	28-31
14	An analysis of Growth and Development of Garment Industry in India Dr.Siddaraju V.G	32-33
15	CULTURAL TRADITION OF ODISHA AND MARDAL: A CRITICAL ANALYSIS DIBAKAR PARIDA	34-35
16	A STUDY ON TOURISM IN TELANGANA STATE (A CASE STUDY OF "HYDERABAD INCLUDING CHOWMAHALLA PALACE, A UNESCO, ASIA PACIFIC MERIT AWARDEE") Dr. NAGALUTI RAMA KRISHNUDU	36-37
17	A STUDY ON EMPLOYEE ENGAGEMENT WITH REF. TO BANKING INDUSTRY IN INDIA. MADHAIYAN M	38-40
18	ANCIENTRY AND ESSENCE OF ODISSI MUSIC NILADRI KALYAN DAS	41-42
19	Shankar Shesh ke Natako ki Samvad Yojana Dr. Gyani Devi	43-44
20	IMPORTANT ASPECTS OF PACKAGING AND CONSUMER CULTURE SASMITA KAMILA	45-46
21	TEACHER EFFECTIVENESS AND PERSONALITY OF SECONDARY SCHOOL TEACHERS Mrs. V.VISWESWARI, Prof.T.G.AMUTHAVALLI	47-48
22	CONTEMPORARY SOCIO CULTURAL HISTORY OF INDIA IN KHUSHWANT SINGH'S AUTOBIOGRAPHY AMBIKA DAS MOHAPATRA	49-50
23	The other side of gossip: studying the role of gossip as a strategy in big boss game Pranab Goswami	51-56
24	Dikarine Janm Leva do... Vanitaben A Tandel	57-58
25	EFFECT OF ENVIRONMENTAL FACTORS ON THE REPRODUCTION OF MARINE CRAB, PORTUNUS SANGUINOLENTUS Sarode Babita P.	59-61

INDEX

Sr. No.	Title
26	**ONYCHOPHAGIA AND GENDER- A CASE STUDY ON HIGH SCHOOL STUDENTS** Sankara Pitchaiah Podila, Nazia Sultana
27	**Importance of Financial Education in using various Financial Services: Some selected Bank Customers of Dibrugarh Town** Dr.Sarat Borah, Munmi Bordoloi
28	**Pandit Deendayal Upadhyay ke aarthik chintan ka samikshatmak Vishleshan** Dr. Mandeep Khalia
29	**A Scientific Approach on Pleehoder via classical Ayurvedic methods of treatment wsr to Plyyali** Dr. Deepasha Vyas, Dr. Sunita.D.Ram
30	**Swasahayata samuh ke vittiya samaveshan ki sambhawana awam chunautiyo ka adhayayan patan vikashkhand ke visheshsandarbh me** Dr. Tameswari Sahu
31	**21 vi sadi me upanyaso me bazaar vad aur stri** Suman Rani
32	**THE INFLUENCE OF MANAVALAKALAI YOGA, MEDITATION AND GYMING ON STORK BALANCE TEST** V. GANESAN, Dr.V.Ponnuswamy
33	**Assessment of Risk Perception on Shariah compliant equity share investment among the Muslim population in Assam, India** Dhrubajyoti Bordoloi, Dr. Pranjal Bezborah
34	**Knowledge of information literacy skills among the women students in rural area at Viruthunagar District** Dr.M.Yasmin, Mathews Stephen
35	**The Role of Universal Health Coverage in Human Development: from an Indian Perspective** Nagaraja K., Dr. B. P. Veerabhadrappa

Certificate of Publication

ISSN No: 2250-1991

IF : 6.761

Index Copernicus (IC) Value : 86.18

This is to certify that

Mr./Mrs./Ms./Prof./Dr. Tameswari Sahu

has contributed a paper as author/ Co-author to

PARIPEX- INDIAN JOURNAL OF RESEARCH

A Peer Reviewed, Referred, Refereed & Indexed International Journal

Title "Swasahayata samuh ke vittiya samaveshan ki sambhawana awam chunautiyo ka adhayayan patan vikashkhand ke visheshsandarbh me"

and has got published in volume 08, *Issue* 03, MARCH-2019

The Editor in Chief & The Editorial Board appreciate the Intellectual Contribution of the author/co-author

Executive Editor | *Editor in Chief* | *Member, Editorial Board*

तनख्वाह से पूरे हो गए है–

क हत्या हो गई। दोष डी.डी. के भाई पर लगा। अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुरूप स्थिति

PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH
Volume-8 | Issue-3 | March-2019 | PRINT ISSN No - 2250-1991

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Statistics

स्वसहायता समूह (S.H.G.) के वित्तिय समावेशन की संभावना एवं चुनौतियों का अध्ययन "पाटन विकासखंड के विशेष संदर्भ में"

KEY WORDS: वित्तिय समावेशन, ग्रामीण विकास, स्वसहायता समूह।

डॉ. तामेश्वरी साहू
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र बी. सी. एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी, छत्तीसगढ़

ABSTRACT

सतत् मानवीय विकास (S.D.G.) [illegible] अर्थव्यवस्था के विकास में [illegible], पूंजी की कमी, बेरोजगारी, सामाजिक [illegible], [illegible] प्रमुख चुनौतियां प्रस्तुत करती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास के लिए महिलाओं में आर्थिक सशक्तिकरण, बचत की प्रवृत्ति एवं बचत का निवेश के रूप में [illegible] आवश्यक है। राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण नीति 2001 में स्वसहायता समूहों के सृजन पर बल दिया गया। स्वयं सहायता समूह [illegible] की महिलाओं द्वारा संचालित [illegible] वित्तिय [illegible] है। जिनको वर्तमान परिदृश्य में अधिक गतिशील, सक्षम एवं आधुनिक स्वरूप प्रदान किया जाना आवश्यक है, देश में संचालित वित्तिय प्रणाली के विकास के लिए स्वसहायता समूह का बैंकों के साथ लिंकेज एवं डिजिटलाइजेशन आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन दुर्ग जिले के पाटन विकास खंड के पांच गांवों के स्वसहायता समूहों की मौलिक [illegible] पर आधारित है, अध्ययन में [illegible] ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटलाइजेशन के लिए आधारभूत सुविधाओं का अभाव, स्वसहायता समूह के सदस्यों की निम्न साक्षरता दर, ई-साक्षरता का अभाव, बैंकों का सीमित विस्तार, वित्तिय समावेशन में प्रमुख बाधा है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए महिलाओं की सहभागिता, बैंकों की सक्रियता एवं नाबार्ड की [illegible] प्रयास आवश्यक है।

प्रस्तावना- वैश्विकरण के इस युग में विकासशील देशों का मुख्य आर्थिक लक्ष्य वित्तिय समावेशन है। वित्तिय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2005 से भारतीय रिजर्व बैंक, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के सम्मिलित प्रयास से देश में कई तरह के कार्यक्रम संचालित है, जिसमें में स्वसहायता समूह का बैंक लिंकेज कार्यक्रम भी शामिल है।

स्वसहायता समूह (SHG) का वित्तिय समावेशन के लिए वर्ष 1992-93 में पायलट परियोजना प्रारंभ की गयी, गैर सरकारी संस्थाओं एवं बैंकों की मदद से 500 स्वसहायता समूह को विभिन्न बैंकों से जोड़ा गया। 1994-96 में 2212 स्वसहायता समूह को बैंकों से लिंक किया गया। स्वसहायता समूह द्वारा बैंक में बचत खाता खोलना बैंक से एक परिचय मात्र है, लिंकेज का पूर्ण स्वरूप है बैंक से कर्ज लेना एवं व्यावहारिक संबंध है।

वित्तिय समावेशन का अर्थ – कम आय वाले लोगों और समाज के वंचित वर्ग को सस्ती दरों पर भुगतान, बचत क्रेडिट आदि सहित वित्तिय सेवाएं पहुंचाने का प्रयास है, इसे समावेशी वित्तपोषण भी कहा जाता है।

एक नोडल संस्था के रूप में राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) स्वयं सहायता समूह के वित्तिय समावेशन में प्रमुख भूमिका निभा रहा है।

स्वसहायता समूह के बैंक लिंकेज ई शक्ति परियोजना के प्रमुख उद्देश्य- ऋण जरूरतों को पूरा करने के लिए पूरक ऋण नीतियों का विकास करना, समूह की बचत क्षमता एवं ऋण वितरण क्षमता का विस्तार करना तथा ग्रामीण जनता के मध्य बैंकिंग कार्यप्रणाली को प्रोत्साहित करना।

समूह कम से कम छमाह से नियमित रूप से सक्रिय रहें एवं अन्य किसी बैंक से डिफाल्टर नहीं।

नाबार्ड के अनुसार भारत में लगभग 22 लाख स्वसहायता समूह के 330 लाख सदस्यों ने नाबार्ड के लिंकेज प्रोग्राम के माध्यम से बैंकों से ऋण लिये है। स्व सहायता समूह के बैंक लिंकेज कार्यक्रम की प्रगति उत्तर भारत की तुलना में दक्षिण भारत में अधिक है- आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक एवं केरल अग्रणी राज्यों में है, वर्ष 2005-06 में इन राज्यों के 57 प्रतिशत स्व सहायता समूह बैंकों से क्रेडिट लिंकेज थे। जबकि भारत के पूर्वी क्षेत्र उड़ीसा, बंगाल, बिहार, झारखण्ड, उत्तराखण्ड में इसकी प्रतिक्रिया सिमित स्तर में है।

वित्तिय समावेशन एवं डिजिटलाइजेशन
वित्तिय समावेशन (Financial Inclusion) को व्यापक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए डिजिटलाइजेशन आवश्यकता है।

डिजिटलाइजेशन का अर्थ (Meaning of Digitization)- "Conversion of Analog information in to Digital information" अर्थात् इलेक्ट्रानिक एवं डिजिटल उपकरणों की सहायता से दस्तावेजों एवं अभिलेखों का संकलन करना, विशेषतः कम्प्यूटर, मोबाइल, अन्य इलेक्ट्रानिक उपकरणों एवं इंटरनेट के माध्यम से सूचनाओं के आदान-प्रदान को शीघ्र, सर्व सुलभ, पारदर्शी एवं विश्वसनीय बनाना।

अध्ययन का उद्देश्य-
1. स्वसहायता समूह की क्रियाशीलता का अध्ययन।
2. स्वसहायता समूह के सदस्यों की आर्थिक सामाजिक स्थितियों का अध्ययन।
3. स्वसहायता समूह (S.H.G.) का ई शक्तिकरण द्वारा वित्तिय समावेशन की संभावनाओं एवं चुनौतियों का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना –
1. स्वसहायता समूहों के वित्तिय समावेशन से समूह की क्रियाशीलता में वृद्धि होती है।
2. ई शिक्षा का अभाव एवं आधारभूत संरचना का अभाव वित्तिय समावेशन में बाधक है।

अध्ययन की प्रविधि- प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है-
1. अध्ययन क्षेत्र दुर्ग जिले के पाटन विकासखण्ड के ग्राम 05 ग्राम के 25 स्वसहायता समूह एवं सदस्यों पर आधारित है, सर्वेक्षण अवधि फरवरी मार्च 2018 है।
2. प्रत्येक समूह के 50 प्रतिशत सदस्यों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक समूह के अध्यक्ष एवं सचिव को न्यादर्श में अनिवार्यतः सम्मिलित किया गया है। शेष सदस्यों का चयन लॉटरी विधि से की गयी है। अनुसूचित जाति, जनजाति, विधवा, निराश्रित वर्गों को सर्वाधिकार अध्ययन में शामिल किया गया।
3. पांच गांवों के 25 स्वसहायता समूह में 320 सदस्य है, जिसका 50 प्रतिशत सदस्यों को न्यादर्श के रूप में अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

तालिका क्रमांक .

1 न्यादर्श ग्रामों में स्वसहायता समूह एवं सदस्य संख्या

क्रमांक	ग्राम	समूह की संख्या	सदस्य संख्या	न्यादर्श (50 प्रतिशत)
1	अरसनारा	04	55	30
2	सिकोला	08	120	60
3	कुम्हारी	03	38	21
4	उमरपोटी	06	53	29
5	पतोरा	04	54	30
योग	05	25	320	170

स्रोत– प्राथमिक आंकड़ा

21 (84%) स्वसहायता समूह का खाता सहकारी बैंकों में है। 04(16%) का खाता ग्रामीण बैंकों में है। समूह के सदस्यों के अनुसार समूह के सदस्यों को किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण नहीं दिया गया है। समूह की बैठक मासिक होती है। किसी भी समूह ने अपनी माइक्रो प्लान तैयार नहीं किया है। 07 (28%) ने कहा कि समूह का मास्टर डाटा दर्ज किया जाता है। 09 (36%) समूहों में अध्यक्ष द्वारा मास्टर डाटा तैयार किया जाता है। 10 (40%) समूह द्वारा मानक बही खाता प्रणाली का पालन किया जाता है।

अध्ययन में पाया गया (68%) प्रतिशत समूह में सदस्य संख्या 10-14 है, 24 समूह में सदस्य संख्या 15-25 सदस्य है, 25 से अधिक सदस्य संख्या वाला कोई भी समूह नहीं है। 60% समूहों में मासिक बचत जमा राशि 50 रू. की राशि है। 32 समूह में 100 रू. की धनराशि प्रतिमाह जमा करते, मात्र 2 समूह के सदस्य 20 रू.की राशि जमा करते है। अधिकांशतः 10 समूहों का गठन वर्ष 2013 में किया गया है। 1996 में 01 समूह का गठन हुआ है, तब से समूहों का गठन हो रहा है।

स्वसहायता समूह के 175 सदस्यों में 58 (33%) सदस्य 30-40 आयु वर्ग के है, 41 (23.3%) सदस्य 40-50 आयु वर्ग के है, 43 (24.2%) सदस्य 50 से अधिक आयु वर्ग के है, 08 सदस्य 18 से कम आयु के है, 80 सदस्य विवाहित है, 9% विधवा एवं 9% अविवाहित है।

चित्र क्रमांक . 1 स्वसहायता समूह के न्यादर्श सदस्यों में शिक्षा का स्तर

अध्ययन में पाया गया कि 176 में 61 सदस्य अशिक्षित है, जो कुल सदस्य संख्या का 35% है, 56% सदस्य, प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक की शिक्षा प्राप्त है। 33% सदस्य हाई एवं हायर स्कूल शिक्षा प्राप्त है। मात्र 4.5% सदस्य ही उच्च शिक्षा प्राप्त है।

न्यादर्श 176 सदस्यों में कुल 12 सदस्य विकलांग है, जिसमें 02 मानसिक रूप से विकलांग है, 08 अस्थि बाधित एवं 02 दृष्टि बाधित है।

तालिका कमांक .
2 न्यादर्श परिवारों की आवासीय सुविधा की स्थिति

न्यादर्श संख्या	मकान		बिजली		शौचालय	
	कच्चा	पक्का	हां	नहीं	हां	नहीं
संख्या	154	22	162	14	172	04
प्रतिशत	87.5	12.5	92	8	97.7	2.3

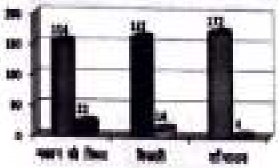

Figure 2

अध्ययन में पाया गया 87.5 प्रतिशत परिवारों के मकान कच्चा है, मात्र 12-5% का मकान पक्का है। 08 प्रतिशत परिवारों के मकान में बिजली की सुविधा नहीं है, जो चिंतनीय है। और स्वसहायता समूह के आधुनिकीकरण डिजिटाइजेशन में प्रमुख बाधा है। 97.7 प्रतिशत परिवारों के घरों में शौचालय की सुविधा है जो स्वच्छ भारत अभियान की सफलता को इंगित करती है।

अध्ययन में पाया गया 88% अन्य पिछड़ा वर्ग के है, 8.6% सदस्य अनुसूचित जाति के एवं मात्र 3.4% अनुसूचित जन जाति के है।

अध्ययन में पाया गया 13.6 प्रतिशत न्यादर्श भूमिहीन है, 10.8 सीमांत कृषक,56.6 प्रतिशत लघुकृषक एवं 20 प्रतिशत सदस्य गृहणी है, जो अपने घरों में खेती बाड़ी का भी कार्य करती हैं।

8.5 प्रतिशत परिवार अत्यंत गरीब है, 31.8 प्रतिशत परिवार गरीब है, एवं 59.7 प्रतिशत परिवार गैर गरीब है। 59.7 प्रतिशत परिवार गैर गरीब की श्रेणी में आते है।

तालिका कमांक .
3 स्वसहायता समूह के सदस्यों का वितिय समावेशन

कमांक	बैंक का नाम	सदस्य संख्या	प्रतिशत
1	ग्रामीण बैंक	122	70
2	जिला सहकारी बैंक	09	5
3	एस.बी.आई	08	4.5
4	एस.बी.आई मिनीयक	31	17.6
5	देना बैंक	02	1.1
6	खाता नहीं	03	1.7
	योग	176	100

स्वसहायता समूह के सदस्यों का बैंकों में खाता

अध्ययन में पाया गया सर्वाधिक 70 प्रतिशत सदस्यों का खाता ग्रामीण बैंक में है, 22 प्रतिशत सदस्यों का एस.बी. आई. में, 5 प्रतिशत सदस्यों का खाता सहकारी बैंकों में एवं 1.1 का खाता देना बैंक में है। 1.7 प्रतिशत सदस्यों का किसी भी बैंक में खाता नहीं है।

स्वसहायता समूह के सदस्यों का सामाजिक सुरक्षा की स्थितियां

1. 89.2 प्रतिशत सदस्यों के पास स्मार्ट कार्ड की सुविधा है, अतः वे स्वास्थ्य बीमा के दायरे में आते है। 10.8 प्रतिशत सदस्य के पास विभिन्न कारणों से स्मार्ट कार्ड की सुविधा नहीं है।
2. 1.7 प्रतिशत सदस्य वृद्धा पेंशन के दायरे में आते है, 98.3 प्रतिशत सदस्यों के पास किसी भी प्रकार की पेंशन की सुविधा नहीं है।
3. मात्र 8.5 प्रतिशत सदस्य जीवन बीमा के दायरे में आते है।

तालिका कमांक.
4 बैंक खाता का आधार से लिंकेज की स्थिति

	बैंक खाता		बैंक खाता का आधार से जुड़ाव	
न्यादर्श सदस्य संख्या	हां	नहीं	हां	नहीं
	175	03	169	07
प्रतिशत	98.3	1.7	96	04

अध्ययन में पाया गया 98.3 प्रतिशत सदस्यों का बैंक में खाता है, जिसमें से 96 प्रतिशत का बैंक खाता आधार लिंक है, शेष 04 प्रतिशत का खाता आधार से लिंक नहीं है। 1.7 प्रतिशत सदस्यों का किसी भी बैंक में खाता नहीं है, जो वित्तिय समावेशन में सबसे बड़ी बाधा है।

अध्ययन क्षेत्र के समूहों के वित्तिय समावेशन में प्रमुख बाधाएं

1. 176 में 61 (35%) सदस्य अशिक्षित है, 56% सदस्य, प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक की शिक्षा प्राप्त है। 33% सदस्य हाई एवं हायर स्कूल शिक्षा प्राप्त है। मात्र 4.5% सदस्य ही उच्च शिक्षा प्राप्त है।
2. 08 प्रतिशत परिवारों के मकान में बिजली की सुविधा नहीं है, जो आधुनिकीकरण डिजिटाइजेशन में प्रमुख बाधा है। 8.5 प्रतिशत परिवार अत्यंत गरीब है, 31.8 प्रतिशत परिवार गरीब है।
3. 16(60%) समूह मानक बही खाता प्रणाली का पालन नहीं किया जाता है।
4. 1.7 प्रतिशत सदस्यों का किसी भी बैंक में खाता नहीं है, 98.3 खाता धारकों में से 1.04 प्रतिशत का खाता आधार से लिंक नहीं है।

सुझाव –

1. स्वसहायता समूह की महिलाओं में डिजिटल साक्षरता के लिए व्यापक स्तर पर प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम की आवश्यकता है।
2. गांवों में आधार मूलसंरचना जैसे बिजली, इंटरनेट कनेक्शन, नजदीक बैंक, बैंक ई-साक्षरता के लिए ई- साक्षरता मित्र की सुविधा होनी चाहिए।
3. स्वसहायता समूहों में स्वरोजगार को बढ़ावा देना चाहिए जिससे महिलाएं आर्थिक आत्मनिर्भर बने, महिलाएं अपने परिवार के गैर उत्पादकीय कार्यों के लिए ऋण लेती हैं, उत्पादकीय ऋण को बढ़ावा देना चाहिए।
4. स्वसहायता समूहों के साथ बैंकों का व्यवहार सहयोगात्मक एवं प्रोत्साहन मूलक होना चाहिए।

निष्कर्ष – स्वसहायता समूहों का डिजिटाइजेशन स्वसहायता समूहों के आधुनिकीकरण एवं वितिय समावेशन के अत्यंत आवश्यक है। गांवों के निर्धन वर्ग को सूदखोर महाजन, बिचौलियों से मुक्ति दिलाने के लिए भी समूहों का बैंकों से वितिय समावेशन एवं आर्थिक सुदृढ़ता आवश्यक है, नाबार्ड द्वारा इसकी अभिनव पहल की गयी है। समूह के सदस्यों एवं बैंकों की दृढ़ इच्छा शक्ति पर ही ई-शक्ति परियोजना की सफलता निहित है।

संदर्भ –

1- Ghosh S. (2014) "Citizenship in Practice: Poverty reduction and Self Help Group" Journal of Asian and African studies Vol 49(4) pp 442-458 (online)
2- https//eshakti.nabard.org.
3- Indian Microfinance the challenges of rapid growth, prabhu ghate (2007), sage publication.
4- Basu, Priya and Pradeep srivastava 2005 "exploring possibilities microfinance and Rural
5- Rural credit and self-help groups:micro- Finance needs and concepts in india. K.G. Karmakar, sage publication.
6- Financial literacy for self help groups Financial inclusion and Development Department, RBI.

Volume-8 | Issue-3 | March-2019 | PRINT ISSN No - 2250-19

अध्ययन में पाया गया कि 176 में 61 सदस्य अशिक्षित है, जो कुल सदस्य संख्या का 35% है, 56% सदस्य, प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक की शिक्षा प्राप्त है। 33% सदस्य हाई एवं हायर स्कूल शिक्षा प्राप्त है। मात्र 4.5% सदस्य ही उच्च शिक्षा प्राप्त है।

न्यादर्श 176 सदस्यों में कुल 12 सदस्य विकलांग है, जिसमें 02 मानसिक रूप से विकलांग है, 08 अस्थि बाधित एवं 02 दृष्टि बाधित है।

तालिका क्रमांक .
2 न्यादर्श परिवारों की आवासीय सुविधा की स्थिति

न्यादर्श परिवार	मकान		बिजली		शौचालय	
	कच्चा	पक्का	हां	नहीं	हां	नहीं
संख्या	154	22	162	14	172	04
प्रतिशत	87.5	12.5	92	8	97.7	2.3

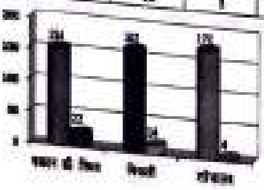

Figure 2

अध्ययन में पाया गया 87.5 प्रतिशत परिवारों के मकान कच्चा है, मात्र 12-5% का मकान पक्का है। 08 प्रतिशत परिवारों के मकान में बिजली की सुविधा नहीं है, जो चिंतनीय है। और स्वसहायता समूह के आधुनिकीकरण डिजिटाइजेशन में प्रमुख बाधा है। 97.7 प्रतिशत परिवारों के घरों में शौचालय की सुविधा है जो स्वच्छ भारत अभियान की सफलता को इंगित करती है।

अध्ययन में पाया गया 88% अन्य पिछड़ा वर्ग के है, 8.6% सदस्य अनुसूचित जाति के एवं मात्र 3.4% अनुसूचित जन जाति के है।

अध्ययन में पाया गया 13.6 प्रतिशत न्यादर्श भूमिहीन है, 10.8 सीमांत कृषक,55.5 प्रतिशत लघुकृषक एवं 20 प्रतिशत सदस्य गृहणी है, जो अपने घरों में खेती बाड़ी का भी कार्य करती है।

8.5 प्रतिशत परिवार अत्यंत गरीब है, 31.8 प्रतिशत परिवार गरीब है एवं 59.7 प्रतिशत परिवार गैर गरीब है। 59.7 प्रतिशत परिवार गैर गरीब की श्रेणी में आते है।

तालिका क्रमांक .
3 स्वसहायता समूह के सदस्यों का वित्तिय समावेशन

क्रमांक	बैंक का नाम	सदस्य संख्या	प्रतिशत
1	ग्रामीण बैंक	123	70
2	जिला सहकारी बैंक	09	5
3	एस.बी.आई	08	4.5
4	एस.बी.आई. विलेज	31	17.6
5	देना बैंक	02	1.1
6	खाता नहीं	03	1.7
	योग	176	100

स्वसहायता समूह के सदस्यों का बैंकों में खाता

अध्ययन में पाया गया सर्वाधिक 70 प्रतिशत सदस्यों का खाता ग्रामीण बैंक में है, 22 प्रतिशत सदस्यों का एस.बी. आई. में, 5 प्रतिशत सदस्यों का खाता सहकारी बैंकों में एवं 1.1 का खाता देना बैंक में हैं। 1.7 प्रतिशत सदस्यों का किसी भी बैंक में खाता नहीं है।

स्वसहायता समूह के सदस्यों का सामाजिक सुरक्षा की स्थितियां
1. 89.2 प्रतिशत सदस्यों के पास स्मार्ट कार्ड की सुविधा है, अतः वे स्वास्थ्य बीमा के दायरे में आते है। 10.8 प्रतिशत सदस्य के पास विभिन्न कारणों से स्मार्ट कार्ड की सुविधा नहीं है।
2. 1.7 प्रतिशत सदस्य स्कूल पेंशन के दायरे में आते है, 98.3 प्रतिशत सदस्यों के पास किसी भी प्रकार की पेंशन की सुविधा नहीं है।
3. मात्र 8.8 प्रतिशत सदस्य जीवन बीमा के दायरे में आते है।

तालिका क्रमांक.
4 बैंक खाता का आधार से लिंकेज की स्थिति

न्यादर्श सदस्य संख्या	बैंक खाता		बैंक खाता का आधार से जुड़ाव	
	है	नहीं	है	नहीं
	173	03	67	
प्रतिशत	98.3	1.7	96	04

अध्ययन में पाया गया 98.3 प्रतिशत सदस्यों का बैंक में खाता है, जिसमें से 96 प्रतिशत का बैंक खाता आधार लिंक है, शेष 04 प्रतिशत का खाता आधार से लिंक नहीं है। 1.7 प्रतिशत सदस्यों का किसी भी बैंक में खाता नहीं है, जो वित्तिय समावेशन में सबसे बड़ी बाधा है।

अध्ययन क्षेत्र के समूहों के वित्तिय समावेशन में प्रमुख बाधायें
1. 176 में 61 (35%) सदस्य अशिक्षित है, 56% सदस्य, प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक की शिक्षा प्राप्त है। 33% सदस्य हाई एवं हायर स्कूल शिक्षा प्राप्त है। मात्र 4% सदस्य ही उच्च शिक्षा प्राप्त है।
2. 08 प्रतिशत परिवारों के मकान में बिजली की सुविधा नहीं है, जो आधुनिकीकरण डिजिटाइजेशन में प्रमुख बाधा है। 8.5 प्रतिशत परिवार अत्यंत गरीब है, 31.8 प्रतिशत परिवार गरीब है।
3. 16(60%) समूह मानक बही खाता प्रणाली का पालन नहीं किया जाता है।
4. 1.7 प्रतिशत सदस्यों का किसी भी बैंक में खाता नहीं है, 98.3 खाता धारकों में से 1.04 प्रतिशत का खाता आधार से लिंक नहीं है।

सुझाव –
1. स्वसहायता समूह की महिलाओं में डिजिटल साक्षरता के लिए व्यापक स्तर पर प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम की आवश्यकता है।
2. गांवों में आधार भूतसंरचना जैसे बिजली, इंटरनेट कनेक्शन, साइबर कैफे, बैंक है, साक्षरता के लिए ई– साक्षरता मित्र की सुविधा होनी चाहिए।
3. स्वसहायता समूहों में स्वरोजगार को बढ़ावा देना चाहिए जिससे महिलाएं आर्थिक आत्मनिर्भर बने, महिलाएं अपने परिवार के गैर उत्पादकीय कार्यों के लिए ऋण लेती है, उत्पादकीय ऋण को बढ़ावा देना चाहिए।
4. स्वसहायता समूहों के साथ बैंकों का व्यवहार सहयोगात्मक एवं प्रेरणा मूलक होना चाहिए।

निष्कर्ष – स्वसहायता समूहों का डिजिटाइजेशन स्वसहायता समूहों के आधुनिकीकरण एवं वित्तिय समावेशन के अत्यंत आवश्यक है। गांवों के निर्धन लोगों को सूदखोर महाजन, बिचौलियों से मुक्ति दिलाने के लिए भी समूहों का बैंक से वित्तिय समावेशन एवं आर्थिक सुदृढ़ता आवश्यक है, नाबार्ड द्वारा इसकी अभिनव पहल की गयी है। समूह के सदस्यों एवं बैंकों की दृढ़ इच्छा शक्ति पर ही ई-शक्ति परियोजना की सफलता निहित है।

संदर्भ –

1- Ghosh S. (2014) "Citizenship in Practice: Poverty reduction and Self Help Group" Journal of Asian and African studies Vol49/4 pp 40-456 (online)
2- Httpsleshakti.nabard.org.
3- Indian Microfinance the challenges of rapid growth, pablu ghate (2007), sage publication.
4- Basu, Priya and Pradeep srivastava 2005 "exploring possibilities microfinance and Rural
5- Rural credit and self-help groups micro- Finance needs and concepts in India, K.G. Karmakar, sage publication.
6- Financial literacy for self help groups Financial inclusion and Development Department, RBI.

PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH

An International Journal
PRINT ISSN NO 2250 - 1991

UGC Sr. No. 47432

A Peer Reviewed, Referred, Refereed & Indexed International Journal

INDEX COPERNICUS IC VALUE : 86.18

Journal DOI : 10.15373/22501991

IMPACT FACTOR - 6.761

Volume-8 | Issue-3 | MARCH-2019 | ₹ 500/-

Journal for All Subjects

PRINT ISSN NO 2250 - 1991

PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH

Editor In-Chief

Dr.Nitin D Shah
Head, Department of Statistics, Prin. M. C. Shah Commerce College,
Gujarat University, Ahmedabad

Editorial Advisory Board

Dr.Mathews Plamoottil	Dr. (Mrs.) Urmila Shrawankar	Dr. Nitin D Shah
Head of the Department & Assistant Professor in Zoology, Department of Zoology, Baby John Memorial Govt. College, Chavara, Kollam, Kerala	Associate Professor, Department of Computer Science & Engineering, G H Raisoni College of Engineering, RTM Nagpur University	Dean- Gujarat university, Associate Professor & Head, Statistics Department, Prin. M C Shah Commerce College, Ahmedabad
Dr. Mahipal Singh Shekhawat	**Dr.Madan Lal Bhasin**	**Dr. R Ganpathy**
Assistant Professor, Biotechnology Laboratory, Mahatma Gandhi Govt. College, Mahe, U.T. of Pondicherry- 605 008	Professor, School of Accountancy, Universiti Utara Malaysia (UUM), Sintok, Kedah, Malaysia	Assistant Professor in Commerce, Directorate of Distance Education, Alagappa University, Karaikudi.
Dr.Alaa Kareem Niamah	**Dr.Balasaheb Pawar**	**Dr.Ranjit Lingaraj**
Basrah University, College of Agriculture, Dept. of Food Science, Basrah City, Iraq	Department of Botany, Shri Muktanand College, Gangapur- 431 109.	Associate Professor and Head, Department of Social Work, NGM College, Pollachi
Prof M. Perumal	**Dr.Michael Eskay**	**Dr.A.R.Saravankumar**
Dept. of Economics, Urumu Dhanalakshmi College, Kattur, Trichy-19.	Department of Educational Foundations, University of Nigeria, Nsukka.	Assistant Professor in Education DDE, Alagappa University, Tamilnadu

ADVERTISEMENT DETAILS

Position	B/w (single Color)	Four Color
Full Inside Cover	₹ 6000/-	₹ 12500/-
Full Page (Inside)	₹ 5000/-	-

SUBSCRIPTION DETAILS

Period	Rate	Discount	Amount Payable
One Year (12 Issues)	₹ 3000/-	Nil	₹ 3000/-
Two Years (24 Issues)	₹ 6000/-	200/-	₹ 5800/-
Three Years (36 Issues)	₹ 9000/-	300/-	₹ 8700/-
Five Years (60 Issues)	₹ 15000/-	₹ 600/-	₹ 14400/-

You can download the Advertisement / Subscription form from website www.paripex.in. You will require to print the form. Please fill the form completely and send it to the **Editor, PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH** along with the payment in the form of Demand Draft/Cheque at Par drawn in favour of **PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH** payable at Ahmedabad.

1. Thoughts, language, vision and examples in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both the editor and editorial board agrees with the author. The responsibility of the matter of research paper/article is entirely of author
2. Editing of the **PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH** is processed without any remittance. The selection and publication is done after recommendations of at least two subject expert referees.
3. In any condition if any National/International University denies accepting the research paper published in PIJR, then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Management
4. Only the first author is entitle to receive the copies of all co-authors
5. Before re-use of published paper in any manner, it is compulsory to take written permission from the Editor-PIJR unless it will be assumed as disobedience of copyright rules
6. All the legal undertaking related to **PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH** is subject to Ahmedabad Jurisdiction.
7. The research journal will be send by normal post. If the journal is not received by the author of research paper then it will not be the responsibility of the Editor and publisher. The amount for registered post should be borne by author of the research paper in case of second copy of the journal.

Editor,
PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH
303, Maharana Pratap Complex, Opp. Kapadia Guest House, B/H V.S.Hospital, Paldi, Ahmedabad - 380006.
Gujarat (INDIA) | Cell: +91 8866 00 3636, +91 8866 11 3636
Website : www.paripex.in | Email : editor@paripex.in

INDEX

Sr. No.	Title	Page No.
1	**Carbon Trading - An Overview** Prof. Lalajee P. Thakor	1-2
2	**Gyan Singh Maan Krut Upanyas 'Deemak aur dayare' me Rungrastata Ki Samasya** Dr. Parveen Kumar	3-4
3	**Malukdas ke kavya me samajik Jivan** Ram Chandra	5-6
4	**Hindi Upanyas Sahitya me Parivarik Mulyo ka vighatan** Vinod Kumar	7-7
5	**Samkalin Pravasi Hindi Sahitya Ki Prasangikata** Renu M.	8-9
6	**ECONOMIC IMPACT OF SPORTS ON SOCIETY** Dr. Manisha Mondal	10-11
7	**A STUDY OF CONSUMER BEHAVIOUR OF SBI ATM USERS OF RAJKOT CITY.** Dr. CHITRALEKHA H. DHADHAL	12-15
8	**LAW AND SOCIAL TRANSFORMATION THROUGH GANDHIAN THEORY** Dr. SAMIR A. RUNJA	16-17
9	**Survey On Advanced and the best solution for Home Security using Sensor and IOT** P.Ajitha	18-19
10	**A Study on the Impact of Mothers Educational Qualifications on their Children's Academic Performances in Imphal West District, Manipur.** Dr. Premlata Maisnam	20-21
11	**Ramdhari Singh Dinkar ke kavya me rashtriy chetana** Suman Rani	22-24
12	**Bheeshma Sahanee ke natak Hanush me vividh Aayam** Kavita Rani	25-27
13	**Bhaktikaleen Sahitya me vibhinna Vimarsh** Deepak Kumar	28-31
14	**An analysis of Growth and Development of Garment Industry in India** Dr.Siddaraju V.G	32-33
15	**CULTURAL TRADITION OF ODISHA AND MARDAL: A CRITICAL ANALYSIS** DIBAKAR PARIDA	34-35
16	**A STUDY ON TOURISM IN TELANGANA STATE (A CASE STUDY OF "HYDERABAD INCLUDING CHOWMAHALLA PALACE, A UNESCO, ASIA PACIFIC MERIT AWARDEE")** Dr. NAGALUTI RAMA KRISHNUDU	36-37
17	**A STUDY ON EMPLOYEE ENGAGEMENT WITH REF. TO BANKING INDUSTRY IN INDIA.** MADHAIYAN M	38-40
18	**ANCIENTRY AND ESSENCE OF ODISSI MUSIC** NILADRI KALYAN DAS	41-42
19	**Shankar Shesh ke Natako ki Samvad Yojana** Dr. Gyani Devi	43-44
20	**IMPORTANT ASPECTS OF PACKAGING AND CONSUMER CULTURE** SASMITA KAMILA	45-46
21	**TEACHER EFFECTIVENESS AND PERSONALITY OF SECONDARY SCHOOL TEACHERS** Mrs. V.VISWESWARI, Prof.T.G.AMUTHAVALLI	47-48
22	**CONTEMPORARY SOCIO CULTURAL HISTORY OF INDIA IN KHUSHWANT SINGH'S AUTOBIOGRAPHY** AMBIKA DAS MOHAPATRA	49-50
23	**The other side of gossip: studying the role of gossip as a strategy in big boss game** Pranab Goswami	51-56
24	**Dikarine Janm Leva do...** Vanitaben A Tandel	57-58
25	**EFFECT OF ENVIRONMENTAL FACTORS ON THE REPRODUCTION OF MARINE CRAB, PORTUNUS SANGUINOLENTUS** Sarode Babita P.	59-61

INDEX

Sr. No.	Title
26	ONYCHOPHAGIA AND GENDER- A CASE STUDY ON HIGH SCHOOL STUDENTS Sankara Pitchaiah Podila, Nazia Sultana
27	Importance of Financial Education in using various Financial Services: Some selected Bank Customers of Dibrugarh Town Dr.Sarat Borah, Munmi Bordoloi
28	Pandit Deendayal Upadhyay ke aarthik chintan ka samikshatmak Vishleshan Dr. Mandeep Khalia
29	A Scientific Approach on Pleehodar via classical Ayurvedic methods of treatment wsr to Plyyali Dr. Deepasha Vyas, Dr. Sunita.D.Ram
30	Swasahayata samuh ke vittiya samaveshan ki sambhawana awam chunautiyo ka adhayayan patan vikashkhand ke visheshsandarbh me Dr. Tameswari Sahu
31	21 vi sadi me upanyaso me bazaar vad aur stri Suman Rani
32	THE INFLUENCE OF MANAVALAKALAI YOGA, MEDITATION AND GYMING ON STORK BALANCE TEST V. GANESAN, Dr.V.Ponnuswamy
33	Assessment of Risk Perception on Shariah compliant equity share investment among the Muslim population in Assam, India Dhrubajyoti Bordoloi, Dr. Pranjal Bezborah
34	Knowledge of information literacy skills among the women students in rural area at Viruthunagar District Dr.M.Yasmin, Mathews Stephen
35	The Role of Universal Health Coverage in Human Development: from an Indian Perspective Nagaraja K., Dr. B. P. Veerabhadrappa

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक चिंतन का समीक्षात्मक विश्लेषण

डॉ. मनदीप खालसा

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष बी.टी.एड. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जिला– धमतरी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का अर्थचिंतन उच्च कोटि का भारतीयकरण, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आर्थिक लोकतंत्र, सभ्यता और परिस्थितियों के अनुकूल एकात्म मानववाद पर आधारित है। उनके अनुसार किसी देश की अर्थव्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो मानव के मानवत्व को समाप्त न करें। अर्थव्यवस्था का लक्ष्य लोगों के भरण–पोषण जीवन के विकास और राष्ट्र की धारणा जिनकी आवश्यकता होती है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार प्रत्येक देश में इस प्रश्न पर विचार किया गया है कि उत्पादन उपभोग का अनुसरण करें अथवा उपभोग उत्पाद का दर्शन सामने रखा वह भारतीय मनीषा के युगों–युगों के सत्य चिंतन का प्रतीक है। सर्वत्र मूलभूत एकता का दर्शन ही एकात्म मानववाद है। पंडित दीनदयाल जी की यह मान्यता थी कि सृष्टि का स्वरूप बाहर में कितना विविधतापूर्ण हो लेकिन वह एकात्मवादी है। उसके विविध रूपों में परस्पर सहयोग सामंजस्य और परिपूरकता का भाव मुख्य है। पंडित जी के अनुसार व्यक्ति और समाज में कोई विरोध नहीं है। वे व्यक्ति की चार मूल आकांक्षाओं अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष में कोई विरोध नहीं देखते। वे व्यक्ति की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को आवश्यक मानते हैं। किंतु मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके संतुष्टि को प्राप्त नहीं कर सकता।

उद्देश्य :– पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का आर्थिक चिंतन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :– पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी एक राजनेता के साथ–साथ पत्रकार, लेखक, संगठनकर्ता एवं सफल इतिहासकार,अर्थशास्त्री एवं भाषाविद् थे। उन्होंने विश्व को एक नया मार्ग एकात्म मानववाद दिया। उनका जीवन व विचार रा ष्ट्रवाद को बल देना रहा है। उनके आर्थिक चिंतन एक स्वतंत्र विचारधारा है जो उन्होंने देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपने स्वतंत्र विचार प्रस्तुत किये। उनकी विचारधारा देश के आर्थिक विकास में सहायक हो सकती है। उनके आर्थिक सिद्धांत हमारी आर्थिक समस्याओं का समाधान करने में सहायक हो सकते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अर्थचिंतन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव :– मनु ष्य की आवश्यकताएँ अनन्त है, उनकी निरंतर पूर्ति होनी चाहिए। सर्वप्रथम इच्छा जन्म लेती है तदुपरान्त उनको पूरा करने के लिए साधन जुटाये जाते हैं। वर्तमान में जो उत्पादित किया जा रहा है उसके लिए उपभोग की इच्छा उत्पन्न की जाती है। बाजार में पूर्ति बढ़ाने की जगह पूर्ति के लिए बाजार तैयार किया जाता है।उनके अनुसार अर्थव्यवस्था का लक्ष्य लोगों के भरण–पोषण, जीवन के विकास एवं राष्ट्र के लिए भौतिक साधनों को उतना ही उत्पादन होना चाहिए जितनी आवश्यकता है। पंडित दीनदयाल जी के अनुसार देश को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उत्पादन उपभोग का अनुसरण करें अथवा उपभोग उत्पाद का ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रकृति के संतुलित दोहन के पक्षधर थे। वे प्रकृति का शो षण नहीं उसका उपयोग चाहते हैं। उनके अनुसार प्राकृतिक सम्पदा सीमित है, यदि उसके उत्पादन को असीमित रूप से बढ़ाया जायेगा तो प्राकृतिक सम्पदा लम्बे समय तक साथ नहीं देगी। वर्तमान अर्थव्यवस्था इसे असंतुलित कर रही है हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जितनी वह पूर्ति कर सकें।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय देश के कृषि अर्थव्यवस्था पर सजग दृष्टि रखते थे। उनके अनुसार बड़ी अर्थव्यवस्था विकास के लिए उचित नहीं है कृषि जोत का स्वामित्व स्वयं कृषक होना चाहिए । उन्होंने सहकारी कृषि पर बल दिया । उनके अनुसार खाद्यान्न व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण नहीं होना चाहिए। वे भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वावलंबन के पक्ष में थे। उनके अनुसार मशीन मनु ष्य की सहायक हो सकती है। प्रतिस्पर्धी नहीं। मशीन के उपयोग से बेरोजगारी बढ़ती है तो उसका उपयोग सीमित मात्रा में होना चाहिए।

उनके अनुसार कुटीर उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार है एवं विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था विकास के लिए आवश्यक है। उनके अनुसार हमें "कमाने वाला खायेगा" की जगह खाने वाला कमायेगा का लक्ष्य रखकर भारत की अर्थरचना करना चाहिए वे चाहते थे कि नया युग श्रम का युग हो। उनके अनुसार यदि किसी कारखाने की पूर्ण उत्पादन क्षमता का उपयोग नहीं हो रहा तो वह घाटे का सौदा है। उन्होंने भारतीय रुपये के अवमूल्यन का विरोध किया वे 1963 में पी.एल 480 ,1963 में स्वर्ण नियंत्रण कानून,1966 में भारतीय रुपये के अवमूल्यन पर विरोध प्रकट किया। उनकी पुस्तक भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन इसी पर आधारित है।

पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी पंचवर्षीय योजनाओं के आलोचक थे उन्होंने [illegible] विषय पर अपनी पुस्तक की ' दो योजनाएं वायदे अनुपालन आसार [illegible] यह पुस्तक प्रथम एवं द्वितीय पंचवर्षीय योजना का तार्किक विश्लेषण करती है [illegible] सर्वांगीण विकास पर एक आकलन प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त [illegible] एवं चतुर्थ पंचवर्षीय योजना [illegible] के अध्ययन के [illegible] दीनदयाल उपाध्यायजी अर्थव्यवस्था को तेजी से विकास [illegible] अर्थव्यवस्था के विकास के लिए आवश्यक एवं क्रमिक विकास के पक्ष में थे।

पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी देश की स्वतंत्रता का [illegible] की समृद्धि को बढ़ाने वाले अपने स्वतंत्र आर्थिक सिद्धांत प्रस्तुत किये [illegible] की सरकारी नौकरशाही प्रणाली [illegible] आर्थिक की मुक्त अर्थव्यवस्था [illegible] के विरोधी थे। उन्होंने मानव के संतुलित विकास पर बल दिया ।

निष्कर्ष :– उन्होंने राजनीति को समाज कल्याण के कार्य के रूप में [illegible] दीनदयाल उपाध्याय ने अपने विचारों को पत्रकारिता के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाने का कार्य किया। उन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से रा ष्ट्रवादी [illegible] करने महत्वपूर्ण कार्य किया था । उनके अनुसार राष्ट्रभक्ति की भावना का निर्माण करने और उसको साकार रूप देने का केंद्र राष्ट्र की संस्कृति का है [illegible] संकुचित सीमाओं को तोड़कर मानव की एकात्मकता का अनुभव करना है [illegible] संस्कृति को स्वतंत्रता आवश्यक है।

उन्होंने सीमित साधनों के अधिकतम उपयोग पर बल दिया। उन्होंने [illegible] अर्थव्यवस्था का केन्द्र मानव होना चाहिए, भौतिक चीजें मानव के सुख के साधन है साध्य नहीं पर बल दिया। उनकी प्रमुख पुस्तकें :–

1. पोलीटिकल डायरी
2. राष्ट्र चिंतन
3. दो योजनाएं : वायदे अनुपालन आसार
4. भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा
5. अवमूल्यन एक महान क्षति

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन– [illegible]
2. पुस्तक के पुरुष –पण्डित दीनदयाल उपाध्याय – [illegible]
3. एकात्म अर्थनीति– श्री शरद कुलकर्णी
4. राष्ट्र की अवधारणा – श्री [illegible]
5. एकात्म मानव दर्शन – श्री [illegible]

ISSN - 2249-555X
IMPACT FACTOR:3.6241

Peer Reviewed & Referred International Journal
Journal DOI : 10.15373/2249555X

INDIAN JOURNAL OF APPLIED RESEARCH

Journal for All Subjects

Indexed with International ISSN Directory, Paris

www.ijar.in

VOLUME : 5 | ISSUE : 10 | October 2015

₹ 250

CS Scanned with CamScanner

ISSN 2394-5303

Issue-40, Vol-03, April-2018

Printing Area

International Multilingual Research Journal

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

UGC Approved Jr.No.43053

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

April 2018, Issue-40, Vol-03

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Printing Area

Editorial Board & Advisory Committee

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arebia)
4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
8) Jubraj Khamari (Orissa)
9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
16) Tadvi Ajij (Jalgaon)
17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
18) Dr.Varma Anju (Gangatok)
19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bangal)
23) Dr.M.M.Joshi, (Nainital)
24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
25) Dr.Seema Sharma (Indor)
26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
27) Dr. Yallawad Rajkumar (Parli v.)
28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
30) Dr Watankar Jayshree
31) Dr. Saini Abhilasha
32) Dr. Prema Chopde (Nagpur)
33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
35)Dr. Pandey Piyush (Delhi)
36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
46) Dr. Chaudhari Ramakant (Ja

Indexed

UGC Approved Journal
UGC
Jr.No.43053

IMPACT FACTOR 5.011 iijif

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

http://www.printingarea.blogspot.com

Printing Area

Index

1) Role of Micro Finance in India for Empowerment of rural women ....
Dr. (Prof) Ashok Kumar, Barhi VBU Hazaribag (Jharkhand) || 10

2) Role of Indian Public Administration Institute Libraries in Publication ...
Dr.PradipHimmatraoBarad, Chikhli-443201 Dist.Buldana. M.S. || 16

3) In the openion of Dr. V. Shivananda "Religion as a social variable of speech
Dr .Bennur Ashok Kumar, Kalgi, Tq : Chittapur Kalaburagi || 20

4) AN EMPIRICAL STUDY ON PERCEPTION OF FARMERS ON REPAYMENT ....
Dr.P. CHINNURAPPA, Anantapuramu-515003, || 23

5) ACADEMIA-INDUSTRY INTERACTIOS : NEED TO BRIDGING THE GAP
DR. SURENDAR CHOUDHARY, TEH.- NOHAR, DIST.- HANUMANGARH || 28

6) CROSS CULTURAL TRAINING FOR EXPATRIATES IN ORGANIZATION
-Shiny Colaco || 32

7) Vendors and Informal Sector: Economic Study of Street Food Vendors of West .....
Dr. Bikash Kumar Ghosh, Paschim Medinipur, West Bengal || 35

8) AWARENESS IN GIRL STUDENTS OF JUNIOR COLLEGES IN NAGPUR ...
Dr.JyotiVijay Haware, Smt. K.G. M. M. V. Daryapur || 39

9) HISTORICAL & GEOGRAPHICAL IMPORTANCE OF BHUPALGARH FORT ....
Dr. S.M. Kamble, A.C.S. College Palus || 41

10) The Inner Self in *The Essential Rumi*
Dr. Shahnaz Khan, Pandhurna (M.P) || 43

11) TOPIC: IMPACT OF GST ON BANKING SECTOR
MEENA KUMARI, MOGA. || 48

12) Eco-terrorism in India and its Impact on Literature and Humanity
Shweta Maurya, University of Allahabad || 51

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

13) GITA MEHTA'S RAJ: An Analysis
AjatshatruManikBhagat, Dr. Raheel K. Quraishi || 56

14) ART AND DESIGN AS EDUCATION IN JAIN AND BASHOLI PAINTINGS
Dr.Dolly Rochlani, Bhopal, M.P || 60

15) Job Satisfaction Among Higher Secondary Schools Teachers of Bilaspur ....
Dr. Anita Singh, Chhattisgarh Bilaspur || 63

16) Management Information Systems and Business Decision Making....
Vipin Singh, Md. Nurmahmud Ali, Amrik Singh || 65

17) Cloud Computing and Business Environment
UMAMAHESWARI. K*, SARAVANAKUMAR. A**, RAGAVI.J*** || 70

18) Horrors of Emergency and Sentiments of the Victims in Rohinton ....
Dr. Pragya Verma, Almora || 75

19) An Analytical Study of the impact of Advertisement on Rural Marketing ....
Dr. Chetan Krishnarao Hingnekar || 78

20) A Psychological Study of Old Age Pension Scheme Beneficiaries in ....
Dr. Sanap Manohar Kacharu, Mr. Kekane Maruti Arjun, Pune || 81

21) A STUDY ON THE EFFECTS OF EDUCATION ON HEALTH & NUTRITION
Mandeep Khalsa, Shalu Choudhary Dhamtari || 84

22) "Monetary Facts of Women's Self Help Groups in Chandrapur District"
Mr. Akash S. Meshram, Bramhapuri. || 91

23) CHALLENGES OF EDUCATION IN ERADICATION OF POVERTY IN INDIA
Dr. Munshi Lal Yadav Mukundganj, Hazaribag, Jharkhand || 95

24) अनुवादाची संकल्पना व स्वरूप
डॉ.नागनाथ लक्ष्मण आवले, कलबुर्गी || 99

25) शंकरराव खरातांच्या कादंबरीतील भटक्या विमुक्तांमधील स्त्रियांच्या समस्यांचे चित्रण
शोभा शंकरराव भुरभुरे, देसाईगंज (वडसा) || 101

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

26) खानदेशातील औद्योगिक क्षेत्रात प्रताप शेटजींची कामगिरी
प्रा. डॉ. वसंत श्रावण देसले || 104

27) संगीताच्या प्रचार व प्रसारामध्ये दृक-श्राव्य साधनांचे योगदान
प्रा. सतिष डि. जमधाडे, कुंभारी अकोला || 108

28) महिला सबलीकरणात आड येणाऱ्या सामाजिक व सांस्कृतिक प्रथा : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास
प्रकाश कोथळे, मुदखेड || 110

29) जागतिकीकरण आणि बोलीभाषा : संशोधनाच्या संधी
कोतकर सचिन माधवराव, डॉ.नगरकर संजय पांडुरंग, अहमदनगर || 113

30) 'दप्तर' कथासंग्रहातील कथांची आशयसूत्रे
प्रा. डॉ. बाळासाहेब शंकर शेळके, श्रीरामपूर, जि. अहमदनगर || 117

31) महात्मा गांधीजीचे अहिंसा विषयक विचार : एक सामाजिक आकलन
प्रा. डॉ. ए. टी. शिंदे, सिडको नांदेड || 123

32) मराठीतील संमोहनविषयक ग्रंथाचे लेखक, जीवनकार्य व योगदान
रामकृष्ण जगताप || 128

33) उतररामचरितम् में भवभूति द्वारा प्रतिपादित प्रेमानुभूति
अमित कुमार, नाहड़ रेवाड़ी (हरियाणा) || 134

34) भारतीय संस्कृति और सूफी कवि
डा० फैयाज़ हैदर, अलीगढ़ || 136

35) 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में उत्तर आधुनिकता
डॉ० चन्द्रप्रकाश मिश्र, नई दिल्ली || 139

36) 'आक्रांश' उपन्यास इक्कीसवीं सदी की नारी का प्रखर रुप
डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे, माकणी जिला उस्मानाबाद || 144

37) सृष्टि की उत्पत्ति में मानव समाज का निर्माण एवम् विकास
डॉ. महेशभाई जे. पटेलल,(सदर फलिया-वांसदा), ता.वांसदा, जि.नवसारी || 146

38) जशपुर जिले का पुरातात्विक महत्व
डॉ. विजय रक्षित, जशपुर (छ.ग.) || 150

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

39) विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का उनकी अधिगम, शैली के संदर्भ में अध्ययन
डॉ. विष्णु शर्मा, जयपुर || 155

40) संचार के विभन्न माध्यमों में हिंदी विज्ञापन का बढ़ता महत्व
डॉ. अमित शुक्ल, २४/११८ द्वारिका नगर, रीवा, म. प || 160

41) आचार्य रजनीश और शिक्षक के उत्तरदायित्व
सत्येन्द्र पाल सिंह, डा० आराधना पाण्डे, लखनऊ || 164

42) अमृतलाल नागर के उपन्यासों में स्त्री विमर्श
शशि रानी सिंकु, राँची, झारखण्ड || 169

43) भारत में आतंकवाद और समाप्ति के उपाय
लालचन्द कुम्हार, कोटा विश्वविद्यालय कोटा || 171

44) अल्मोड़ा शहर के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों की यौन शिक्षा के प्रति ...
कु० पूजा, अल्मोड़ा, नैनीताल || 175

45) आवासीय एवं गैर आवासीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता....
मंजुल द्विवेदी, इलाहबाद विश्वविालय || 181

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
हर्षवर्धन पब्लिकेशन प्रा.लि.
मु.पो.लिंबागणेश, ता.जि.बीड पिन : ४३११२६ (महाराष्ट्र)
harshwardhanpubli@gamil.com, vaidyawarta@gmail.com
सर्व प्रकारच्या शैक्षणिक व संदर्भ ग्रंथाचे प्रकाशक आणि वितरक

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Bajpai, Rawat Publications, Jaipur and New Delhi, 1998.
- ...prakash, Indira. "Ageing in India", World Health Organisation, Geneva, 1999.
- Jamuna, D. Challenges of Changing Socio-Economic and Psychological Status of the Aged", Help Age India, Vol. 5, No. 1, 5-13, 1998.
- Kohli, A.S. Social situations of the Aged in India, Anmol Publications, New Delhi, 1-7, 1996.
- Kanguda, ZeenatKauser. "Socio-Economic - Psychological Problems of Aged Women in India", Man in India, Vol. 81, No. 3 and 4, 291-300, 2001.
7. Mishra, Saraswati. "Social adjustment in Old Age : A Case Study of retired Government Employees
8. www.pune.nic.
9. www.nsap.nic.com

21

A STUDY ON THE EFFECTS OF EDUCATION ON HEALTH & NUTRITION

Mandeep Khalsa
Professor(Economics)

Shalu Choudhary
Research scholar (Economics)
B.C.S.Govt.P.G. Collage Dhamtari,
District. Dhamtari , Chhattisgarh.

ABSTRACT:

Numerous economic studies have shown a strong positive correlation between health & years of schooling. Inthis context the present study attempts to analyze the direct and indirect effects of education on mental & physical health and health behaviors. The present study depicts the life chart of sampled population & education was measured by the highest self-reported level of education completed. In the present study, education related disparities in health were focussed upon. This is of tremendous importance for our understanding of determinants of health as well as for our understanding of how schooling affects and shapes individual lives. Education may cause better health in several ways, education influences job opportunities and income which in turn may affect health. Education may also enhance knowledge of how to live a healthy life, leading to improved choices ofuse of time and goods that affect health.

Key words:- Education, health, health literacy, nutrition.

Introduction:-

Education is commonly defined in terms of years in which an individual has participated

in schooling or sometimes in terms of the level of qualification attained. Both of these measures are important and relevant to the study of education effects.

Education does not act on heath in isolation from other factors. Income is very important factor that works in many interacting ways along with education as influences on health. However, empirical investigations often find that the effect of education on health is at least as great as the effect of income.Thus people with more years of schooling tend to have better health &well being and healthier behaviors.

Objectives of the study

The objectives of the present study are to analyze the effects of education on mental & physical health and nutrition status of population in three districts of Chhattisgarh viz. Raipur, Raigarh&Dhamtari and analyze better policy interventions in investment in education for the holistic development of population of the state.

Research Methods

The study was conducted is 3 Districts of Chhattisgarh. The total sample size in 300 respondents selected from 06 different education levels using simple random sampling technique at first stage and at the second stage stratified random sampling technique was adopted in selecting respondents form each education group with proportional allocation.

In the present study, the researcher used interview schedule to seek information from the respondents as a primary data collection tool and secondary data was also used to determine a strong cohesion in education & health.The response were collected by grouping the sampled population into (a) uneducated (b) primary education (c) secondary education (d) higher secondary education (e) Graduation (f) Post graduation & above, in accordance with the CBSE classification. Education was used as a categorical variable in the analysis.

Effect of Education on the main health indicators -

1) Effect of Education on Infant Mortality rate (IMR):

IMR measures number of infant dying before first birthday per 1000 live births. The effect of education on IMR is substantial and the results show that an increase in the average number of years of education in the household reduces infant mortality by approximately 10 percentage points from a mean level of 22.5%.Table 01 explains the effect of education (independent variable) on infant mortality rate (the dependent variable)

Table 1. : Level of education & infant mortality.

Level of education	Infant mortality	No infant mortality	Total
Uneducated	32 (64)	18 (36)	50 (100)
Primary	27 (54)	23 (46)	50 (100)
Secondary	20 (40)	30 (60)	50 (100)
Senior secondary	17 (34)	33 (66)	50 (100)
Graduation	05 (10)	45 (90)	50 (100)
Post graduation& above	02 (04)	50 (100)	50 (100)
Total	101(33.67)	199(66.33)	300 (100)

Source primary survey-2016

Note- Figure in parenthesis are in percentage.

It is clear from the above table that infant mortality is highest at 64% in uneducated group and falls constantly as the level of education rises. No infant mortality is reported at PG & above level, however there could be accidental deaths which are not taken into account while establishing the relationship behavior education and infant mortality.

2) Effect of Education on Maternal Mortality Rate (MMR):

MMR measures numbers of women aged 15-49 years dying due to maternal causes per 1,00,000 live births. The effect of education on MMR is substantial and the incidence of MMR declines as the level of education of women rises.

Table 2.1.

Percentagedistribution by respondent's fact files on the level of education and maternal

mortality rate in sampled families.

Level of education	Maternal mortality	NoMaternal mortality	Total
Uneducated	10 (20)	40 (80)	50(100)
Primary	06 (12)	44 (88)	50(100)
Secondary	02 (04)	48 (96)	50(100)
Senior secondary	--	50(100)	50(100)
Graduation	--	50(100)	50(100)
Post graduation& above	--	50(100)	50(100)
Total	168(56)	132(44)	300 (100)

Source primary survey-2016

Note- Figure in parenthesis are in percentage.

It is clear from the table that highest no. of maternal mortality is found in uneducated group i.e. 20% which falls as the level of education rises and it is 0 in Senior secondary, Graduation,PG & above. It may be due to the universation of healthcare facilities even in rural areas where births are attended by skilled personal. However there is strong correlation is the level of education & low maternal mortality.

Table 2.2 : Relation between education & age of woman at the time of marriage.

Level of education	Women's age at the time of marriage					Total
	Before 18	18-22	23-25	26-28	28 & above	
Uneducated	24(48)	24(48)	01 (02)	--	01 (02)	50
Primary	29(58)	18(36)	03 (06)	--	--	50
Secondary	21(42)	16(32)	08 (16)	04 (08)	01 (02)	50
Senior secondary	10 (20)	18 (36)	17 (34)	03 (06)	02 (04)	50
Graduation	05 (10)	18 (36)	18 (36)	05 (10)	04 (08)	50
Post graduation& above	01 (02)	17 (34)	20 (40)	10 (20)	02 (04)	50
Total	90 (30)	111 (37)	67 (22.33)	22 (7.33)	10 (3.33)	300 (100)

Source primary survey-2016

Note- Figure in parenthesis are in percentage.

It is clear from the above table that in sampled families, in the uneducated group the largest percentage of women who are less than 18 years at the time of marriage is found which is 48% it is again 48% in the age group 18-22 and only 2% in the age group 23-25 and 0 in the age group 26-28 and only 2% in the age group of 28 & above which could be due to some other reason other than education.

It is clear from the table that as the level of education rises percentage of women who get married before the age of 18 falls constantly and the women enter the higher level of marriage age as they get more education.

Table 2.3

Level of education & age of women at the time of birth of first child.

Level of education	Age of women at the time of first child					Total
	Less than 18	19-22	23-25	26-28	More than 28 yrs	
Uneducated	14 (28)	28 (56)	06 (12)	01 (02)	[illegible]	[illegible]
Primary	08 (16)	27 (54)	09 (18)	04 (08)	[illegible]	[illegible]
Secondary	02 (04)	22 (44)	15 (30)	08 (16)	[illegible]	[illegible]
Senior secondary	01 (02)	20 (40)	12 (24)	14 (28)	[illegible]	[illegible]
Graduation	--	08 (16)	22 (44)	13 (26)	07 (14)	[illegible]
Post graduation& above	--	06 (12)	16 (32)	21 (42)	07 (14)	[illegible]
Total	25 (8.33)	111 (37)	81 (27)	[illegible]	[illegible]	[illegible]

Source primary survey-2016

Note- Figure in parenthesis are in percentage.

It is clear from the table that highest percentage of women who gave birth to their first child before the age of 18 is found in uneducated women's group and even in 19-22 age-group, it is only for uneducated women who are highest i.e. 56%. As the level of education rises, women move to the 19-22 age group and that too in small numbers i.e. only 16% and 12% for Graduate % Post Graduate mothers respectively. The highest percentage of women graduates in the age group 23-25 and for Post graduates it is in 26-28. This there is strong positive correlation in education & a rise in the age-group of women at the time of birth of their first child.

It can be explained as first education raises the age of marriage of educated women. Women with higher levels of education spend longer in schooling and delay marriage and childbearing.

Also high educational attainment increases future earnings and subsequently raises the opportunity cost of having children.

Also education increases women's ability or sense of power to take control of their lives, empowering them over the choice of fertility, partly through effects on self esteem and aspiration but also through changes in pemibitities& opportunities.

As Empirical studies have shown that women with low level of education qualification tend to have children younger than their better

educated counterparts (Rowlington&Mckay, 1998)

3. Level of education & percentage of Births attended by skilled health staff:-

Percentage of births being attended by skilled staff rises as the level of education rises. We have explained this relationship in table No.03 which depicts level of education (in dependent variable) and institutional deliveries (dependent variable)

Table 3.

Level of education & percentage of Births attended by skilled health staff

Level of education	Institutional delivery	No Institutional delivery	Total
Uneducated	10(20)	40(80)	50 (100)
Primary	20(40)	30(60)	50 (100)
Secondary	25(50)	25(50)	50 (100)
Senior secondary	30(60)	20(40)	50 (100)
Graduation	40(80)	10(20)	50 (100)
Post graduation& above	48(96)	02(04)	50 (100)
Total	173 (57.67)	127 (42.33)	300 (100)

Source primary survey-2016

Note- Figure in parenthesis are in percentage.

It is clear from the table no. 3 that largest number of non-institutional delivery cases is found in case of uneducated population and it keeps falling as the level of education rises and these are only 4% rare cases in Post Graduation& above group where the birth of a child was not attended by a skilled medical staff.

Thus there is a strong correlation between the level of education and institutional deliveries.

4- Level of Education and Immunizations of Children:

Low level of mother education is linked to low vaccine uptake and there is significant relationship between parents level of education & full immunization of their children. This relationship is depicted in the table No. 04

Table 4.

Relation between education & proper vaccination of children.

Level of education	Vaccination	No Vaccination	Total
Uneducated	[illegible]	[illegible]	50
Primary	40(80)	10(20)	50
Secondary	50(100)		50
Senior secondary	50(100)		50
Graduation	50(100)		50
Post graduation& above	50(100)		50
Total	268(89.33)	[illegible]	300(100)

Source primary survey-2016

Note- Figure in parenthesis are in percentage

It is clear from the table whereas the percentage of vaccinated children in sampled families is about 100% in Secondary, Senior Secondary, Graduation and PG& above which could also be due to universalization of vaccination programme, there are still cases of families in uneducated and primary education group where a large number of children are still not vaccinated at 44% and 20% respectively. In the light of the fact that vaccination of children is free at primary health centers, the low level of vaccination in uneducated & primary education group can be explained by lack of education, and awareness about its benefits.

A study based on data from the 1992 Indian National Family & Health survey found that, in rural areas, Children with literate fathers were move likely to be vaccinated, even if the mother was illiterate. When both parents had no education children were significantly less likely to be immunized.

5- Level of education and choice of planned or unplanned family:-

Family planning is the planning of when to have and use birth techniques to implement such plans. However family planning is usually used as a synonym for the use of birth control. It also includes raising a child with methods that require significant amount of resources namely: time, social, financial and environmental. Family planning measures are designed to regulate the number and spacing of children within a family.

Table No 5.1

Level of education and choice of planned or unplanned family:-

Level of education	Family planning adopted	No family planning	Total
Uneducated	10(20)	40(80)	50(100)
Primary	15 (30)	35 (70)	50 (100)
High School	20 (40)	30 (60)	50 (100)
Intermediate	30 (60)	20 (40)	50 (100)
Graduation	40 (80)	10 (20)	50 (100)
PG & above	50 (100)	--	50 (100)
Total	165 (55)	135 (45)	300 (100)

Source primary survey-2016

Note- Figure in parenthesis are in percentage.

It is clear from the table that the highest percentage i.e 100% family planning was found amount the high education group. And it is lowest (20%) in uneducated population. It is evident that in low education group the percentage of planned families is low and in high education group the percentage of planned families is high. It may be due to the awareness about various family planning methods that comes along with education as it makes them well informed about making choices to improve their reproductive time health & reduce unwanted pregnancy. Of the 135 families not adopting family planning the reasons of not-adopting were studied and are depicted in table No. 5.2

Table No. 5.2

Reason behind not adopting family planning methods and level of education.

Level of education	No information available	Fear to use	Not sure about kids	Others	Total
Uneducated	22 (55)	14 (35)	04(10)	-	40(29.63)
P	18 (51.42)	11 (31.42)	02(5.71)	04(11.42)	35(25.92)
HS	15 (50)	10(33.33)	03(10)	02(6.67)	30(22.22)
SS	06 (25)	14(70)	01(05)	-	20(14.81)
G	00	06(60)	02(20)	02(20)	10(7.40)
PG& above	00	-	-	-	-
Total	60 (44.44)	55(40.74)	12(04)	08(2.67)	135( )

Source primary survey-2016

Note- Figure in parenthesis are in percentage.

Of the total 135 families out of a total of 300 surveyed, the No. of families not adopting family planning because of no information, fear to use or no surely about kids (i.d whether born children will survive or not) is found ... in uneducated groups and the percentage ... as the level of education rises.

6. Level of Education & Prevalence ... malnourishment &anemia ;

Short maternal stature, extreme pov... poor dietary diversity and mothers la... education are among the top five risk fa... for malnutrition in Children in India, acco... to a new Harvardstudy.

Results from study of these ... districts of Chhattisgarh are no exception ... this relationship of these three variables ... level of education is presented by table N...

Table No. 6

Level of education and prevalence of malnourishment and anemia

Level of education	Malnourished	Sickle cell anemia	Any other deficiency disease	Self rated good health
Uneducated	12 (24)	08(16)	15(30)	10(20)
P	09 (18)	06(12)	12(24)	23(46)
HS	07(14)	05(10)	11(22)	27(54)
SS	05(10)	04(08)	09(18)	32(64)
G	04(08)	03(06)	05(10)	38(76)
PG& above	01 (02)	01(02)	02(04)	46(92)
Total	38(12.67)	27(09)	54(18)	[illegible]

Source primary survey-2016

Note- Figure in parenthesis are in percentage.

It is clear from the table that the highest number of cases of malnourishment and sickle cell anemia or any other deficiency disease is prevalent at the highest rate in low- education group particularly uneducated and as the level of education rises the cases of malnourishment, sickle cell anemia or any other deficiency disease fall and the percentage of self rated good health rises and is highest at 92% in PG and above education group. Income can also be the hidden factor behind these conclusions.

Factors such as intake of vitamin A, breastfeeding, use of iodized salt, improved water and sanitation and even immunization all currently high priority interventions in the global discourse on addressing undernutrition account for less than 15 percent of the cases of undernutrition.

The strength of effect of education on health can be understood by the statement of S V Subramanian, the author of study on- "Lack of Education behind Malnutrition"

"There is an immediate need to not waste time and resources on short term & doable interventions" While asking people to change behaviors and offering piecemeal solutions might provide some short-term relief, such strategies cannot be substituted for the urgent need to improve food and livelihood security which is brought about by raising the level of education."

7. Level of Education & Reason of Mortality in Children :

Case, Lubotsky & Paxson(2002) using the 1988 National Health Interview Survey (NHIS) find that children living with high-school-educated mothers and fathers are reported to be in better health than children of parents who did not finish high school.

Table No. 7

Level of education and reason of mortality in children

Level of education	Illness	Lack of medicine	Economic deficiency	Nonslant mortality	Total
Uneducated	08 (16)	13 (26)	11 (22)	18(36)	50 (100)
P	07 (14)	12 (24)	08 (16)	23 (46)	50 (100)
HS	05 (10)	07 (14)	08 (16)	30 (60)	50 (100)
SS	07 (14)	06 (12)	04 (08)	33 (66)	50 (100)
G	03 (06)	01 (02)	01 (02)	45 (90)	50 (100)
PG& above	-	-	-	5(100)	50 (100)
Total	30 (10)	39 (13)	32 (10.67)	199 (67.33)	300 (100)

Source primary survey-2016

Note- Figure in parenthesis are in percentage.

It is clear from that above table that mortality in children is highest in uneducated group and the percentage of children dying because of illness or lack of medicine (which is borough about by the fact that it also being the low income group) or economic deficiency is also high and as the level of education rises the percentage of children dying because of any of these reasons falls and in high education group there is no mortality of children due to any of these three reasons however there could be child mortality which is accidental & was not included while establishing a relationship between education and these three reasons.

Limitations of the study:

Some limitations have been identified in this study, Firstly vaccination data relied heavily on mother's recall, which is subject to bias. Maternal recall however is considered a valid measure of child vaccination coverage in the absence of vaccination records in developing areas.

Secondly, Factors relating to the availability of primary health infrastructure were not-considered due to the unavailability of data.

Thirdly, several other factor like the general health conditions in rural areas & urban areas, the nature of illness prevailing in both the areas were not taken into account.There are some diseases which require high expenditures & there can be variation in their prevalence in various areas, life style factors, and cultural norms were not considered. The analyses of the above mentioned non-economic factor is beyond the scope of this paper.

Fourthly, Due to better economic status of people in terms of per capita income & increased awareness due to governments efforts, the health profile has improved which can purely not be explained by improvement in education alone.

Finally, despite the above limitations, the study has been able to show that within the larger domain of public health, child & maternal health care constitute an extremely important component and these are strongly affected by education. These factors determine the overall health profile of a developing or an under developed economy since most of these economies suffer from childmalnutrition high infant & maternal mortality rates & low level of institutional deliveries.

Despite these limitations, this study shows that it is important to appreciate the role of education in health of the individual & society and improving access to education is an essential

building block for reducing maternal & infant mortality, improving immunization of children, reducing malnutrition.

Policy discussion:-

We draw the following conclusions from the review of the evidence in this study.

Education has substantial effects on health that provide personal & social benefits, not captured in the calculation of the personal wage benefit of education. These benefits accrue to individual, families, communities & nations.

Education is important in the formation of health not just because it has effects on the individual but also because it impacts on the access of the individual to relatively healthy contexts in terms of physical/ chemical environment & social & economic relations.

The importance of education for health is not just a matter of the access of the individual to educational provision but also of the social level ofaccess. As the social level of access changes so will the individual level of benefit.

There may be many important externalities from the education of some to the health of others such as good advice in case of health issues.

Thus the effect of education on health is substantial& it feeds into inequalities in health as well as to overall level of population health. Wide ranging different aspects of health, well being& health behavior are impacted on by education & these are also effects on next generation. Education is not just a matter of genetic capabilities or personal agency &well being but has independent casual effects that have been replicated across many studies in many different contexts. The conclusion that education has benefits beyond those of personal labor market advantage & economic production is well supported by theory & evidence.

Failure to see this additional benefit may lead to under investment in education and to unnecessary personal & social costs in terms of ill health & reduced well being. So the policy makers may recognize the range &scale of potential benefits from education&so do factor these wider considerations into their funding& participation decorations decisions. The study of these three districts may be used to draw conclusions about the whole of Chhattisgarh state which is in its infancy period in the developmental scale. The policy makers should realize that healthy and active children can develop the economy of the state to the required level. The children are the future of a nation so healthy and an educated child means healthy & progressive future. Thus education should receive the desirable level in investment expenditure.

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

Issue-16, Vol-05, Oct. to Dec.2016

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

www.vidyawarta.com

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक संशोधन पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec. 2016
Issue-16, Vol-05

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

Vidyawarta Research Journal is "Printed by Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra and Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post.Limbaganesh Dist.Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
Mobi. 09850203295, 07588057695

❖ Editorial Board ❖

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar **(Japan)**
2) M.Saleem, Sialkot **(Pakistan)**
3) Dr. Momin Mujtaba **(Saudi Arebia)**
4) Dr. Anupama Alvikar **(Turkey)**
5) N.Nagendrakumar **(Sri Lanka)**
6) Dr. Wankhede Umakant **(Maharashtra)**
7) Dr. Dixit Kalyani **(Lucknow)**
8) Dr. Basantani Vinita **(Pune)**
9) Dr. Upadhya Bharat **(Sangali)**
10) Dr. J. David Livingston **(Thirupathy)**
11) Dr. Kadu S. V. **(Akola)**
12) Dr. Jubraj Khamari **(ORISSA)**
13) Krupa Sophia Livingston **(Tamilnadu)**
14) Dr. Umesh chandr Shukl **(Mumbai)**
15) Dr. Ambhore Shankar **(Jalna)**
16) Dr. B.J.Patel **(Gujrat)**
17) Manmeet Kaur (**(Uttrakhand)**)
18) Dr. Sunil S. Trvedi **(Gujrat)**
19) Dr. Raj Bala Gaur **(New Delhi)**
20) Preeti Sarda **(Hyderabad)**
21) Prof.Surwade Yogesh **(Satara)**

❖ Advisory Committee ❖

1) Dr. Chodhari N.D. **(Kada)**
2) Dr. Yallawad Rajkumar **(Parli v.)**
3) Dr. Yerande V. L. **(Nilanga)**
4) Dr. Shinde Sunil **(Parbhani)**
5) Dr. Awasthi Sudarshan **(Parli v.)**
6) Ghante Pradipkumar , **Solapur (MS)**
7) A. Durga Prasad, **Telangana**
8) Dheeraj Kumar Pandey, **Varanasi (U.P.)**
9) Prof. Machale Ravinda **(Parli v.)**
10) Vipin Panday, **Kanpur (U.P.)**
11) Dr.V.Aruna, **Chennai (Tamilnadu)**
12) Dr. Avineni Kishor, **Kuppam(Kerala)**
13) Prof. Deshmukh Suryakant **(Parli v.)**
14) 23) Dr. Dhaigude R. B. **(Parli v.)**
15) Dr. Rajendra Acharya **(Parli v.)**
16) Dr. Manoj Kr Sharma **(Haryana)**
17) Dr. Rajesh Chandra Paliwal **(Uttrakhand)**
18) Dr. Suresh Babu **(Hyderabad)**
19) Deepak Nema **(M.P.)**
20) Dr. Maheswar Panda **(Orissa)**
21) Dr. Dr. Piyush Pandey **(Delhi)**

North Maha. University,
Jalgaon. Approved
ना.क्र.उमवि/११/इ.अ.वि./३१३/२०१३
Dt.२३.१०.२०१३

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
International Multilingual Research Journal

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Vidyawarta' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university,institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Vidyawarta is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

|| Index ||

1) The Ornate Mirror is Curtained: An Understanding Of the Mind of Virginia Woolf || 08
Dr. Gopa Bhattacharyya

2) FUNCTIONING AND PERFORMANCE OF AGRICULTURE PRODUCE MARKETING ....
Dr. Harnawle C.K., Dist. - Nanded, Goje Rajesh Chandrakant, Dist.-Nanded || 11

3) Vividh Gharano Ki Raag Charcha || 16
Dr.N.L Gondane, Akola.

4) Bafflement & Solace : A Comparative Study of T.S. Eliot's *The Waste* ..... || 21
Dr. Shalini Bang, Akola.

5) CHAND BIBI – A WOMEN OF SUBSTANCE || 24
Indripi Mallikarjuna, Dist, Karnataka.

6) EDUCATIONAL ASPIRATION OF +2 STUDENTS IN RELATION TO SCHOOL ENVIRONMENT || 27
Anjana Rani, Vishu Setia, Abohar

7) Standards for Construction of Psychological Tests || 31
Anjana Rani, Abohar

8) USE OF MOBILE IN TEACHING-LEARNING AND EVALUATION || 34
Madhuri Rathour, Allahabad

9) COMPARATIVE STUDY OF CREATIVITY OF RURAL AND URBAN STUDENTS ....
MADHU KRISHNANI, Dr. RAMA TYAGI, Gwalior(M.P.) || 34

10) Re-building old ties in the era of multipolar linkages and Dependency....
Dr. Sheel Bhadra Kumar || 42

11) Emergency'- Constitutional Overview
Dr. Ashok M.Shroff, Distt. Aravalli, Gujarat || 45

12) Credit Appraisal System with special reference to Micro Small and ....
Dr. Ayush Srivastava, Lucknow || 48

13) Croce and the doctrines of Expressionism
Pri. Dr.Bhasker A.Shukla. Dist.dahod || 55

14) BRIGHT HOPE FOR TOMORROW: ROLE OF TEACHERS IN 21st CENTURY
Manmeet Kour, University of Jammu || 58

15) DEMOGRAPHIC STRUCTURE OF HALDWANI AGLOMERATION.... || 62
T. B. Singh, B.R. Pant, Haldwani, Nainital

16) THE STUDY OF ZOOPLANKTON DIVERSITY OF SINA RIVER BEED REGION .... || 69
A.Hamid A.Gani Tamboli, Dist.Ahmednagar

'17) लोकमनातील संत जनाबाई' || 71
गिरी शिवचरण प्रभाकर, औरंगाबाद

18) चलनवाद एक वाढता धोका || 73
डॉ. हिप्परगावकर आर.ए. जि. नांदेड.

19) महिला सक्षमीकरण आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर || 75
प्रा. अतुल एन.खोटे, रिसोड जि.वाशिम

20) अनुवाद व सामाजिकव्यवस्था : परस्पर संबंध || 77
प्रा. डॉ. निलेश एकनाथराव लोंढे, परभणी

21) गडचिरोली जिल्हयातील पंचायत समित्यांचे, जिल्हयाच्या विकासात योगदान || 80
प्रा. संजय मरोतराव महाजन, जि. गडचिरोली

21) शालेय शिक्षणात आरोग्य शिक्षणाची भुमिका || 86
प्रा.डॉ.किरण व.मोगरकर. जि.बुलडाणा

22) जागतिकीकरण आणि दलित || 89
डॉ. प्रमोद भगवान पडवळ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

23) भारतातील शेती आधारित उद्योग : प्रगती व समस्या एक विशलेषणात्मक अभ्यास || 93
प्रा. डॉ. वाल्मिक दगडू परहर, जि. रत्नागिरी.

24) बंजारी जमातीचा इतिहास || 95
फड ज्ञानोबा दशरथ

24) लोकदैवत पांडुरंग - इतिहासचिंतकांपुढील एक उत्कंठा || 97
प्रा.श्रीहरी रंगनाथराव पितळे, रिसोड जि. वाशिम.

25) रियासत टिहरी के 'जनआन्दोलनों' में पंचायती राज व्यवस्था की अवधारणा: || 101
डा. वेणीराम अन्थवाल,डा. मनमोहन सिंह नेगी

26) स्वतंत्रता से पूर्व उत्तर–पश्चिमी उत्तर प्रदेश के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकास में... || 105
डॉ. अखिलेश भट्ट, नैनीताल

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal http://www.vidyawarta.blogspot.com

27) छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में कुपोषण दूर करने तजब त्योहार की भूमिका || 113
कु. शीतल सोनकर, डॉ. मनदीप खालसा, धमतरी (छ.ग.)

28) पर्वतीय क्षेत्र में जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण (जनपद टिहरी गढ़वाल का विश्लेषण) || 117
डॉ. दिनेश सिंह नेगी, श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड

29) महाविद्यालयी छात्रों की राजनीतिक अभिरुचि उत्तराखण्ड सीमान्त जनपद चमोली के... || 122
डॉ. जगमोहन सिंह नेगी,चमोली (उत्तराखण्ड)

30) नागार्जुन साहित्य के विविध आयाम || 127
डॉ. एम.एल. पाटले, जॉजगीर

31) आदिवासी समाज : पहचान का संकट || 130
ज्योति रानी,जम्मू

32) भारतीय समाज पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव || 132
सपना, बिजनौर

33) रवीन्द्र कालिया के उपन्यास साहित्य में दरकते दाम्पत्य सम्बन्ध || 135
Naresh Sharma, Jammu

34) जयशंकर प्रसाद के काव्य में सांस्कृतिक चेतना || 138
डॉ.निभा एस. उपाध्याय, अकोला

35) आज का समय और भूमंडलीय यथार्थ || 141
निशा वर्मा, जम्मू

36) स्त्री और राजनीति– हादसे || 143
विजय कुमार, जम्मू

37) उत्तराखण्ड के अभ्यारण्यों एवं उद्यानों में संरक्षित वृक्षों व वनस्पतियों का धार्मिक एवं औषधीय महत्व || 145
प्रो० डी० पी० सकलानी · धर्मेन्द्र यादव

38) छत्तीसगढ़ी लोकगाथा पण्डवानी की लोक संस्कृति || 153
डॉ गौरी अग्रवाल, रायपुर (छत्तीसगढ़)

39) पर्यावरण शिक्षा की वर्तमान में प्रांसगिकता || 160
डॉ. उदय कालभंवर

40) छत्तीसगढ़ में गांधी जी की यात्रा का अनुशीलन || 163
डॉ. सचिन मंदिलवार, अम्बिकापुर (छत्तीसगढ़)

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal — http://www.vidyawarta.blogspot.com

संदर्भ—

१. आर्यमित्र, १३ जून, १९७६, पृ० ८

२. भवानी लाल भारतीय, :'आर्यसमाज और राष्ट्रीयता' परोपकारी, जून १९७४, पृ० २८

३. यदज: प्रथमं संबभूव स ह तत् स्वराज्यमियाय। यस्मान्नान्यत परमस्ति भतम्। –अथर्व. १०–७–३१

४. इत्था हि सोम इन्यदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्। शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निःशशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्।। (ऋग्वेद १–८०–१)

५. अदीना: स्याम शरद: शतम्।

६. स्मारिका, आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह, आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला मुरादाबाद

७. मेरठ आर्य समाज के सौ वर्ष, प्रथम शताब्दी १९७८, पृ० ८६–८७

८. प्रेमचन्द शर्मा 'आर्यसमाज के कार्य', आर्यमित्र, १४ नवम्बर, १९८२, पृ. ५

९. फूलचन्द शर्मा 'आर्यसमाज की सुदशा और दुर्दशा' परोपकारी, १९७५, पृ. ६७

१०. प्रकाशवीर शास्त्री 'राष्ट्रीय चेतना और आर्यसमाज: स्मारिका, आर्यसमाज शताब्दी समारोह, कानपुर पृ० ३२

११. राधेश्याम आर्य: 'आर्यसमाज: एक क्रांतिकारी आन्दोलन' आर्यगजट, फरवरी १९८०, पृ. १८

१२. हरि सिंह आर्य, महर्षि दयानन्द के उपकार, स्मारिका १९७९ आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह, मुरादाबाद

29

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में कुपोषण दूर करने वजन त्यौहार की भूमिका

कु. शीतल सोनकर
शोधार्थी, शोध केन्द्र, बी.सी.एस.
स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी (छ.ग.)

डॉ. मनदीप खालसा
प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), बी.सी.एस.
स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी (छ.ग.)

****

संक्षिप्त सार — निर्धनता और कुपोषण आज विश्व के लिए एक चिंतनीय विषय है। यह तीसरे विश्व युध्द के बाद के देशों में अधिक पाया गया है। समाज और राष्ट्र की समृध्दि के लिए माता और शिशुओं का स्वस्थ होना आवश्यक है। विश्व में बहुत सारी माताएं एवं बच्चें कुस्वास्थ्य ,कुपोषण ,गरीबी ,अशिक्षा और अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवाओं से ग्रसित है। कम और मध्यम आय वाले देशों में विशेषकर अतिनिर्धन परिवारों में कुपोषण देखने मिलता है। विश्व मे ८० लाख से अधिक बच्चें अपने जन्म के पहले दिन ही मर जाते है। जबकि ४० लाख से ज्यादा बच्चें मात्र कुछ महिने या दिन तक ही जीवित रह पाते है। विकासशील देशों में ५१ लाख बच्चें तो प्रसव के दौरान ही मर जाते है। कुपोषण की अधिकता से स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। यदि महिलाएं एवं बच्चे कुपोषित हो तो इसका दुष्प्रभाव पूरे घर–परिवार के साथ–साथ समाज पर पड़ता है। कुपोषण का सीधा तात्पर्य संतुलित और पौष्टिक आहार का अभाव है। खाद्यान्न उत्पादन की वृध्दि दर, जनसंख्या वृध्दि दर से अधिक होने पर भी भारत के आधे से अधिक राज्यों में गरीबी एवं d qiks k d h l eL; k fo| eku g& UNDP संबंधी

कुल देशों की मानव विकास सूची में भारत का स्थान १३० वां है। आयरन (लौह तत्व) हीमोग्लोबिन (रक्त के लाल कण) का अवयव है जो शरीर के कोशिकाओं को जीवनदायिनी आक्सीजन प्रेषित करता है। तथा विटामिन । आखों के स्वास्थ्य और बच्चों के लिए अति महत्वपूर्ण अवयव होता है। सुपोषित महिलाएं और सुपोषित बच्चे न केवल उत्तम पोषक आहार एवं उत्तम सेवाओं से बल्कि गरीबी ,कुपोषण अशिक्षा को दूर करके महिला एवं बच्चे से संबंधित जुड़ी संस्थाओं की भागीदारी सुनिश्चित कर हासिल किया जा सकता है।

प्रस्तावना :— वजन त्यौहार योजना में सभी ग्रामों में संचालित आंगनबाड़ी में कार्यरत कार्यकर्ताओं द्वारा ग्राम में भ्रमण करके बच्चों को सर्वेक्षण में शामिल करके उनका वजन लिया जाता है एवं मध्यम व कम वजन वाले बच्चों को लक्षित करके उनके परिवार को स्वास्थ्य शिक्षा तथा पोषण शिक्षा एवं सलाह दिया जाता है। सही भूखमरी, निर्धनता तथा बीमारी कुपोषण के बीज है। यदि नवजात शिशुओं को ०६ माह तक मां का पीला गाढ़ा दूध न मिले । ०६ माह के बाद स्तनपान के साथ नरम पतला खाना ना मिलने से कुपोषण होता हैं। गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान अतिरिक्त पोषण आहार उपलब्ध नहीं होने के कारण मां के साथ नवजात जन्म से कुपोषण से ग्रसित हो जाता हैं। इसलिए राज्य सरकार द्वारा महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग के आंगनवाड़ी केन्द्र से अतिरिक्त पोषण आहार उपलब्ध कराया जा रहा हैं। ०.०६ माह के बच्चों तथा ०६माह से ०६ वर्ष के बच्चों को वजन त्यौहार योजना के अन्तर्गत सर्वेक्षित करके उन्हें कुपोषण से बचाने की प्रक्रिया प्रांरभ की गयी।

अध्ययन के उद्देश्य :— १. परिवार तथा समाज को कुपोषण के प्रति जागरूक करना ।

२. प्रत्येक परिवार के हितग्राही बच्चों में पोषण की सही स्थिति से परिवार को अवगत कराना।

३. कम वजन वाले बच्चों का चिन्हांकन करके कुपोषण मिटाने उचित उपचार एवं परामर्श प्रदान करना ।

अध्ययन का क्षेत्र एवं प्रविधि :—

धमतरी विकासखण्ड में ०.०६ वर्ष के सभी बच्चों का वजन लेकर कुपोषण ग्रसित (आयु अनुसार कम वजन, कम ऊचाई/लंबाई) बच्चों के परिवार को पोषण शिक्षा देना । बच्चों के प्रति पारिवारिक भेदभाव को कम करके पूरक पोषण आहार देना ।

सम्पूर्ण अध्ययन महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा वजन त्यौहार के आकड़ो पर आधारित है।

तालिका १.१ धमतरी जिले में ०.०३ वर्ष के सर्वेक्षित एवं नामांकित बच्चों की स्थिति

विकासखण्ड	धमतरी (ग्रामीण)	नगरी	मगरलोड	कुरूद	धमतरी (शहरी)	कुल
सर्वेक्षित	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	3112	[illegible]
नामांकित	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	3417	[illegible]

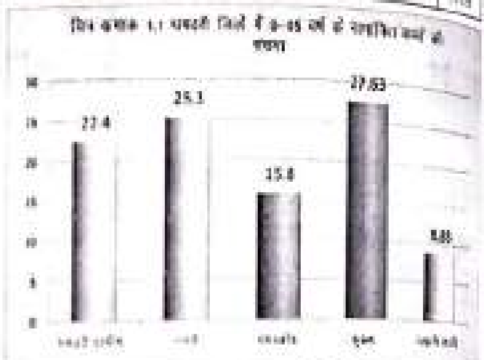

तालिका में ०.०३ वर्ष के ४०२५३ बच्चों को सर्वेक्षण में शामिल किया गया जिसमें ३९१०२ बच्चों को नामांकित किया गया। धमतरी ग्रामीण में ९७.०९ प्रतिशत बच्चे वजन त्यौहार में शामिल किये । नगरी में ९९.३ प्रतिशत बच्चें वजन त्यौहार में शामिल किये गये।

मगरलोड में ९३.५ प्रतिशत बच्चों को वजन त्यौहार में शामिल किया गया। कुरूद में ९८.८ प्रतिशत बच्चों को वजन त्यौहार में शामिल किया गया। धमतरी शहरी में ९२.४ प्रतिशत बच्चें वजन त्यौहार मे शामिल किया गया।

तालिका १.२. धमतरी विकासखण्ड में ०.०३ वर्ष के बच्चों की संख्या

विकासखण्ड	वजन किये गये बच्चों की संख्या	सामान्य वजन	मध्यम वजन	गंभीर वजन
धमतरी (ग्रामीण)	8920	87.41	10.22	2.37
नगरी	9687	81.42	14.74	3.84
मगरलोड	6279	69.21	25.20	5.59
कुरूद	10502	83.01	13.98	3.01
धमतरी (शहरी)	3752	78.84	17.46	3.70
योग	39140	81.16	15.66	[illegible]

चित्र क्रमांक १.२ धमतरी विकासखण्ड में ०.०३ वर्ष के बच्चों की संख्या

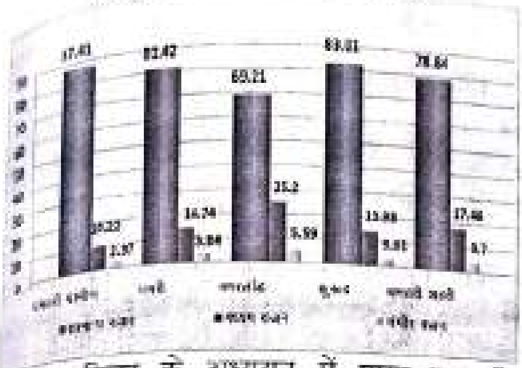

तालिका के अध्ययन में पाया गया कि धमतरी जिलें में ३९१४० बच्चों का वजन लिया गया जिसमें धमतरी ग्रामीण में ८७.४१ प्रतिशत बच्चें सामान्य वजन वाले पाये गये। १०.२२ प्रतिशत बच्चें मध्यम वजन वाले तथा २.३७ प्रतिशत बच्चें गंभीर कुपोषण से ग्रसित पाये गये। कुरूद विकासखण्ड में १०५०२ बच्चों में ८३.०१ प्रतिशत बच्चें सामान्य वजन के थे । १३.९८ प्रतिशत बच्चें मध्यम वजन तथा ३.०१ प्रतिशत बच्चें कुपोषण से ग्रसित पाये गये। नगरी विकासखण्ड में ९६८७ बच्चों के वजन में ८१.४२ बच्चें सामान्य वजन के पाये गये। १४.७४ प्रतिशत बच्चों का वजन सामान्य से कम तथा ३.८४ प्रतिशत बच्चें गंभीर कम वजन में पाये गये। मगरलोड विकासखण्ड में ६२७९ बच्चों का वजन लिया गया जिसमें ६९.२१ प्रतिशत बच्चे सामान्य वजन वाले तथा २५.२० प्रतिशत बच्चें मध्यम वजन में पाये गये। ५.५९ प्रतिशत बच्चे निम्न वजन वाले पाये गये। धमतरी शहरी में ३७५२ बच्चों में से ७८.८४ प्रतिशत बच्चें सामान्य वजन वाले तथा १७.४६ प्रतिशत बच्चें मध्यम वजन पाये गये। ३.७० प्रतिशत बच्चों का वजन निम्न पाया गया । अध्ययन से स्पष्ट है, कि सर्वाधिक ५.५९ प्रतिशत कुपोषित बच्चे मगरलोड विकासखण्ड में पाये गये।

तालिका १.३ धमतरी जिले में ०३.०६ वर्ष के बच्चों की संख्या

विकासखण्ड	धमतरी (ग्रामीण)	नगरी	मगरलोड	कुरूद	धमतरी (शहरी)	योग
अवलोकित	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
नामांकित	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तालिका में ०३.०६ वर्ष के २९,३९८ बच्चों को अवलोकित किया गया जिसमें २५८८३ बच्चों को वजन त्यौहार में नामांकित किया गया । धमतरी ग्रामीण में ८७.३ प्रतिशत बच्चों को वजन त्यौहार में शामिल किया गया। नगरी में ९९.१ प्रतिशत बच्चों को वजन त्यौहार में शामिल किया गया। मगरलोड में ९८.९ प्रतिशत बच्चों को वजन त्यौहार में शामिल किया गया। कुरूद में ७९.२ प्रतिशत बच्चों को वजन त्यौहार में शामिल किया गया। धमतरी शहरी में ५१.१ प्रतिशत बच्चों को वजन त्यौहार में शामिल किया गया।

तालिका १.४ धमतरी विकासखण्ड में ०३.०६ वर्ष के बच्चों की संख्या

विकासखण्ड	वजन किये गये बच्चों की संख्या	सामान्य वजन	मध्यम वजन	गंभीर वजन
धमतरी (ग्रामीण)	5873	87.86	10.11	2.03
नगरी	5713	84.45	13.94	1.61
मगरलोड	4257	65.91	29.18	4.91
कुरूद	7217	79.43	17.81	2.76
धमतरी (शहरी)	2230	75.96	20.45	3.58
योग	25300	79.96	17.24	2.80

चित्र क्रमांक १.४ धमतरी जिले में ०३ वर्ष से ०६ वर्ष के बच्चों की स्थिति

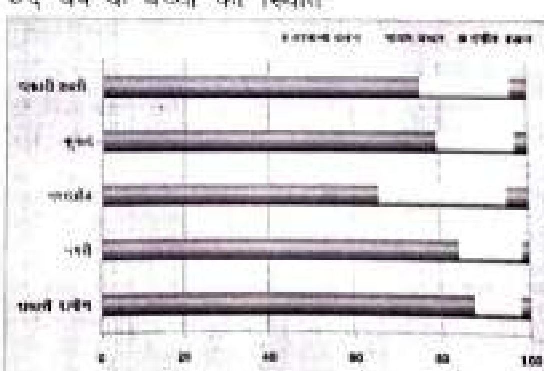

तालिका के अध्ययन में पाया गया कि ध मतरी ग्रामीण में ५८७३ बच्चों में से ८७.८६ प्रतिशत बच्चों का वजन सामान्य पाया गया १०.११ प्रतिशत बच्चे मध्यम वजन वाले तथा २.०३ प्रतिशत बच्चें गंभीर कुपोषण से ग्रसित पाये गये। नगरी विकासखण्ड में ५७२३ बच्चों में ८४.४५ प्रतिशत बच्चे सामान्य वजन १३.९४ बच्चें मध यम वजन तथा १.६१ प्रतिशत बच्चों का वजन निम्न श्रेणी पाया गया। मगरलोड में ४२५७ बच्चों में से ६५.९१ प्रतिशत बच्चे सामान्य वजन पाये गये। २९.१८ प्रतिशत बच्चें मध्यम वजन तथा ४.९१ प्रतिशत बच्चें गंभीर कुपोषित पाये गये। कुरूद विकासखण्ड में ७२१७ बच्चों में ७९.४९ प्रतिशत बच्चें सामान्य वजन के पाये गये। १७.६१ प्रतिशत बच्चें मध्यम वजन तथा २.९० प्रतिशत बच्चें निम्न वजन पाये गये। धमतरी शहरी में २२३० बच्चों में से ७५.९६ प्रतिशत बच्चें सामान्य वजन तथा २०.४५ प्रतिशत बच्चें मध्यम वजन के तथा ३.५९ प्रतिशत बच्चें निम्न वजन वाले पाये गये।

निष्कर्ष :—

१. धमतरी जिले में ०.०३ वर्ष के बच्चों में ८१ प्रतिशत बच्चे सामान्य वजन के पाये गये। ०३.०६ वर्ष के बच्चों में ८० प्रतिशत बच्चें सामान्य वजन के पाये गये।

२. धमतरी जिले में ०.३ वर्ष के १५ प्रतिशत बच्चें मध्यम वजन में पाये गये तथा ०३.०६ वर्ष के १७ प्रतिशत बच्चें मध्यम वजन में पाये गये।

३. धमतरी जिले में ०.३ वर्ष के ३.६ प्रतिशत बच्चें गंभीर कुपोषित तथा ०३.०६ वर्ष के २.८ प्रतिशत बच्चें गंभीर कुपोषण से ग्रसित पाये गये।

४. धमतरी जिलें में ०.३ वर्ष के बच्चों की अपेक्षा ३.०६ वर्ष के बच्चें मध्यम वजन पाये गये।

५. धमतरी जिलें में ०३.०६ वर्ष के बच्चों की अपेक्षा ०.०३ वर्ष के बच्चे अत्यधिक गंभीर कुपोषित पाये गये।

६. अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि जिले में ०.६ वर्ष के बच्चों में से ०.०३ वर्ष के बच्चो मे गंभीर कुपोषण पाया गया है तथा मध्यम वजन में ०३.०६ वर्ष के बच्चे कुपोषण से ग्रसित पाये गये।

सुझाव :—

१. जन्म के तुरंत अथवा एक घण्टे के अन्दर समय से स्तनपान कराना इससे नवजात शिशु, मृत्युदर रूग्णता रोकथाम में मदद मिलती हैं। कोल्सट्रम (Colostrum) जो कि गाढ़ा पीला दुध होता हैं एवं प्रसव के बाद तीन से पांच दिनों तक आता है यह पोषक तत्वों से भरपूर होता है जो बच्चें को रोगप्रतिरोधकता प्रदान करता है।

२. शारीरिक सम्पर्क माता व नवजात के बीच संबंध घनिष्ठ करता हैं और बच्चें को गर्म रखता हैं। यह दूध निर्माण को प्रेरित करता हैं एवं दूध के बहाव को बढ़ाता हैं। कम वजन वाले बच्चों की पहचान करके घर पर बेहतर देखभाल और संतुलित आहार देना चाहिए।

३. कम वजन की गंभीर स्थिति वाले बच्चों की पहचान करना जिन्हें इलाज से संबंधित देखरेख की आवश्यकता होती हैं, तुरंत पोषण पुर्नवास केन्द्र में ले जाना चाहिए।

४. वजन में कमी या वृध्दि के अभाव के कारणों की पहचान करके जैसे कि दस्त, तेज सांस का संक्रमण ,मलेरिया जैसी बीमारियां उत्पन्न होती हैं।

५. मां द्वारा कम भोजन लेने पर उन्हें अधिक भोजन लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

६. मां और परिवार के लोगों के साथ समाज में पोषण शिक्षा कार्यक्रम को अधिक उपयोगी बनाने व परामर्श देते हुए समुचित व समय पर कार्यवाही करने समझाना।

संदर्भ :—

१. कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका अक्टुबर माह, २००८, पृ.न. ५५।

२. मिश्रा उषा एवं अग्रवाल अलका "स्वास्थ्य रक्षा एवं शरीर विज्ञान" साहित्य भवन प्रकाशन आगरा।

३. डॉ. खत्री एच.एल. एवं डॉ. लता सूमन "स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा भाग –१ "पारागौन अन्तर्राष्ट्रीय पब्लिकेशन्स।

४. " समुदाय के लिए पोषण " गुल्लीबाबा पब्लिशिंग हाऊस न्यू दिल्ली।

५. "मां और बच्चें के लिए पोषण" राष्ट्रीय पोषण संस्थान हैदराबाद।

❑❑❑

UGC Approved
Refereed Journal
UGC
Jr.No.43053

ISSN 2394-5303

International Multidisciplinary Research Journal
Issue-31, Vol-03, July 2017

Printing Area

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 4.002(IIJIF) | Printing Area International Research journal | July 2017 Issue-31, Vol-03 | 01

UGC Approved Jr.No.43053

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

July 2017, Issue-31, Vol-03

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

28) मराठी नियतकालिकांचे प्रबोधनातील योगदान || 127
डॉ. भाऊसाहेब दादासाहेब गव्हाणे, जि.पुणे

29) कृषी पर्यटन : ग्रामीण अर्थव्यवस्थेचा कणा || 130
डॉ. वाल्मिक दगडू परहर, जि. रत्नागिरी.

30) नक्षलवादाची ५० वर्षे व भारताची अंतर्गत सुरक्षा || 133
डॉ. बी. डी. तोडकर

31) अठरा कारखाने व बारा महालांचे स्वराज्याच्या प्रशासनातील महत्व : एक ऐतिहासिक अध्ययन || 140
कु. दुर्गा यावले, नागपूर

32) भारतीय मध्यवर्ग का सांस्कृतिक विश्लेषण || 144
महेन्द्र कुमार कुशवाहा, म.प्र.

33) मन के डॉक्टर है संत !!! || 148
डॉ. सुनील गुलाबसिंग जाधव, नांदेड

34) विद्यासागर नौटियाल के साहित्य में उत्तराखण्ड का राजनैतिक स्वरूप || 151
सविता मैठाणी, श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड

35) प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों द्वारा दृश्य–श्रव्य संचार माध्यमों का उपयोग || 156
राजेश, डॉ. माधवीलता दुबे, भोपाल म.प्र.

36) मीराबाई के काव्य में स्त्री–चेतना के स्वर || 159
कृष्णा राणा, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

37) बॉलीवुड फिल्में सामाजिक परिवर्तन व संस्कृति की लोकदूत || 162
रेखा रानी, सिरसा

38) पंचायतीय राज में महिलाओं की सहभागिता एवं जागरूकता की भूमिका का एक समाजशास्त्रीय . || 165
कु. सरिता, अल्मोड़ा

39) स्वरयोग : एक विवेचन || 169
डॉ. नीलम श्रीवास्तव, अमरकंटक

40) उपभोक्ता का अधिकार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन || 172
डॉ. प्रभा वेरूलकर, धमतरी (छ.ग.)

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

40

उपभोक्ता का अधिकार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. प्रभा वेरूलकर
प्राध्यापक राजनीति विज्ञान,
बी.सी.एस. शासकीय स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय धमतरी (छ.ग.)

****

प्राचीनकाल में वस्तुओं का आदान–प्रदान करके व्यापार होता था। इस प्रकार के व्यापार में बेईमानी नहीं होती थी, क्योंकि एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेनी होती थी, परन्तु धीरे–धीरे समय बदलता गया। जनसंख्या बढ़ने की वजह से वस्तुओं के लेनदेन की प्रकिया बंद होकर, वस्तुओं के खरीदने की प्रथा शुरू हुई और इसी वस्तु के खरीदने–बेचने की वजह से उपभोक्ता शब्द की उत्पति हुई। ऐसा कोई भी व्यक्ति जो वस्तुएं व सेवाएँ खरीदता व उनका उपयोग करता है, उपभोक्ता कहलाता है। हम अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का क्रय करते रहते हैं। वहीं दूसरी ओर पूरा बाजार नकली व मिलावटी वस्तुओं से भरा पड़ा है। इसी प्रकार उत्पादकों व निर्माताओं द्वारा भ्रामक विज्ञापन, खरीदी के साथ मुफ्त, इनामों और प्रतियोगिताओं के दौर में उपभोक्ताओं को अनको बार वस्तुओं की खरीदी में चयन करते समय समस्याएं आती है साथ ही कई बार लुभावने विज्ञापन देखकर बिना गुणवत्ता वाली वस्तुएं भी हम खरीद लेते है। ऐसे समय में जब ग्राहक को गलत वस्तु दे दी जाती है, तब ग्राहक अकेला होने के कारण दुकानदार का विरोध नहीं कर पाता।

आज जहाँ एक ओर व्यापार में प्रगति हो रहीं है, वहीं दूसरी ओर इनामों और प्रतियोगिताओं के झूठे चक्कर में फंसकर आए दिन ग्राहक लुटता रहता है। इसके अतिरिक्त वस्तुओं के निर्माण में सुरक्षा मानकों का पालन न किया जाना, बड़े–बड़े होर्डिग्स के द्वारा ग्राहकों को ललचाकर अपने जाल में फँसाना व्यापारियों की एक आम प्रवृति बन गई है परन्तु आज उपभोक्ता पूर्व की भांति उतना असमर्थ और असुरक्षित भी नहीं है। ऐसे कानून बन चुके है जो एक ओर उपभोक्ता को अधिकार प्रदान करते है और दूसरी ओर उत्पादकों और निर्माताओं पर उत्तरदायित्व भी लगाते है। वास्तव में उपभोक्ता को यह अधिकार उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम द्वारा प्राप्त हुए है। इसी को सुनिश्चित करने के लिए उपभोक्ता का अधिकार एक विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता व महत्व :—

हर उपभोक्ता अपनी खरीदी वस्तुओं व सेवाओं को खरी गुणवत्ता चाहता है। यदि उसके द्वारा खरीदा हुआ सामान एक विशेष गुणवत्ता के मानक के अनुरूप न हो तो वह अपनी शिकायत के निवारण के लिए तरीके अपना सकता है। इसके पहले 'केविएट एम्पटर' का सिद्धान्त अर्थात् खरीददार स्वंय सावधान रहे का सिद्धान्त प्रचलित था। वैश्वीकरण व खुली–प्रतियोगिता से अब उपभोक्ताओं को बहुत प्रकार के सामान चयन के मौके उपलब्ध हुए है, किन्तु इसका एक और पक्ष भी है उत्पादक व विक्रेता अपने सामानों के बारे में बढ़ा–चढ़ाकर किए गए दावों व के प्रचार के चमकदार उपायों द्वारा उपभोक्ताओं को लुभाने के प्रयास भी करते है। ऐसी स्थिति में उपभोक्ता के लिए अपनी खरीदी वस्तुओं व सेवाओं के बारे में विश्वस्त जानकारी के आधार पर चयन करना कठिन हो जाता है, परन्तु अब धीरे–धीरे उपभोक्ता जागरूक हो रहे है, खरीदी वस्तु यदि उनकी अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं होती, तो वे अपनी शिकायत के निवारण को आशा रखते है।

अध्ययन का उद्देश्य :—

उपभोक्ता असंतोष के निरन्तर बढ़ने से उपभोक्ताओं के हित में शीघ्र व अधिक प्रभावी शिकायत निवारण के उपायों को आवश्यकता महसूस की गई। इस प्रकार के व्यापक उपभोक्ता अधिकार संबंधी कानून की पृष्ठभूमि १९३२ को डोनेहा बनाम स्टीवेंसन मामले ने तैयार की। स्काटलैंड की लार्ड–सभा में चले इस प्रसिद्ध मुकदमें में एक महिला ने अदरक के बीयर

Scanned with CamScanner

(शराब) बनाने वाले निर्माता के विरूद्ध बीयर की बोतल की तली में एक सड़ा केंचुआ पाए जाने पर दावा किया था। न्यायालय ने किसी वस्तु के निर्माता को उस वस्तु की गुणवत्ता के लिए उत्तरदायी ठहराया। इस प्रकार 'उपभोक्ता स्वंय चौकस रहे' की धारणा उक्त न्यायालय कानून के निर्णय से बदल गयी व उसके स्थान पर उपभोक्ता कानून की नींव पड़ी। उपभोक्ता संरक्षण का सिद्धांत १९३२ के उक्त निर्णय के बाद भारत सहित अनेकों देशो में व्यापक रूप से अपनाया गया। परन्तु समयानुसार उपभोक्ता की शिकायतें बढ़ती चली गयीं। इसीलिए एक ओर उपभोक्ता में बढ़ते असंतोष को संबोधित करने की आवश्यकता व दूसरी ओर संयुक्त राष्ट्र के दिशा–निर्देशन के अनुरूप १९८६ में भारत में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम पारित किया गया।

उपभोक्ता कौन है :—

उपभोक्ता में उन व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया तथा जो स्वंय के उपयोग या उपभोग के लिए वस्तु वैध प्रतिफल के भुगतान पर क्रय करते है यह क्रय प्रतिफल के भुगतान के वचन या किराया पद्धति के रूप में भी हो सकता था। पूर्ववर्ती अधिनियम (१९८६ के अधिनियम) के अंतर्गत वे व्यक्ति जो व्यापारिक उद्देश्य से या लाभ कमाने के उद्देश्य से किसी वस्तु का क्रय करते है या सेवा प्राप्त करते है उन्हे उपभोक्ता नही माना गया था। उससे उन व्यक्तियों को उपभोक्ता संरक्षण में उपचार प्राप्त नहीं होता था जो स्वंय रोजगार के माध्यम से उपजीविका अर्जित करने हेतु वस्तु (टेम्पो–मिनी बस) को क्रय करते थे या सेवा, शुल्क देकर प्राप्त करते थे. सन् १९९३ में इस अधिनियम में किए गए संशोधन द्वारा उन व्यक्तियों को भी उपभोक्ता की परिभाषा में सम्मिलित किया गया जो स्वरोजगार के माध्यम से आजीविका अर्जित करने के उद्देश्य से किसी वस्तु का क्रय करते है या शुल्क देकर कोई सेवा लेते है।

उपभोक्ता विवादों (परिवादों) के निपटारे हेतु अधिनियम के अंतर्गत गठित किये जाने वाले अभिकरण :—

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, १९८६ उपभोक्ता विवादों को निपटाने हेतु तीन स्तर पर विभिन्न अभिकरणों की स्थापना का प्रावधान करता है। सन् १९९३ में संशोधन द्वारा इन अभिकरणों के आर्थिक क्षेत्राधिकार में वृद्धि की गई जो वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यक थी। इस अधिनियम का अध्याय ३ की धारा ९ जिला स्तर पर जिला फोरम (मंच), राज्य स्तर पर राज्य आयोग तथा अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रीय आयोग के गठन का प्रावधान करता है। राज्य सरकार अधिसूचना जारी करके राज्य के प्रत्येक जिले में जिला फोरम की स्थापना कर सकती है।

सुझाव :—

इस प्रकार हम पाते है कि सन् १९९३ के संशोधन के पश्चात् उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम अपने आप मे एक पूर्ण अधिनियम है। इसमें उन सभी प्रावधानों को सम्मिलित किया गया है जो उपभोक्ता हितों के संरक्षण तथा उपभोक्ता को उपचार प्रदान करने के लिए आवश्यक थे।

परन्तु इस दिशा में अभी काफी कुछ किया जाना शेष है—

१) यद्यपि अधिनियम में मान्यता प्राप्त स्वंय सेवा संस्थाओं को उपभोक्ता विवाद दाखिल करने का अधिकार दे दिया गया है परन्तु दिल्ली, बम्बई, मद्रास, जयपुर, कलकत्ता आदि बड़े शहरों को छोड़कार ऐसे स्वंयसेवी संगठनों की उपस्थिति नाम मात्र की भी नहीं है। सरकार यदि इन स्वंय सेवी उपभोक्ता संरक्षण परिषदों को वित्तीय सहायता प्रदान करने का निर्णय ले तो नि:शुल्क कानून सलाह समिति की भांति इस क्षेत्र में भी स्वंय सेवी संगठन स्थापित होंगे।

२) हमारे देश में उपभोक्ता चेतना छोटे शहरों में नही के बराबर है अत: आवश्कता इस बात की है कि सस्ती एवं छोटी–छोटी पुस्तकों का प्रकाशन करके उन्हें उपभोक्ताओं में वितरित किया जाय जिससे उपभोक्ताओं को यह पता चले कि उनकी शिकायतो को कम खर्च तथा कम विलम्ब से निपटाने के उपाय भी है। छोटे–छोटे शहरों तथा कस्बों में अधिकांश लोगों को यह भी पता नही है कि ऐसा भी कोई अधिनियम है जिसमें उपभोक्ता शिकायतों को निपटाये जाने के प्राविधान के अंतर्गत उपभोक्ता विवाद निस्तारण

Scanned with CamScanner

अधिकरण की स्थापना हुई है। अत: आवश्यकता इस बात की है कि अधिक से अधिक उपभोक्ताओं तक सूचनाओं को पहुँचाया जाय। ऐसा नुक्कड़ सभाओं के माध्यम से या पठनीय सामग्री उपलब्ध कराकर किया जा सकता है।

३) कई ऐसे क्षेत्र है जहां इस अधिनियम का लागू किया जाना शेष है। जैसे सरकारी अस्पताल, ग्राम पंचायत तथा नगर निगम। चूंकि ये संस्थाएं करदाताओं के कर से संचालित होती है। अत: उन्हें उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की परिधि से बाहर रखा गया है जबकि वास्तविक स्थिति यह है कि आम उपभोक्ता जो सम्पन्न नहीं है वह इन्हीं संस्थाओं से अधिक व्यथित होता है।

निष्कर्ष :—

इस प्रकार उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम १९८६ का लाभ अधिकाधिक लोगों तक पहूँचाने के लिए आवश्यक है कि उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के बारे में जानकारी दी जाए तथा उन्हें घटिया उत्पादों तथा घटिया खाद्य सामग्रियों से संबंधित परिवाद करते हेतु प्रोत्साहित किया जाय अत: आवश्यक है कि उपभोक्ता को न केवल अपने अधिकारो का ज्ञान होना चाहिए बल्कि उनका उपयोग भी करना चाहिए तभी वास्तविक रूप से उपभोक्ताओं को सुरक्षा व सफलता प्राप्त हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ.

१. मानवाधिकार — हरीश कुमार खत्री
२. पॉलिटिक्स एण्ड लॉ टाइम्स

❑❑❑

Scanned with CamScanner

Certificate of Publication

This is to certify that

Prof./Dr. ANJU KUMARI

has contributed a paper as author/ Co-author to

ISSN No: 2249-555X
IMPACT FACTOR: 3.6241

INDIAN JOURNAL OF APPLIED RESEARCH

Title " BAL JIVAN BIMA YOJNAO KI PRAGATI (BHARTIY JIVAN BIMA NIGAM KE RAIPUR MANDAL KARYALAY KE SANDARBH ME) "

and has got published in volume 05, Issue 10, October - 2015

The Editor in Chief & The Editorial Board appreciate the Intellectual Contribution of the author/co-author

Executive Editor | Editor in Chief | Member, Editorial Board

Scanned with CamScanner

RESEARCH PAPER | Commerce | Volume : 5 | Issue : 10 | October 2015 | ISSN - 2249-555X

Bal Jivan Bima Yojnao ki Pragati (Bhartiy Jivan Bima Nigam Ke Raipur Mandal Karyalay Ke Sandarbh Me)

बाल जीवन बीमा योजनाओं की प्रगति
(भारतीय जीवन बीमा निगम के रायपुर मण्डल कार्यालय के संदर्भ में)

KEYWORDS

Anju Kumari

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, (छ.ग.) सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), साईं महाविद्यालय, सेक्टर-6, भिलाई (छ.ग.) पिन न. -490006

Dr. Chandrasekhar CHAWBEY

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, (छ.ग.) प्राचार्य, बी.सी.एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धमतरी (छ.ग.)

ABSTRACT प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय जीवन बीमा निगम के रायपुर मण्डल कार्यालय के संदर्भ में बाल जीवन बीमा योजनाओं की प्रगति पर आधारित है। भारतीय जीवन बीमा निगम में बाल जीवन बीमा योजनाओं का 15 प्रतिशत योगदान है क्योंकि बाल जीवन बीमा का क्षेत्र अभी संकुचित है। परन्तु भारतीय जीवन बीमा निगम के निरंतर प्रयास से इसकी गुणात्मक प्रगति बढ़ती जा रही है। बाल जीवन बीमा के माध्यम से माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य की अनिश्चितताओं से निश्चित हो रहे हैं। जहाँ भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा बाल जीवन बीमा की नई-नई योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। वहीं इस क्षेत्र में नीजि कंपनियाँ भी पीछे नहीं है। परन्तु भारतीय जीवन बीमा निगम जैसा विशाल संगठनात्मक ढाँचा तैयार करने में नवीन बीमा कम्पनियों को कई वर्षों का संघर्ष करना पड़ेगा।

हम जिस सामाजिक ढांचे में रहते है उसमें अभी वर्तमान में गहरे परिवर्तन हुये है। आज बीमा में निवेश करते समय लोग न केवल सुरक्षा चाहते हैं बल्कि वे, इस की कमाई पर अच्छा प्रतिलाभ चाहते हैं जिससे वे अपने बच्चों की शिक्षा व विवाह के लिए बेहतर प्रावधान कर सकें। भारतीय जीवन बीमा निगम ने अपने व्यवसाय में बाल बीमा योजनाओं को विशेष महत्व दिया है। विभिन्न पॉलिसियों के माध्यम से निगम इन सब योजनाओं को संचालित कर रहा है जो माता-पिता को अपने बच्चों के भविष्य के लिए होने वाली चिंताओं से मुक्त कर रहा है।

समाज में बच्चों की उच्चतम शिक्षा को लेकर जो चिंतायें बनी रहती है उन समस्याओं का निदान हो रहा है साथ ही समाज में शिक्षित बच्चों की संख्या में वृद्धि हो रही है क्योंकि बाल बीमा योजनाओं के आसान प्रीमियम भुगतान से मध्यम वर्ग के लोग भी अपनी बचत व्यवस्था का प्रावधान आसानी से कर पा रहे हैं।

बाल जीवन बीमा की योजनायें शिक्षा के साथ-साथ विवाह में होने वाले खर्चों का भी निवारण करती है, प्रीमियम के हिसाब से हर वर्ग के लोगों के लिए बाल जीवन बीमा योजनायें उपलब्ध है। जीवन बीमा ने ग्रामीण, निर्धन बच्चों के लिए भी बहुत सी योजनायें उपलब्ध कराती है। जो समाज को एक उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ है। ग्रामीण बच्चों के 9वी से 12वी तक पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति के रूप में 100 रूपये प्रति बच्चा दिया जाता है अधिकतम दो बच्चों को। वित्तीय वर्ष 2009-10 के दौरान 86905 बच्चों को 4.15 करोड़ राशि दी जा चुकी है जो कि समाज की सुरक्षा में सराहनीय योगदान रहा है। बाल जीवन बीमा योजनाओं के क्रियान्वयन से गरीब से गरीब बच्चों को छात्रवृत्ति की सुविधा
प्रदान की गई साथ ही शिक्षा ऋण की व्यवस्था का भी प्रावधान बनाया गया जो एक विकासशील समाज को विकसित करने में सहायक है जो लोग अपने बच्चों को आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण उनके भविष्य को सही दिशा नहीं दे पाते थे आज वे इन योजनाओं के कारण अपने बच्चों के भविष्य को सही दिशा-निर्देश दे पा रहे है जिससे समाज में एक नई विकास का आरंभ हो रहा है।

बाल जीवन बीमा योजनाओं के प्रारंभ होने से समाज में बच्चों की सुरक्षा, शिक्षा, विवाह के क्षेत्र मजबूत और सबल हुआ ये सब कल्याणकारी योजनाओं के कारण संभव हुआ है इन योजनाओं के माध्यम से बच्चों के भविष्य को उनके माता-पिता के द्वारा सुरक्षित किया जा सका है।

1979 का साल अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के रूप में मनाया गया। इस संदर्भ में बीमा निगम ने बच्चों के लाभ हेतु नई योजना तैयार की। इस बीमा पत्र को बालक के माता-पिता या कोई भी संरक्षक ले सकता है। इसकी अधिकतम अवधि 50 वर्ष की होगी व न्यूनतम प्रीमियम देय राशि 250 रूपये से कम नहीं होगी। प्रीमियम केवल वार्षिक ही जमा होगी। 4 वर्ष से कम की अवधि के लिए यह पॉलिसी नहीं दी जायेगी।

बाल जीवन बीमा के प्रकार :

भारतीय जीवन बीमा निगम ने अपने व्यवसाय में बाल जीवन बीमा योजनाओं को विशेष महत्व दिया है। विभिन्न प्रकार की पॉलिसियों के माध्यम से निगम इन सब योजनाओं को संचालित कर रहा है। यह योजनाएँ बच्चों की शिक्षा बच्चों के विवाह एवं पूंजी बाजार से संबंधित है। बच्चों के भविष्य को ध्यान में रखकर संचालित की जाने वाली योजनाएँ बच्चों तथा इनके माता-पिता को आर्थिक चिंताओं से मुक्ति प्रदान करते हैं ये योजनाएँ निम्नलिखित है :-

क्रमांक	पॉलिसियों के नाम	तालिका नंबर
1	जीवन किशोर	102
2	जीवन छाया	103
3	कोमल जीवन	159
4	जीवन तरंग	178
5	मनी प्लस	180
6	बंदोबस्ती योजना	14
7	धन वापसी योजना	75/20
8	विवाह बंदोबस्ती योजना	90
9	जीवन सुरभी	106
10	बीमा निवेश योजना	171
11	बीमा बचत योजना	175
12	बीमा गोल्ड	179

अध्ययन का उद्देश्य :

1. बाल जीवन बीमा योजनाओं का अध्ययन करना।
2. जीवन बीमा निगम में बाल जीवन बीमा योजनाओं के योगदान को जानना
3. रायपुर मण्डल में संचालित बाल जीवन बीमा योजनाओं की संख्यागत प्रगति को जानना
4. बाल जीवन बीमा योजनाओं के सामाजिक प्रभाव को जानना
5. सबसे लोकप्रिय बाल जीवन बीमा योजनाओं का अध्ययन करना एवं समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव देना।

अध्ययन की परिकल्पना :

1. वर्तमान समय में बाल जीवन बीमा निगम की प्रगति और संभावनायें क्या हैं?
2. छोटी उम्र के बच्चे जिनके वयस्क होते ही किसी भी उद्देश्य की पूर्ति के लिये एक मुश्त राशि की आवश्यकता माता-पिता को महसूस कराते हैं।
3. जीवन बीमा निगम द्वारा जारी बाल योजनायें वर्तमान में लोकप्रियता की चरम सीमा पर है।
4. बाल योजनायें बच्चों के सुरक्षित भविष्य के लिये एक अनिवार्यता बन गई है।
5. बाल जीवन बीमा योजनायें बचत के साथ-साथ विनियोग एवं अन्य परिस्थितियों में एक त्रिविध सुरक्षा की गारंटी होती है।
6. जीवन बीमा का कुल व्यवसाय का लगभग 15 प्रतिशत बाल जीवन बीमा योजनाओं का है।

अध्ययन का क्षेत्र व अवधि :

अध्ययन का क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले में स्थित भारतीय जीवन बीमा

Scanned with CamScanner

Volume : 5 | Issue : 10 | October 2015 | ISSN - 2249-555X

निगम के मण्डल कार्यालय, रायपुर को लिया गया है। एवं अवधि वर्ष 2009-10 से 2013-14 को चयनित किया गया है।

रायपुर मण्डल में संचालित बाल बीमा योजनाओं की गुणात्मक प्रगति :

रायपुर मण्डल में संचालित बाल जीवन बीमा योजना की गुणात्मक प्रगति से आशय यह सुनिश्चित हो गया है कि लोग अपने बच्चों के भविष्य को लेकर अत्यंत जागरूक हो चुके हैं जिस कारण रायपुर मण्डल में बिकने वाली बाल जीवन बीमा पॉलिसियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है जो बच्चों के उज्ज्वल भविष्य को प्रगति की ओर ले जा रही है रायपुर मण्डल में बाल जीवन बीमा योजनाओं की भिन्न-भिन्न पॉलिसियों अलग-अलग प्रीमियम के आधार पर विक्रय की जाती है, जो दिन-प्रतिदिन गुणात्मक प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है। रायपुर जिला सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर है जिस कारण यहाँ का शैक्षणिक स्तर भी बढ़ता जा रहा है, बाल बीमा पॉलिसियों के द्वारा बच्चों को उत्तम से उत्तम शिक्षा आसानी से दिलाई जा सकती है इस सुविधा का लाभ हर वर्ग के लोग अत्यंत आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, अपनी आय के अनुसार बच्चों की शिक्षा से लेकर उनके विवाह तक की चिंता अब बाल बीमा पॉलिसी ने सुनिश्चित रूप से दूर कर दी है यही कारण है कि बाल जीवन बीमा पॉलिसियाँ अपने गुणात्मक शिखर की ओर अग्रसर है।

तालिका क्र. 01

रायपुर मण्डल में गुणात्मक प्रगति बाल जीवन बीमा योजनाओं की एक नजर में (विक्रीत पॉलिसियाँ)

क्र.	पॉलिसियों के नाम	तालिका	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2013.14
1	जीवन किशोर	102	2000	2600	2651	2347	1920	1920
2	जीवन छाया	103	5080	5980	5987	5068	26.666	26.666
3	जीवन सुरभि - 15	106	2050	2500	2644	2201	1129	1129
4	जीवन सुरभि - 20	107	1775	2275	2279	1770	756	756
5	जीवन सुरभि - 25	108	345	445	491	550	388	388
6	कोमल जीवन	159	1400	1900	1902	1303	1198	1198
7	बीमा निवेश 2005	171	175	400	406	533	519	519
8	बीमा बचत	175	6850	3750	7357	9233	8,503	8,503
9	जीवन तरंग	178	3400	4400	4450	5138	6491	6491
10	नई बीमा गोल्ड	179	34910	38910	38953	40046	48586	48586
11	चाइल्ड करियर प्लान	184	250	700	734	609	581	581
12	चाइल्ड फ्यूचर प्लान	185	360	810	832	757	730	730

स्रोत- भारतीय जीवन बीमा निगम मण्डल कार्यालय, रायपुर

रायपुर मण्डल में गुणात्मक प्रगति बाल बीमा योजनाओं के आधार पर (सबसे अधिक विक्रय की गई पॉलिसी)

नई बीमा गोल्ड :

नई बीमा गोल्ड योजना का प्रारंभ नये प्रावधानों के साथ 04.09.2006 से प्रारंभ किया गया । इस बीमा अवधि में कभी भी मृत्यु होने पर मूल बीमाधन नामित व्यक्ति को दे दिया जायेगा। परिपक्वता के पश्चात्, बिना प्रीमियम भुगतान बीमा अवधि एवं बीमाधन का 50 प्रतिशत जोखिम सुरक्षा का प्रावधान है। बीमा की न्यूनतम राशि 50,000 रुपये तथा न्यूनतम आयु 14 वर्ष पूर्ण 57 वर्ष में (12 वर्ष अवधि के लिए), 51 वर्ष (16 वर्ष अवधि के लिए), 45 वर्ष (20 वर्ष अवधि के लिए)।

तालिका क्र. 02

नई बीमा गोल्ड पॉलिसी

वर्ष	बीमा पत्रों की संख्या
2009-10	34910
2010-11	38910
2011-12	38953
2012-13	40046
2013-14	48586

स्रोत- भारतीय जीवन बीमा निगम मण्डल कार्यालय, रायपुर

नई बीमा गोल्ड पॉलिसी संख्या

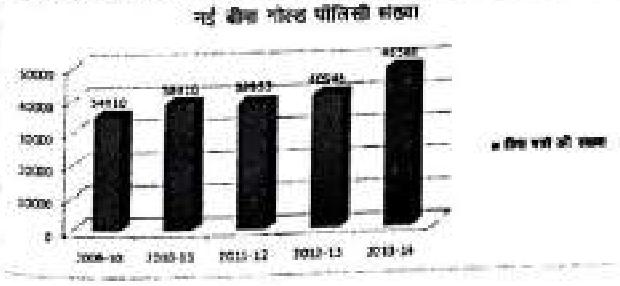

उपरोक्त तालिका के अनुसार "नई बीमा गोल्ड योजना" जो लगातार पांच वर्षों से अधिकतम संख्या में बिका। वर्ष 2009-10 में इसकी संख्या 34910 थी जो वर्ष 2010-11 में अपनी विशेषताओं के कारण बढ़कर 38910 हो गई आने वाले वर्षों में इसकी संख्याओं में वृद्धि होती चली गई और वर्ष 2011-12 में यह 38953 हो गई। इसी प्रकार यह पॉलिसी 2012-13 में बढ़कर 40046 एवं 2013-14 में बढ़कर 48586 हो गई जो रायपुर मण्डल में गुणात्मक प्रगति को दर्शाता है।

आर्थिक प्रगति के स्रोत :

बाल जीवन बीमा योजना ने अपनी विशेषताओं और प्रीमियम भुगतान की सुविधाओं के कारण आर्थिक प्रगति के क्षेत्र में आगे बढ़ता जा रहा है। पहले लोग सिर्फ जीवन बीमा कराते थे पर बाल जीवन बीमा योजना के प्रारंभ होने से बीमा का क्षेत्र और विस्तृत हो गया जिससे बीमा के क्षेत्र में आर्थिक प्रगति सुनिश्चित होती जा रही है। बाल जीवन बीमा योजना के अंतर्गत दी जाने वाली योजनायें सभी वर्गों के अनुसार है जो आसान किश्तों में प्रीमियम का भुगतान किया जा सकता है। बीमा प्रीमियम राशि की उम्मीद पर आधारित होती है। रायपुर मण्डल में जीवन बीमा के साथ-साथ बाल बीमा योजनाओं के विक्रय से प्रीमियम की राशि में वृद्धि हो रही है। जो रायपुर मण्डल के आर्थिक प्रगति में एक सहायक योजना के रूप में कार्य कर रही है। जैसे-जैसे बाल जीवन बीमा योजना का प्रचार-प्रसार बढ़ता जा रहा है। बीमा निगम नई-नई योजनाओं को तैयार करने के प्रयास में लगी रहती है और हर वर्ष कुछ नई योजनाओं का शुभ आरम्भ होता है जो आर्थिक प्रगति में सहायक होती है।

तालिका क्र. 03

बाल बीमा योजना की आर्थिक प्रगति (प्रथम प्रीमियम के आधार पर)

वर्ष	प्रथम प्रीमियम की राशि	प्रतिशत वृद्धि
2009-10	610861412	00 (मान)
2010-11	711724697	16.512
2011-12	714977343	17.044
2012-13	914410574	49.692
2013-14	106.7583917	74.767

स्रोत- भारतीय जीवन बीमा निगम मण्डल कार्यालय, रायपुर

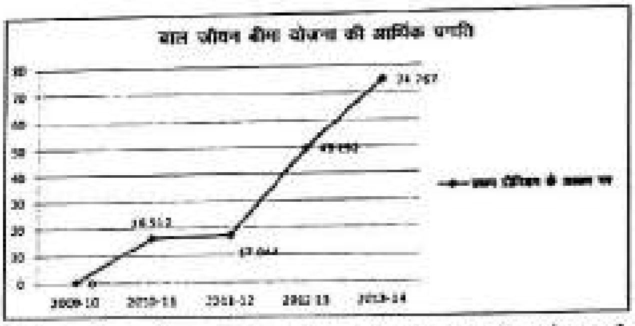

उपरोक्त तालिका के अनुसार रायपुर मण्डल में बाल जीवन बीमा योजना की आर्थिक प्रगति प्रीमियम वृद्धि के साथ बढ़ती जा रही है आर्थिक समृद्धि को बढ़ाने में वर्ष 2009-10 में इसकी प्रीमियम राशि 61,0861412 थी जो वर्ष 2010-11 में 16.512% के साथ बढ़कर 71,1724697 रुपये हो गई। वर्ष 2011-12 में प्रीमियम की राशि 17.044% से बढ़कर 714977343 हो गई। वर्ष 2012-13 में यह राशि 91,4410574 एवं प्रतिशत वृद्धि 49.692% हो गई रायपुर मण्डल से जुड़े शाखाओं में बाल जीवन बीमा योजना के विक्रय में वृद्धि हुई जिस कारण आर्थिक प्रगति में और अधिक तीव्रता आ गई वर्ष 2013-14 में 74.767% के साथ प्रीमियम की राशि बढ़कर 106,7583917 हो गई जो रायपुर मण्डल के लिये गर्व की बात है।

निष्कर्ष :

1. बाल जीवन बीमा का उचित विज्ञापन किया जाना चाहिए।
2. ऋण देने की सुविधा शाखा कार्यालय में प्रदान किया जाना चाहिए जिससे शिक्षा ऋण के लिए मण्डल कार्यालय का चक्कर न लगाना पड़े।
3. बाल जीवन बीमा धारक के द्वारा पॉलिसी बंद की सूचना तत्काल अधिकारी को प्रदान करनी चाहिए।
4. बाल जीवन बीमा पॉलिसी का न्यूनतम बीमा मूल्य कम लेना चाहिए ताकि आम आदमी भी उसे ले सके।
5. बाल जीवन बीमा योजनाओं को प्रीमियम की राशि को कम करना चाहिए।
6. बाल जीवन बीमा की अवधि समाप्त होने पर राशि का तत्काल भुगतान होना चाहिए।
7. प्रत्येक बाल जीवन बीमा धारक को बच्चों की शिक्षा के लिए ऋण देना चाहिए।
8. बाल जीवन बीमा योजना का क्षेत्र अभी सीमित है। इसके लिए नये क्षेत्रों को शामिल करते हुए नई योजनाओं का निर्माण करना चाहिए।
9. बाल जीवन बीमा योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुँचाने के लिये उन्नत माध्यम का प्रयोग करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Volume : 5 | Issue : 10 | October 2015 | ISSN - 2249-555X

REFERENCE • [illegible] 2006 • [illegible] 2012 • [illegible] 2013-14 • [illegible] www.icle.gov.in,www.lcindia.in

Scanned with CamScanner

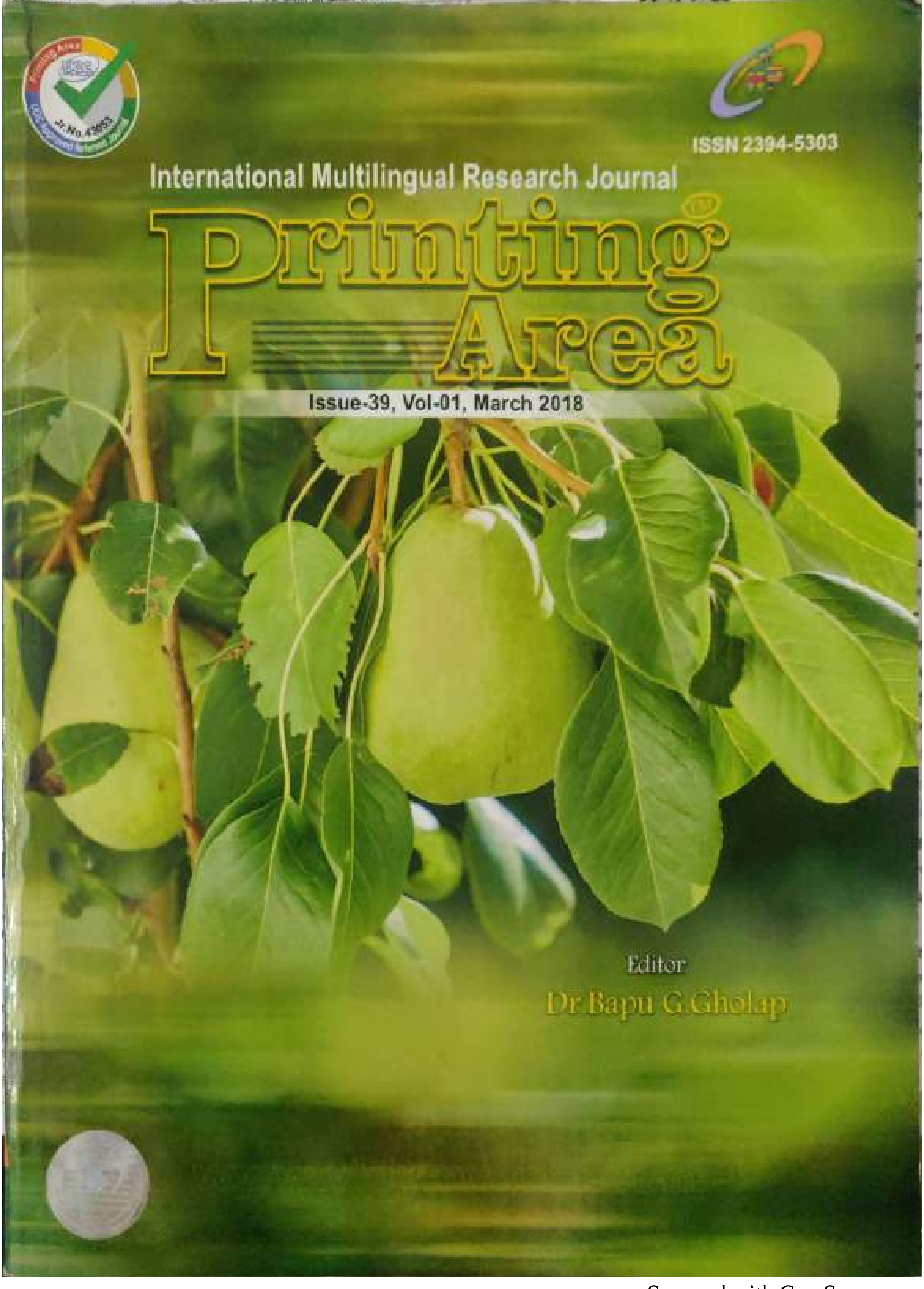

Scanned with CamScanner

DR. TAMESWARI SAHU

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

March 2018, Issue-39, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

Printing Area

Editorial Board & Advisory Committee

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arebia)
4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
8) Jubraj Khamari (Orissa)
9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
16) Tadvi Ajij (Jalgaon)
17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
18) Dr.Varma Anju (Gangatok)
19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bangal)
23) Dr.M.M.Joshi, (Nainital)
24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
25) Dr.Seema Sharma (Indor)
26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
27) Dr. Yallawad Rajkumar (Parli v.)
28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
30) Dr Watankar Jayshree
31) Dr. Saini Abhilasha
32) Dr. Prema Chopde (Nagpur)
33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
35)Dr. Pandey Piyush (Delhi)
36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
46) Dr. Chaudhari Ramakant (Ja

Indexed

UGC Approved Journal Jr.No.43053

IMPACT FACTOR 5.011 IIJIF

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at Beed (Maharashtr

http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

Index

01) Use of Libraries by Students In Aided Colleges In Tribal Areas of Maharashtra : A Study
Dr. Rashmi Shyamsundar Bakane, Kinwat Dist-Nanded || 10

02) Job Satisfaction of higher secondary teachers
Dr. Ritu Bhardwaj—Arti Sharma, Rajasthan || 12

03) DEMONETIZATION CONTROLLED TERRORISM? : PREDICTION & REALITY IN.....
Mr. Bharat Bapu Bichitkar, Barshi, M.S. || 15

04) Socio-economic Dimensions of Swachh Bharat Abhiyan: An Overview
Mrs. Shweta M Borkar, Bicholim, Goa. || 19

05) Impact of Demonetization on Indian Economy
Pramod Bhagwat Gadekar—Dr.D.B.Tanduljekar || 24

06) Solid Waste Management: Health & Social Needs of Bilaspur City (C.G)
Dr.(Smt) Garima Tiwari—Dr. Narendranath Guria, Chhatisgarh || 28

07) Five *Bhaavs* with special reference to *PaarinaamikBhaav* as the.....
Rajal Borundia Jain. V, Chennai, Tamil Nadu || 35

08) A Study of Career Maturity (Competency) in Relation to Self-Concept of....
Ms. Ravinder Pal Kaur—Dr. Indira Shukla, Mumbai || 41

09) DIGITAL PAYMENT SYSTEM
Dr P. N. Ladhe, Malkapur || 44

10) Keats's Aestheticism
Dr. Prakash. N. Meshram, Mulchera || 50

11) NARRATIVE STYLE & TECHNIQUE IN STORIES OF MANOJ DAS
Dr. Manas Ranjan Misra, Odisha (Ganjam) || 54

12) Study of the Utility of Activity Based Learning Material
Dr. (Mrs.) Madhuchanda Mukherjee, Jabalpur, (M.P.) || 58

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

13) AGRICULTURE AND NEW INFORMATION TECHNOLOGY
Dr. Yajnya Dutta Nayak, Berhampur || 64

14) Affirmative Action for Welfare of Women in India: A Step towards Gender Equality
Dr. Mamata Patra, Dhenkanal, Odisha || 69

15) Total Fertility Rate (TFR) in India reached at replacement levels: A Sign of....
Dr. K.Mary Sujatha— Ms.B.Freya Christina, A.P. || 73

16) Depiction of Mother & Daughter relation in Charles Dickens "Bleak House"
A. Varalakshmi—Dr. V. Sri Rama Murthy—Dr. V. B. Chitra || 76

17) SCOPE OF ONLINE QUICK SERVICE RESTAURANTS INDUSTRY IN INDIA
Sawitri Devi, Bahadurgarh (Haryana) || 79

18) Khalil Gibran's The Prophet: A Thematic Study
Dr. Md. Nurul Amin Sheikh, Dhubri, Assam || 82

19) दलीत आत्मचरीत्रे परिचय आणि प्रेरणा
प्रा.विनोद जगन्नाथ कांबळे, ता.पैठण, औरंगाबाद || 88

20) दहशतवाद : एक अभ्यास
प्रा. पवार बी. टी., शिरुर कासार जि.बीड. || 91

21) स्वतंत्र भारतातील कर रचना आणि जी.एस.टी चे महत्व
डॉ.संजय भा. तळतकर, गेवराई, बीड || 94

22) प्रौढ महिला विद्यालयात ऑनलाईन टीचिंगचे महत्त्व
बनाटे चंद्रमा सुधाकर, औरंगाबाद. || 99

23) भारतीय राज्यघटनेतील स्त्रीविषयक कायदे/ तरतुदी:-
जयश्री भावसार || 101

24) भारतातील कापुस उत्पादक शेतकऱ्यांच्या समस्या व उपाय योजना
प्रा. प्रफुल्ल ओ. कालोकार—प्रा. डॉ. नितिन बी. कावडकर || 103

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

25) नारदीय कीर्तनान्या माध्यमातून हिन्दुस्थानी शास्त्रीय संगीताचा प्रचार व प्रसार
डॉ. मुक्ता पी. महल्ले, अमरावती || 108

26) मनोहर सप्रे:व्यंगचित्रकला आस्वाद आणि चिकित्सा
श्री. हेमराज डी. निखाडे, नागपूर || 110

27) हिंदी साहित्य और अल्पसंख्यांक विमर्श (मुस्लिम समाज के संदर्भ में)
डॉ.सुनीता भिमराव राठोड, औरंगाबाद || 115

28) समकालीन हिंदी कविता में पारिस्थितिक सजगता
डॉ. सुरेश ए., एर्णाकुलम, केरल || 117

29) हिंदी साहित्य की प्रमुख दलित आत्मकथाएँ
मुल्ला आदम अली, तिरुपति || 120

30) संगीत एवं सौन्दर्य
मधुलता, दिल्ली || 123

31) महिला लेखिकाओं की आत्मकथाएँ और उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ
मुल्ला आदम अली, तिरुपति || 127

32) आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय भाव
अविनाश जाधव, परली–वै. जिला:बीड || 130

33) माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षण हेतु परम्परागत एवं नवाचार....
डा. एम. के. उपाध्याय–बनवारी लाल मेहरा, कोटा (राज.) || 133

34) हिंदी संतो और कन्नड के शिवशरणों के साहित्य की प्रासंगिकता
डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे, माकणी जिला उस्मानाबाद || 136

35) दैनिक जीवन मे अष्टांग योग का महत्व
डॉ. श्याम सुन्दर पाल, अमरकंटक (म.प्र) || 138

36) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी–तेलुगु नाटकों मे स्त्री–पुरुष सम्बन्धों का समाज सापेक्ष अध्ययन
डॉ.एम.रघुनाथ, वरंगल, तेलंगाणा || 142

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

37) भारत में एक राष्ट्र एक कर प्रणाली 'जी.एस.टी.' कर सुधार का अध्ययन
डॉ. वामेश्वरी साहू, धमतरी, छत्तीसगढ़ || 147

38) अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानीयाँ एवं संवेदना
अशोक कुमार सिंह, मुजफ्फरपुर, बिहार || 152

39) कालिदास कृत 'कुमार सम्भवम्' में कामदेव–दहन सम्बन्धी मिथक
डॉ. अनीता शर्मा, लुधियाना || 154

40) वर्तमान समय में मीडिया का प्रभाव विकासशील राष्ट्र के संदर्भ में एक अध्ययन
मनोज कुमार सिंह, मुजफ्फरपुर || 156

41) परिवर्तित सामाजिक विधानों के प्रति ग्रामीणों का दृष्टिकोण–एक.....
आरती तिवारी || 161

42) गोंड जनजाति के प्रवासी श्रमिकों का आर्थिक अध्ययन....
गंगेश्वरी ठाकुर, जबलपुर (म.प्र.) || 163

43) अमृत नाहटा के नाटकों में राजनीतिक व्यंग्य
डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ, हिंगोली (महाराष्ट्र) || 167

44) जम्मू कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकवाद
डॉ० निधि रायजादा–अनुतोष कुमार, बादलपुर (गौतमबुद्धनगर) || 170

45) आदिवासियों पर आधुनिक तकनीकी के प्रभाव का अनुशीलन
डॉ. रमेश चौहान, नीमच (म.प्र.) || 173

46) आदिवासी विमर्श :स्वरूप एवं संवेदना
डॉ. संजय गडपायले, जि.परभणी || 174

47) महिला कल्याण कार्यक्रम–अपराध एवं कानूनी संरक्षण
डॉ. अन्जू जगधारी, नीमच || 179

www.vidyawarta.com/03 _ http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

और उनके विघटन की परिणतियों को हम हिन्दी–तेलुगु नाटककारों ने आर्थ पर आश्रित स्त्री–पुरुष सम्बन्धों का चित्रण करते हुए सामाजिक जीवन के एक विशेष संदर्भ की ओर संकेत किया है। यह समझाया गया है कि अर्थ पर आश्रित सम्बन्धों पर ही आधुनिक युगीन मनुष्य का जीवन अधिक सुखमय हो सकता है। आर्थिक औन्नत्य आदमी को अहम्मन्यता ही दे सकता है, मानोचित नैतिकता और सदवगाहन नहीं। समाज में वर्ग भावना पैलाने लगती है और लोग वर्गों में कटे रह जाते है। इसलिए सामाजिकता और सह–अस्तित्व भावना के निर्वहण के लिए अर्थ पर आश्रित स्त्री–पुरुष सम्बन्धों की अपेक्षा भावना और नैतिकता पर आश्रित सम्बन्ध जरूरी है। हिन्दी–तेलुगु नाटक स्त्री–पुरुष सम्बन्धों के माध्यम से सामाजिक जीवन के इसी महत्वपूर्ण तथ्य की ओर संकेत करती है।

संदर्भ:–

१. 'मूर्तिकार'–डॉ. शंकर शेष पृ.६६
२. डॉ. शंकर शेष रचनावली भाग–२, डॉ. विनय, पृ.६८
३. मूर्तिकार नाटक–शंकर शेष पृ.६६
४. रत्न गर्भा–शंकर शेष पृ.३९
५. 'आधे–आधूरे'–मोहन राकेश पृ.४४
६. आषाढ़ का एक दिन–मोहन राकेश पृ.२५
७. 'रात–रानी'–लक्ष्मीनारायण लाल पृ.२४
८. चिल्लरा कोटु चिट्टेम्मा–श्रीदासम गोपाल कृष्ण पृ.५४

□□□

37

भारत में एक राष्ट्र एक कर प्रणाली 'जी.एस.टी.' कर सुधार का अध्ययन

डॉ. तामेश्वरी साहू,
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
बी. सी. एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
धमतरी, छत्तीसगढ़

सार संक्षेप:–

कर एक अनिवार्य अंशदान है, जो देश के आर्थिक विकास प्रक्रिया को गहनता से प्रभावित करती है। राष्ट्र की कर प्रणाली सरल, एकीकृत एवं उत्पादक होना चाहिए। भारत एक विशाल राष्ट्र है, यहां २९ राज्य हैं, राज्यों के कर प्रणाली में विविधता के कारण जटिलता विद्यमान है। कर सुधार की सतत् प्रक्रिया में, जी.एस.टी. कर सुधार देश को "एक राष्ट्र एक कर प्रणाली" के रूप में एकीकृत कर प्रणाली प्रदान करता है। जी.एस.टी. कर सुधार से विभिन्न राज्यों में एकल कर प्रणाली विकसित होगी, जिससे आर्थिक विकास में वृद्धि होगी, पारदर्शी, सरल एवं उत्पादक कर प्रणाली विकसित होगी, किंतु जी.एस.टी. करारोपण की कुछ प्रारंभिक चुनौतियां भी देश में विद्यमान है।

अध्ययन का उद्देश्य–

१. भारत में जी.एस.टी. कर सुधार प्रक्रिया का अध्ययन करना।

२. जी.एस.टी. कर सुधार के लाभ एवं महत्व का विश्लेषण करना।

अध्ययन की प्रविधि– प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोत पर आधारित है।

Scanned with CamScanner

वस्तु एवं सेवा कर (G.S.T.) एक परिचय–

भारत में कर प्रणाली के एक नयें युग का शुभारंभ १ जुलाई २०१७ को उस समय हो गयी। जब वस्तु और सेवाओ पर विभिन्न प्रकार के अप्रत्यक्ष करों के स्थान पर वस्तु एवं सेवा कर (Goood and service tax G.S.T.) लागू हो गया, और समूचा देश एकल कर व्यवस्था के अधीन आ गया।

जी.एस.टी. का भारत मे संक्षिप्त इतिहास–

१. सन् २००० में प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी ने प. बंगाल के वित्त मंत्री असीमदास गुप्ता के अध्यक्षता में एक समीति गठित कर एक एकीकृत कर प्रणाली जी.एस.टी. मॉडल तैयार करने का कार्य सौपा।

२. २००४ में वित्त मंत्रालय के सलाहाकार विजय केलकर ने जी.एस.टी. की सिफारिश की थी।

३. २८ फरवरी २००६ जी. एस. टी. पहली बार वित्त मंत्री के भाषण में प्रकट हुई।

४. ३० अप्रैल २००८ को अधिकारिक समीति ने भारत में गुड्स एवं सर्विस टैक्स नामक एक मॉडल और रोडमैपम प्रस्तुत किया।

५. २००९ में वित्तमंत्री प्रणव मुखर्जी ने दास गुप्ता समीति द्वारा डिजाइन किये जी.एस.टी. की मूल संरचना की घोषणा की और १ अप्रैल २०१० तक लागू करने की समय सीमा तय की थी।

६. २२ मार्च २०११ में जी.एस.टी. लागू करने के लिए ११५ वें संविधान संशोधन का विधेयक लोकसभा में पेश किसा गया किया, किंतु पारित नही हो सका, विपक्षी दल ने जी.एस.टी. के मूल संरचना का विरोध किया।

७. फरवरी २०१३ को वित्तमंत्री पी. चितम्बरम् ने अपने बजट भाषण में जी.एस.टी. लागू करने के लिए संकल्प घोषणा की।

८. दिसम्बर २०१४ में मोदी सरकार ने १२२वें सविधान संसोधन विधेयक के रूप में लोक सभा में जी.एस. टी. सविधान संसोधन विधेयक प्रस्तुत किया। लोकसभा में ६ मई २०१५ को, तथा ८ अगस्त २०१६ को राज्यसभा में विधेयक पारित हो गया। ८ सितम्बर २०१६ को राष्ट्रपति का अुमोदन प्राप्त हुआ, जिससे यह विधेयक पूर्णत: पारित हो गया और विधेयक का रूप ले लिया। यह संशोधन १०१वें संविधान संशोधन अधिनियम के रूप में यह अधिसूचित हो गया।

९. सितम्बर २०१६ को सरकार ने जी.एस.टी. काउसिंल का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष केंद्रीय वित्तमंत्री थे। इस समीति का प्रमुख कार्य जी.एस.टी. के विभिन्न नियम एवं कर की दरों के संबंध मे सर्वसम्मति से सुझाव देना था। इस समीति के सुझाव के आधार पर सरकार ने जी.एस.टी. संबंधित चार कानून संसद में प्रस्तुत किये जिसे मार्च २०१७ में संसद ने पारित कर दिया।

१०. भारत सरकार जी.एस.टी. को १ अप्रैल २०१७ से लागू करना चाहती थी, किंतु अंत: १ जुलाई २०१७ को लागू किया गया। जी.एस.टी. को लागू करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा संसद का विशेष मध्यरात्री सत्र बुलाया गया था।

जी.एस.टी लागू होने से वस्तु और सेवाओ पर लगने वाले **केंद्रीय करो में निम्नलिखित कर जी. एस. टी. में सम्मिलित हो गया–**

१. केंद्रीय उत्पाद शुल्क (Central Excise Duty).

२. उत्पाद शुल्क (दवाई और प्रसाधन पदार्थ) [Duties of Excise (medicinall and toilet preparation)].

३. अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (विशेष महत्व की वस्तुएं) [Additional duties of excise (good of special Importance)]

४. अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (कपड़ा और कपड़े की वस्तुएं) [Additional duties of excise (textiles and textile products)].

५. अतिरिक्त सीमा शुल्क (सामान्यत: सीवीडी

Scanned with CamScanner

से जाना जाता है) [Additional duties of customs (CVD)].

६. अतिरिक्त विशेष सीमा शुल्क (एस. ए. डी.) [Special Additional duty of customs (SAD)].

७. सेवा कर (Service Tax).

८. वस्तुओं सेवाओं की केन्द्रीय अभिभार और उपकर (Central Surcharges and cess so far as they relate to supply of goods and services).

राज्य करों में से निम्नलिखित कर जी. एस. टी. में सम्मिलित हो गये।

१. राज्य वैट (State VAT)

२. केंद्रीय बिक्री कर (Central State Tax)

३. लक्जरी टैक्स (Luxury Tax)

४. प्रवेश कर (सभी रूपों में) [Entry Tax (all forms)].

५. मनोरंजन एवं मनोरंजक कर (सिवाय जब तक स्थानीय निकाय द्वारा करारोपण किया गया है।) [Entertainment and amusement tax (Except when levied by the local bodies)]

६. विज्ञापनों पर कर (Taxes on Advertisement).

७. क्रय कर (Purchase Tax)

८. लॉटरी, शर्त और जुए पर कर (Taxes on Lotteries, betting and Gambling).

९. आपूर्ति से संबंधित राज्य अधिभार और उपकर (State Surcharges and Cess as far as they relate to supply of goos and services).

इन सभी करों के स्थान पर अब एकल कर जी.एस.टी. ही लगेगी, जिससे केंद्र एवं राज्य दोनों का हिस्सा होता है। जी. एस.टी. के अंतर्गत तीन अलग अलग प्रकार के कर लगाये जाते है–

1. केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (CGST).
2. राज्य वस्तु एवं सेवा कर (SGST).
3. अंतर्राज्यीय वस्तु एवं सेवा कर (IGST).

जी.एस.टी. कर प्रणाली में कर की चार दरें ५%, १२%, १८%, २८% निर्धारित की गयी है। बहुत से आवश्यक वस्तुओं को कर से मुक्त रखा गया। २० लाख से कम बिक्री वाले व्यापारी एवं कारोबारियों को जी.एस.टी. से बाहर रखा गया है। पूर्वोत्तर के राज्यो, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, एवं जम्मू काश्मीर के लिए छूट की सीमा १० लाख रखी गयी है। १.५ करोड़ के नीचे के लेनदेन राज्य सरकारों के अधीन है। ६ अक्टूबर २०१७ को नई दिल्ली में आयोजित २२वीं जीएसटी परिषद की बैठक में जी. एस. टी. रिटर्न भरने के समय में परिवर्तन किया, वेरिफिकेशन स्कीम का दायरा बढ़ाया गया एवं २२ वस्तुओं एवं ५ सेवाओं के कर दरों में कटौती की गयी। १८ जनवरी को जी.एस.टी. की २५वीं बैठक में पुनः २९ वस्तुओं एवं ५३ सेवाओं के कर दर मे कटौती का फैसला लिया गया। जिससे वस्तुओं के मूल्य में कमी आयेगी और उपभोक्ताओं को सीधा लाभ होगा। मादक पदार्थ, रियल स्टेट एवं पेट्रोल–डीजल अभी भी जी.एस.टी. के दायरे से बाहर है।

देश भर में वस्तुओं के तीव्र आसान एवं निर्विघ्न अंतर्राज्यिक परिवहन के लिए १ फरवरी २०१८ से ई–वे बिल प्रणाली लागू की गयी है। अब किसी भी ट्रांजिट पास की आवश्यकता नहीं है। ई–वे बिल जेनेरेट करने के लिए किसी चेक पोस्ट में जाने की आवश्यकता नहीं है, अपितु इंटरनेट पर एप्लीकेशन प्रोग्राम पर इंटरफेस द्वारा जेनेरेट किया जा सकता है। ई–वे बिल की ट्रायल १६ जनवरी २०१८ से लागू हो गयी है। इस प्रकार माल परिवहन की पुलिसिंग मॉडल से स्व घोषणा मॉडल में स्थानांतरण हो गया है।

जी.एस.टी. की प्रकृति–

Scanned with CamScanner

वस्तु एवं सेवा कर (GST) एक मूल आधारित (origin based), गन्तव्य आधारित (destination based) एवं सोपानी (Cascading) कर प्रणाली है। इसलिए यह वैट से मेल नहीं खाता। जी.एस. टी. विनिर्माता से लेकर उपभोक्ता तक वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति पर एकल कर व्यवस्था है। प्रत्येक चरण में भुगतान किये गये आगत करों का लाभ, मूल्य संवर्धन के बाद के चरणों में उपलब्ध होगा, जो प्रत्येक चरण के मूल्य संवर्ध पर जी.एस.टी. को आवश्यक रूप से एक कर बना देता है। अंतिम उपभोक्ताओं को इस प्रकार आपूर्ति श्रृंखला में अंतिम डीलर द्वारा आरोपित जी.एस.टी. ही वहन करना पड़ता है, इससे पिछले चरण के सभी मुनाफे समाप्त हो जाते है।

वस्तु एवं सेवा कर (जी.एस.टी.) के लाभ–

१. यह देश को एक समान कर प्रणाली प्रदान करता है। जिससे समूचे राष्ट्र में एकीकृत कर व्यवस्था की स्थापना हो गयी है। केंद्र एवं राज्य द्वारा आरोपित बहुल कर के कारण अप्रत्यक्ष करों d j ad ee% संवर्धन के प्रगामी चरणों में उपलब्ध गैर इनपुट कर क्रेडिट के कारण आज देश मे अने छिपे करों से अधिकांश वस्तु एवं सेवाओं की लागत पर प्रभाव पड़ता है। जी.एस.टी. के कारण विनिर्माता से उपभोक्ता तक केवल एक ही कर लगेगा, जिससे अंतिम उपभोक्ता पर लगने वाले करो मे पारदर्शिता आयेगी कर की दरों में बार बार परिवर्तन की समस्या से मुक्ति मिलेगी है। समग्र कर भार में राहत एवं कर निपुनता मे वृद्धि होगी।

२. जी.एस.टी. के पूर्व कर की दरें बहुत उच्च होती थी जो ३०.३५: थी कुछ वस्तुओं पर ५०: तक था, जी.एस.टी. के लगने से कर के दरों में कमी आयी है, कर भार में कमी आयेगी।

३. देश का सम्पूर्ण बाजार साझा बाजार के रूप मे विकसित होगा, विभिन्न राज्यों में ट्रकों के जांच की समस्या से मुक्ति मिलेगी जिससे ट्रक चालकों से अवैद्य वसूली से राहत मिलेगी।

४. इंस्पेक्टर राज की समस्या में कमी आयेगी।

५. कर अपवंचन मे कमी आयेगी, अधिक लोग कर के दायरे मे आयेंगे जिससे कर राजस्व में वृद्धि होगी।

वस्तु एवं सेवा कर ;जी.एस.टी.द्ध का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–

जी.एस.टी. लागू करते समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जी.एस.टी. को पारदर्शी, सरल, भ्रष्टाचार मुक्त कर प्रशासन के लिए 'गेम चेंजर' बताया है। जी.एस.टी यानी "गरीबों का उद्धार एवं तेज विकास" कहा गया। एक राष्ट्र, एक कर प्रणाली जी. एस. टी. देश की दो ट्रिलियन यू.एस. डॉलर की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। यह देश की १.३ बिलियन लोग को साझाबाजार प्रदान करेगा। देश के विकास मे आतंकवाद एवं इंस्पेक्टरराज दो बड़ी बाधा है, को समाप्त करने में जी.एस.टी. सहायक होगा। ८१ चीजें १८: कर के दायरे मे है तथा ५०: वस्तुओं पर कोई कर नहीं है।

वस्तु एवं सेवा कर (जी.एस.टी.) की चुनौतियां–

जी. एस.टी. लागू करने के लिए संविधान मे संशोधन करना आवश्यक था। सेवा कर मूलतः संघ सूची का विषय है, भारतीय संविधान के ८८वें संशोधन के अनुसार सेवाकर भारत सरकार द्वारा लगाये जायेंगे तथा संसद द्वारा पारित कानून के तहत् भारत सरकार एवं राज्यों के बीच बांटे जायेंगे तथा भारत सरकार के १९३५ के अधिनियम अंतर्गत वस्तुओं के क्रय व विक्रय पर कर लगाने एवं वसूल करने के अधिकार राज्यों को दिये गये है। नशीले पदार्थों पर कर लगाने का अधिकार राज्य सरकारों को प्राप्त है। इन सभी कारणों से १२२वां संविधान संशोधन तथा संविधान में २४६ ए की व्यवस्था की गयी, यह स्थापित करती है, कि संसद तथा प्रत्येक राज्य की विधान सभा कुछ

Scanned with CamScanner

शर्तो के अंतर्गत संघ या राज्य द्वारा लगाये गये वस्तु तथा सेवा कर के संदर्भ मे कानून बनाने का अधिकार देता है। जी.एस.टी. के लागू होने से राज्यों के होने वाली राजस्व हानि की १००प्रतिशत क्षतिपूर्ति केंद्र सरकार द्वारा लागू होने के बाद ५ वर्ष तक की जायेगी। जी.एस.टी को आसानी से लागू करने के लिए वित मंत्री ने दो कमिटी गठित की जिसमे एक कमीटी आई.टी. अवस्थापन अनवीक्षण (Monitoring) करेगी, वहीं दूसरी कमीटी जी. एस.टी. की संभावित दरों की संस्तुति करेगी। लंबे प्रयास एवं बेहतर समन्वय से सभी राज्यों की विधान सभा ने जी.एस.टी. विधेयक पास कर दिया है। जी. एस.टी. लागू होने के पश्चात क्रियान्वयन संबंधी बहुत सी चुनौतियां विद्यमान है।

जी.एस.टी. लागू होने से व्यापार जगत मे अभिनव क्रांति आयी है। ऐसे व्यापारी जो पहले कर भुगतान नही करते थे, अब वे कर के दायरे में आ गये है, इस कारण वे जी.एस.टी. का विरोध कर रहे है, जबकि छोटे व्यापारियों को जी.एस.टी. से बाहर रखा गया है।

१. जी.एस.टी. प्रणाली में पंजीकरण की प्रारंभिक समस्याओं का सामना व्यापारियों को करना पड़ रहा है।

२. जी.एस.टी. लागू होने से करों के एकान्टिग में आरंभिक समस्याएं है, जिसके कारण कुछ व्यापारी इसका विरोध भी कर रहें है।

३. तीन प्रकार के जी.एस.टी. होने के कारण कर राजस्व पद्धति में जटिलता विद्यमान है।

४. ई शिक्षा, सायबर सुविधा एवं सुरक्षा के अभाव के कारण देश में आरंभिक समस्याएं विद्यमान है।

निष्कर्ष:—

जी.एस.टी. एक विश्वस्तरीय कर प्रणाली है। भारत में कर सुधार की सतत् प्रक्रिया में जी. एस.टी. कर प्रणाली एक मील का प्रकार पत्थर सिद्ध होगा। देश की राजस्व प्रणाली सुदृढ़ और सशक्त बनेगी जिससे देश का तीव्र आर्थिक विकास होगा एवं विकास का लाभ देश के जन साधारण व्यक्ति को मिलेगा इसकी परिकल्पना की जा सकती है। जी.एस.टी. लागू करने की देश में कुछ प्रारंभिक चुनौतियां है, जिसे ई—शिक्षा, जन जागरूकता, और प्रशासनिक कार्यकुशलता से दूर किया जा सकता है। भविष्य में आवश्यकताओं के अनुरूप जी. एस. टी. के ढ़ाचे में परिवर्तन किया जाना चाहिए तभी नवीन परिवर्तन देश के सर्वांगिन विकास में सहायक सिद्ध होगा।

संदर्भ:—

१. राजस्व, डॉ. जे.सी. वार्ष्णेय पेज ३५०—३७०, ३८०—३९०।

२. भारतीय अर्थव्यवस्था, सर्वेक्षण तथा विश्लेषण प्रो. एस.एन. लाल,डॉ एस.के. लाल पेज ३१—३५।

३. प्रतियोगिता दर्पण अगस्त २०१७ पेज १७।

४. भारतीय अर्थव्यवस्था प्रतियोगिता दर्पण अतिरिक्ताक।

५. भारतीय अर्थव्यवस्था, रूद्र दत्त,के.पी.सुदरम् पेज ८७२—८७८।

६. भारतीय अर्थव्यवस्था एस.के. मिश्र एवं वी. के.पुरी पेज ७१७—७३२।

७. नवभारत टाइमस।

8- www.cbec.gov.in/htdocs-cbec/gst.

9- http/bank bajar.com

10- http/economictimes.indiatimes.com/gst.

□□□

Scanned with CamScanner

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

International Multilingual Research Journal

विद्यावार्ता™

Issue-12, Vol-04, Oct. to Dec. 2015

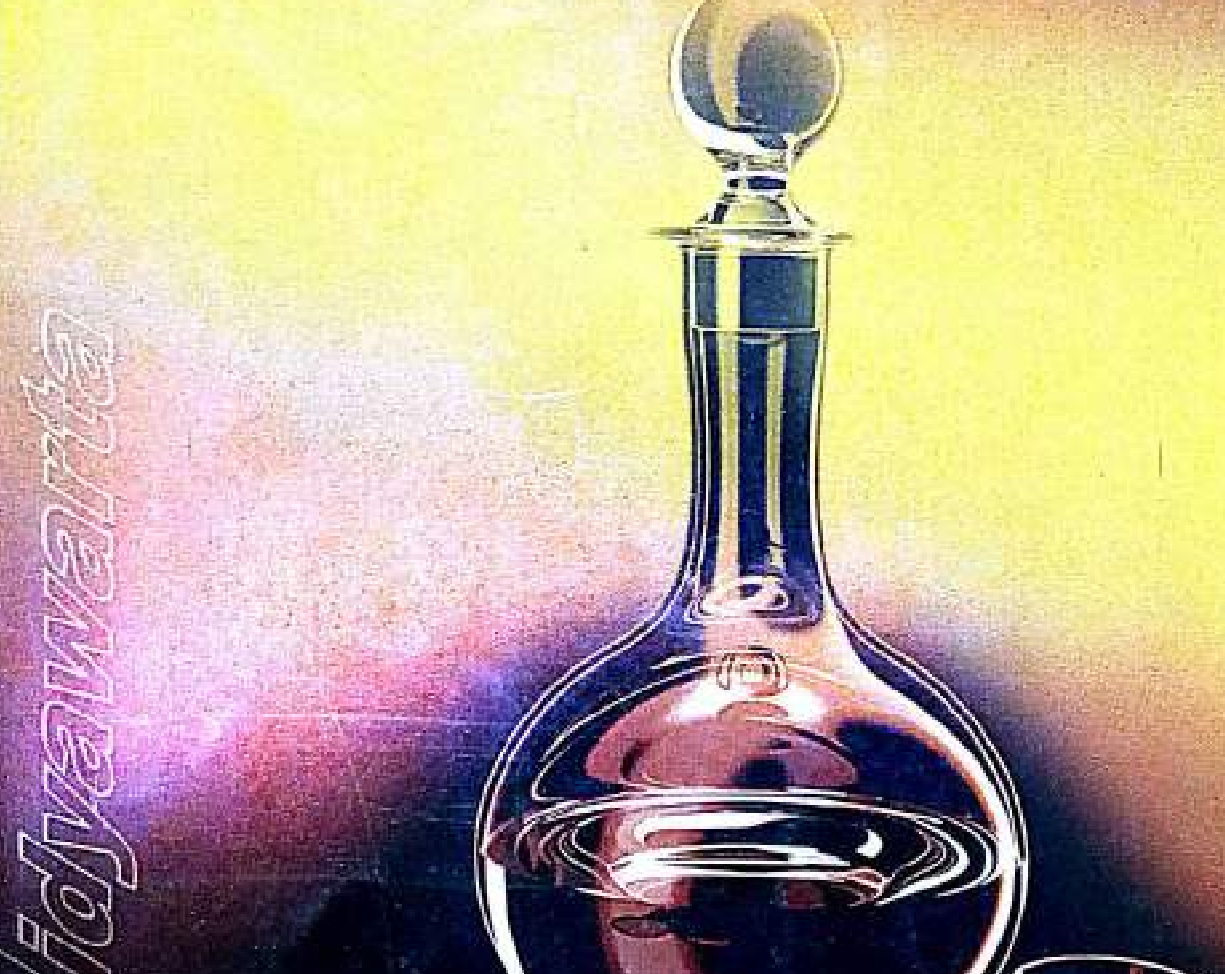

Vidyawarta

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

Dr. H. Thakur

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक संशोधन पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec. 2015
Issue-12, Vol-04

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

❖ 'विद्यावार्ता' हे त्रैमासिक मालक व प्रकाशक अर्चना राजेंद्र घोडके यांच्या हर्षवर्धन पब्लिकेशन. प्रायव्हेट लिमीटेड, लिंबागणेश, जि. बीड महाराष्ट्र येथे मुद्रीत करुन संपादक डॉ. बापू गणपत घोलप यांनी मु.पो.लिंबागणेश, ता.जि.बीड–४३११२६ येथे प्रकाशित केले.

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
Mobi. 09850203295, 07588057695

❖ Editorial Board ❖

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arebia)
4) Dr. Anupama Alvikar (Turkey)
5) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
6) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
7) Dr. Dixit Kalyani (Lucknow)
8) Dr. Basantani Vinita (Pune)
9) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
10) Dr. J. David Livingston (Thirupathy)
11) Dr. Kadu S. V. (Akola)
12) Dr. Jubraj Khamari (ORISSA)
13) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
14) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
15) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
16) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
17) Manmeet Kaur ((Uttrakhand))
18) Dr. Rajesh Chandra Paliwal (Uttrakhand)
19) Dr. Raj Bala Gaur (New Delhi)
20) Prof. Ghatkar D. T. (Latur)
21) Prof.Surwade Yogesh (Satara)

❖ Advisory Committee ❖

1) Dr. Chodhari N.D. (Kada)
2) Dr. Yallawad Rajkumar (Parli v.)
3) Dr. Yerande V. L. (Nilanga)
4) Dr. Shinde Sunil (Parbhani)
5) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
6) Ghante Pradipkumar , Solapur (MS)
7) A. Durga Prasad, Telangana
8) Dheeraj Kumar Pandey, Varanasi (U.P.)
9) Prof. Machale Ravinda (Parli v.)
10) Vipin Panday, Kanpur (U.P.)
11) Dr.V.Aruna, Chennai (Tamilnadu)
12) Dr. Avineni Kishor, Kuppam(Kerala)
13) Prof. Deshmukh Suryakant (Parli v.)
14) 23) Dr. Dhaigude R. B. (Parli v.)
15) Dr. Rajendra Acharya (Parli v.)
16) Dr. Manoj Kr Sharma (Haryana)
17) Dr. Arbind Kumar Choudhary (Assam)
18) Dr. Piku Chowdhury (KOLKATA)
19) Aparna D. Kulkarni (Pune)
20) Dr. Maheswar Panda (Orissa)
21) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)

North Maha. University,
Jalgaon. Approved
जा.क्र.उमवि/२१/इ.अ.मं./३१३/२०१३
Dt.२१.१०.२०१३

International
Innovative Journal
Impact Factor (IIJIF)
Indexed Journal

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Vidyawarta' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university,institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Vidyawarta is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

Vidyawarta™

Interdisciplinary Multilingual Referred Journal

All the participants and members will get their One copy of Vidyawarta by registered post on their address. Plz Send your full Postal Address With Pin code & Mobile Number,Email Etc.

Payment mode by Online (NEFT) Or M.O. Or Cheque

Article Publication Fee : 800 /- (For One Copy)

Next Par Copy 300/-

One Year Subscription Fee : 3600/-

For the article publication fees can be sent in fauour of

Harshwardhan Publication Pvt. Ltd.
State Bank of India, Parli Vaijnath
Dist. Beed (Maharashtra)
A/C No: 33 65 97 13 509
IFSC Code : SBIN0003406

Ghodke Archana Rajendra
Bank Of Maharashtra,Parli V.
Dist. Beed (Maharashtra)
A/C No: 60 12 79 78 241
IFSC Code : MAHB0000044

Editoral Contact:

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

Limbaganesh, Dist. Beed (M.s.) Pin-431126
075 88 05 76 95 / 098 50 20 32 95
vidyawarta@gmail.com
vidyawarta@yahoo.com

http://www.vidyawarta.blogspot.com

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

|| Index ||

1) Jayant Mahapatra's Contribution to Indian English Poetry
Prof. Malini Ramlal Adhav, Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.) || 11

2) Myth is a reflection of Indian culture in Amitav Ghosh's The Circle of Reason
Dr. Dipika Bhatt, Haridwar || 16

3) THE THREE EMPIRICISTS IN MODERN WESTERN PHILOSOPHY
NAGARAJU B.R., Manasagangotri, Mysuru || 19

4) Philosophy of Socrates
Dr. K. N. Basavaraju, Manasagangotri, Mysuru || 23

5) Theory of Forms
Chinnaswamy N., Manasagangotri, Mysuru || 27

6) The Three Rationalists of Modern Western Philosophy
Dr. H. M. Mallikarjunaswamy, Manasagangotri, Mysuru || 30

7) ECONOMIC EMPOWERMENT OF RURAL WOMEN IN INDIA
Prof. Dr. Y.Gangadhara Reddy, Bangalore || 35

8) The Mission of Vedanta
Dr. Miss M.M. Gondi, Athani, Dist.Belgagavi (Kar) || 40

9) Effect of reasoning ability on motor coordination ability of ....
Dr. Arun Kumar Nayak, Ambikapur (C.G.) || 41

10) The Portrayal of Indo-Fijian Culture in Subramani's Fantasy Eaters and its ....
Hetal S. Patel, Patan (Gujarat) || 44

11) Face Recognition and Detection Using Artificial Neural Network Algorithms
Prof. Prakash T. Raut, Wakad Pune || 48

12) Teacher Effectiveness: A New Trend in Education
Dr. Archana G. Watkar, Akola (M.S.) || 53

13) Collection Development of e-resources in Engineering College libraries
Mrs. Pushpa Sharma, Ganganagar (Raj.) || 56

14) The feeling of Alienation & Loss of Identity in Rough Passage
Dr. N. K. Shinde, Peth Wadgaon, Dist. Kolhapur || 60

http://www.vidyawarta.blogspot.com | https://sites.google.com/site/vidyawartajournal

15) OVERALL WELLBEING OF WOMEN- KEY FACTORS
Zagade R. Maruti, Aurangabad (Maharashtra) || 64

16) DR. KALEEM ZIA'S FLIGHTS ON THE HORIZON OF URDU ....
Dr. (Ms.) Shaista Talai, Aurangabad (Maharashtra) || 69

17) Changing Economic Life of Paudi Bhuyans through Micro Project in ....
Bhakta Charan Pradhan, Deogarh, Dist. Odisha || 73

18) Women Empowerment through Self Help Group
Dr. Amit Bhowmick, Enamul Kabir Pasa ,West Bengal || 80

19) Education Systems in india – Past to Beyond
Dr.Govind N.Bhusare , Parbhani. || 83

20) भिल्ल आणि पावरा जमातीत होळीचे स्थान
डॉ. हिराजी बनपूरकर, चामोर्शी जि. गडचिरोली || 90

21) ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्रातील बदलाचे व्यवस्थापन
सुर्यकांत बाबुराव मस्के, लातूर || 94

22) लोकसाहित्य : मानवी जीवनाचे प्रेरणा स्थान
प्रा. डॉ. संदीप सांगळे, तळेगोव ढमढरे, ता. शिरूर, जि.पुणे || 99

23) युआन चे अवमूल्यन आणि भारतीय अर्थव्यवस्था
सहा. प्रा. मदन शेळके, उदगीर || 104

24) राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापिठाशी संलग्नीत व संत गाडगेबाबा.......
प्रा. रेवाराम एम. मालखेडे, सावरगांव, ता. नरखेड जि.नागपूर || 109

25) संत जनाबाईचे वाड्मयीन योगदान
डॉ. प्रतिभा सुरेश जाधव, लासलगांव, निफाड, जि.नाशिक || 114

26) कंठसाधना (Voice Culture)
श्रीमती प्रतिभा भ. कडेठाणकर, उल्कानगरी, औरंगाबाद || 116

27) महात्मा गांधी आणि महिला सबलीकरण
प्रा. माणिकराव एम. कवरके, गाडेगांव (तेल्हारा), जि.अकोला || 118

28) अभिजात संगीत शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांसमोरील आव्हाने
कु. राधिका सु. बेले, अकोली रोड, अमरावती (महाराष्ट्र) || 119

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

29) मुक्तिबोधांची मार्क्सवादी जीवननिष्ठा व काव्यदृष्टी
डॉ. हिराजी बनपूरकर, जि. गडचिरोली || 123

30) एक सफल सम्पादक डा. सम्पूर्णानन्द
डा. अलका शर्मा, चौखुटा, दोषापानी, नैनीताल उत्तराखंड || 127

31) जलवायु परिवर्तन और उससे उत्पन्न होने वाली पर्यावरणीय समस्याओं एवं......
सुरेश अवासे, खरगोन (म.प्र.) || 130

32) राष्ट्र के निर्माण में डॉ.भीमराव अम्बेडकर योगदान
डॉ. विनोद कुमार चौधरी, वाराणसी || 133

33) मन्टो—एक युगान्तकारी साहित्यकार
डॉ. मोहम्मद अजहर ढेरीवाला, प्रतापगंज, वडोदरा (गुजरात) || 140

34) भारत में गरीबी – एक सामाजिक चुनौती
डॉ. श्रीमती प्रतिमा दीक्षित, जबलपुर (म.प्र) || 144

35) यातायात के साधन और राष्ट्रभाषा हिन्दी
प्रा. डॉ. द्वारका गित्ते—मुंडे, नांदूरघाट, ता.केज, जि.बीड || 147

36) नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम – २००९:..........
जितेन्द्र सिंह गोयल, लखनऊ (उ.प्र) || 150

37) महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में करुणा और वेदना
डॉ. जी. रमेश बाबु, वरंगल || 155

38) महिलाओं के प्रति समाज का नजरिया
डॉ. श्रीमती गीता शर्मा, जबलपुर (म. प्र.) || 158

39) आपदाजन्य मनोविकार एवं पर्याप्त नैदानिक हस्तक्षेपों की ....
कु. तन्वी शर्मा, हल्द्वानी (उत्तरांचल) || 159

40) साठोत्तरी हिन्दी कविता में असंतोष के स्वर और धूमिल
निर्भय सिंह, अलीगढ || 163

41) शिवानी के कथा साहित्य और समाज में नारी
रणजीत कुमार सिन्हा, इंदा, खडगपुर, पश्चिम मेदिनीपुर || 167

42) नगरी–सिहावा,जंगल–सत्याग्रह
डॉ. (श्रीमती) हेमवती ठाकुर, धमतरी, छत्तीसगढ || 169

43) सिनेमा, दूरदर्शन और हिंदी
प्रा. तुलसा नानुराम मोची, धुलिया (महा.) || 173

44) कबतक पुकारूँ उपन्यास में आदिवासी विमर्श
प्रा. अशोक डी. तायडे, शहादा, जि.नंदूरबार || 174

45) शास्त्रीय संगीत को जन–साधारण में लोकप्रिय बनाने के उपाय
डॉ. पूर्वी लुनियाल, जिला सिरमौर (हि. प्र.) || 177

46) वेब मीडिया चुनौतियाँ और संभावनाएँ
डॉ. उमेश चन्द्र शुक्ल, परेल,मुंबई || 180

चर्चासत्र, सेमीनार पुस्तक प्रकाशन

आप के महाविद्यालय एवं संस्थाओ मे चर्चासत्र, सेमीनार, परिषद आदि उपक्रमों की स्मरणिका यदि आप ISBN नंबर के साथ प्रकाशित करना चाहते है, तो हमारे प्रकाशन की और से आप छपवा सकते है। हम आपका स्वागत करते है।

हर्षवर्धन पब्लीकेशन प्रा.लि,
परली वै, जि बीड (महाराष्ट्र)

http://www.vidyawarta.com

Printing@rea

http://www.vidyawarta.blogspot.com | https://sites.google.com/site/vidyawartajournal

शिवानी के उपन्यास कृष्णाकली, रथया लघु उपन्यास में वेश्या समस्या का चित्रण है। कृष्णाकली की कली का पालन–पोषण पाना वेश्या करती है पर वह उसे वेश्या नहीं बनाना चाहती, बल्कि पढ़ा–लिखा कर एक आदर्श जीवन जीने को देती है। बोर्डिंग स्कूल में भेजती है। 'रथया' लघु उपन्यास में सर्कस मैनेजर ने बसन्ती का बलात्कार किया और समाज के लोक–लाज से बचने के लिए वेश्या बनकर बसन्ती मजबूरी में जीवन गुजारती है। 'करिए छिमा' की हीरावेती वेश्या है, पर श्रीधर के प्रति उसका प्यार निश्चल, कलंक रहित है। असमय पति की मृत्यु उसे वेश्या का जीवन जीने को बाध्य करती है। यहाँ पर शिवानी दिखाती है कि वेश्या बनने से पहले वह (हीरावती) एक सामान्य स्त्री है, पर पुरुष समाज बलात उसे वेश्या बनाता है जो कि गुनाह है।

निष्कर्ष:–

इस तरह शिवानी ने अपने कथा–साहित्य में ग्रामीण, शहरी, उच्चशिक्षित, मध्यवर्गीय, निम्न मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त नारी की दशाओं का सुंदर दस्तावेज पाठक के सामने प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में शिवानी का कथा–साहित्य भारतीय स्त्री विमर्श के लिए मील का पत्थर है। कारण समाज के प्रत्येक स्तर के नारी जीवन और उनकी दु:ख वेदना, कारण और दिशा इनके कथा–साहित्य में है। शिवानी का कथा–साहित्य ने इस कारण एक अलग पहचान बनाई है, जो स्वानुभूति और प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर है।

संदर्भ ग्रन्थ –

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास–(आँ. रामचन्द्र शुक्ल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा– १३वाँ संस्करण सं. –२०१८, पृ.–१६)

२. करिए चिमा (जिलाधीश, पृ.–३३)

३. चावरी –(दो सखियाँ, शिवानी, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, स. –२००७, पृ.–६२)

४. कुशनुली–(रति विलाप, शिवानी, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, स. –२००७, पृ.–६०)

❖❖❖

42

नगरी–सिहावा, जंगल–सत्याग्रह

डॉ. (श्रीमती) हेमवती ठाकुर
सहायक प्राध्यापक, इतिहास
बाबू छोटेलाल शा.स्ना.महा. जि.–धमतरी(छ.ग.)

****

स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ का अविस्मरणीय योगदान रहा है। जनजातीय बहुल छत्तीसगढ़ के विभिन्न अंचलों में नगरी–सिहावा अंचल की स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नगरी और सिहावा अलग–अलग स्थान हैं। जिला मुख्यालय धमतरी से ६५ कि.मी. की दूरी पर नगरी स्थित है। वर्तमान में तहसील मुख्यालय है जिसे अनुभाग का दर्जा प्राप्त हो चुका है यहां का एक मुहल्ला कोडपारा प्राचीन गढ़ (किला) की उपस्थिति को मौन स्मरण कराता हुआ अतीत के वैभव को बतलाता है। नगरी स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियों का केन्द्र था। जंगल सत्याग्रह की योजना यहीं बनायी गई और यहीं से सत्याग्रह का संचालन किया गया। परन्तु नगरी और सिहावा के नाम पर नगरी–सिहावा जंगल सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। (१) सिहावा नगरी से ८ कि.मी. दूर दक्षिण में स्थित है। चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ सिहावा प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का केन्द्र रहा है। छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा की जीवनदायिनी नदी महानदी का उद्‌गम यहीं की पहाड़ी से हुआ है। (२) नगरी–सिहावा का जंगल सत्याग्रह पूरे देश में अलग ही तरह का सत्याग्रह था। जिसके जन्मदाता श्यामलाल सोम थे। अंचल में ८० प्रतिशत जनजातीयाँ निवास करतीं थीं। जल–जंगल और जमीन पर उनका परम्परागत अधिकार था, जो जीविकोपार्जन का मुख्य साधन रहा है। प्रकृति से सीधा संवाद करने वाली प्रकृति पूजक जनजातीयाँ

वन एवं वनोपज पर पूर्णत: आश्रित रही है। यह उनके सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन का आधार रहा है। (३) ब्रिटिशकाल में सर्वप्रथम लार्ड डलहौजी ने १८४९ ई. में वनों को औपनिवेशिक नीति के अंतर्गत सम्मिलित किया। आगे चलकर वनों को १९७८ के वन अधिनियम द्वारा तीन श्रेणियों में विभाजित करके वन सम्पदा का दोहन प्रारंभ किया। (४) जो अनवरत जारी रहा, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव आदिम जातियों की जीवन शैली पर पड़ा। परम्परागत अधिकार समाप्त होने लगा, जिससे सामाजिक–सांस्कृतिक भावनाएं आहत हुई। नगरी–सिहावा जंगल सत्याग्रह का निम्नलिखित कारण है।

१. अंग्रेजों द्वारा चरी एवं निस्तारी पर प्रतिबंध लगाना।
२. वनविभाग के अधिकारियों द्वारा बेगार लेना।
३. अधिकारियों द्वारा अभद्र व्यवहार करना एवं छोटी–छोटी गलतियों पर दण्डित करना और पैसा वसूलना।
४. किसानों को मवेशी कर की जानकारी नहीं होने से मवेशियों को जंगल चराने ले जाने पर कांजी हाउस में डाल देना इत्यादि। (५)

उपर्युक्त कारणों से अंचल के निवासियों में असंतोष बढ़ते जा रहा था। ऐसे समय नार्मन स्कूल रायपुर की पढ़ाई छोड़कर नगरी वापस हुए श्यामलाल सोम, हरखराम सोम, बाली ठाकुर, विशम्भर पटेल, पंचम नेताम आदि ने सत्याग्रह करने का निर्णय लिया। सत्याग्रह करने के लिए नियम बनाया गया कि प्रतिदिन पांच व्यक्तियों का जत्था जंगल में प्रवेश करेंगे और आरक्षित वन क्षेत्र से लकड़ी या घास काटकर जंगल कानून का उल्लंघन कर अपनी गिरफ्तारी देंगे। इसकी पूर्व सूचना प्रशासन को दे दी जावेगी।

जनवरी १९२२ ई. के प्रथम सप्ताह में जंगल कानून का उल्लंघन करने नारे लगाते और जयघोष करते जुलूस के रूप में महिला और पुरूष आरक्षित वन की ओर प्रस्थान किये जहाँ पहुंचते ही पांच व्यक्तियों का जत्था जंगल में प्रवेश कर लकड़ी काटकर कानून का उल्लंघन किया। सत्याग्रहियों ने निर्णय लिया था कि प्रारंभ में केवल जलाऊ लकड़ी काटेंगे, दूसरे दिन लकड़ी काटने लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। सत्याग्रह विकराल रूप धारण कर लिया। सत्याग्रहियों द्वारा जंगल कानून का उल्लंघन कर सत्याग्रह करने की सूचना पहले ही स्थानीय अधिकारी को दे दी गयी थी। स्थानीय अधिकारी ने सिहावा आरक्षी केन्द्र, अपने विभाग के उच्चाधिकारी, जिला दण्डाधिकारी को प्रेषित कर दिया। कानून का उल्लंघन कर सत्याग्रह करने के लिए लोगों में जोश और उत्साह देखकर वन विभाग के अधिकारी किंकर्तव्यमूढ़ हो गये थे। (६)

सत्याग्रह प्रारंभ होने के तीसरे दिन अंग्रेज अधिकारी आई.सी.एस. बेली रायपुर जिला का पुलिस कप्तान, धमतरी पुलिस सर्किल इन्सपेक्टर जनार्दन प्रसाद, पुलिस सबइंस्पेक्टर रामदुलारे, सिहावा पुलिस सब इंस्पेक्टर दर्जनों कान्स्टेबल, विशेष कान्स्टेबल बंदूक आदि हथियारों से लैस होकर नगरी पहुँचे। नगरी पहुँचते ही नेताओं को बंदी बनाना और घरों की तलाशी लेना शुरू कर दिये। सत्याग्रहियों के अलावा सामान्यत: सभी घरों की तलाशी ली गयी। घरों में रखी हुई लकड़ियों को बाहर निकालकर उन पर चोरी का आरोप लगाया गया। गांव में ही अदालती कार्यवाही की गयी, इस दौरान कई तरह से प्रलोभन दिया गया, माफी मांगने कहा गया परन्तु सत्याग्रही झुकने के लिए बिलकुल तैयार नहीं हुए। अदालती कार्यवाही में स्वयं सेवकों को ३ से ६ माह के कठोर कारावास की सजा (७) और २५०/– रू. से लेकर २००१/– रूपये तक जुर्माना किया गया था। जिनके नाम हैं:– (१) श्यामलाल सोम (२) विशम्भर पटेल (३) हरखराम सोम (४) श्रीराम सोम (५) लोहरूराम ठाकुर (६) पंचमसिंह नेताम (७) आंनदराम ठाकुर (गोंड़) (८) घनसिंह गौर (९) सूरज वैष्णव (१०) आशाराम हल्बा (११) सुकड्डू रावत (१२) अमरसाय तेली (१३) शोभाराम साहू (१४) मंगलू केंवट (१५) सुधर साय (१६) धेनुराम हल्बा (१७) सहदेव गोंड़ (१८) हरनारायण पाण्डे (१९) सुकलाल केंवट (२०) श्रीराम गोंड़ (२१) समेदास सतनामी (२२) आंनदराम पुजारी

(सभी नगरी से) (२३) जगतराम (उमरगांव) (२४) पुराणिक साहू (खम्हरिया) (२५) सोनउराम साहू (भूमका) (२६) तखतसिंह (पोड़गांव) (२७) मंसाराम (भी p मपुरी) (२८) झिटकू गोड़ (राजपुर) (२९) विशनाथ (लखनपुरी) (३०) बुधराम गोड़ (उमरगांव) (३१) शोभाराम गोड़ (कसपुर) (३२) बुलबुल गोड़ (डोंगरडुला) आदि प्रमुख थे। (८)

उपर्युक्त सभी सत्याग्रहियों को हाथ में हथकड़ी डालकर ३६ मील दूर धमतरी पैदल ले जाकर और वहाँ से रायपुर सेंट्रल जेल ले जाया गया। सत्याग्रहियों को हथकड़ी पहनाकर पैदल धमतरी में लाते थे, तब उनके स्वागत के लिए बच्चे, बूढ़े और महिलाएँ अपने–अपने घरों के सामने बिलाई–माता मंदिर से रेलवे स्टेशन तक खड़ी रहती थीं। आरती उतारतीं, गुलाल लगाती और फूल माला पहनाकर उनका हौसला बढ़ाती थीं। स्वागत करते लोगों को भी पुलिस परेशान करती और माहौल को बिगाड़ने का कार्य करती थी। परन्तु उन्हें इसमें कामयाब होने नहीं दिया गया। बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव इन गतिविधियों पर निगाह रखे हुए थे ताकि किसी प्रकार की कोई घटना न घटे। इस प्रकार नगरी–सिहावा के वीर सपूतों को सम्मान बिदाई दी जाती थी।(९)

नगरी में पुलिस प्रशासन द्वारा कठोर दमनचक्र चलाया गया। लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। जहाँ जो मिल जाता उनकी वहीं पिटाई करते थे। आई.सी.एस. उपदण्डाधिकारी बेली स्वयं निर्दोष ग्रामीणों की चाबुक तथा हंटर से पिटाई करते थे। घरों में घुसकर सामानों को नुकसान पहुंचाते और महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार करते थे। पुलिस बल द्वारा नगरी और आस–पास के गांवों में बर्बरता का जो तांडव किया गया, उससे लोग बिलकुल विचलित नहीं हुए। सहनशीलता का परिचय देते हुए पुलिस ज्यादती विरोध किये। बर्बरता पूर्वक कार्यवाही करने के बाद भी प्रशासन संतुष्ट नहीं हुई। तीन महीने तक नगरी में पुलिस बल तैनात कर दिया गया। साथ ही जबर्दस्ती ग्रामीणों से चल–अचल संपत्ति पर टैक्स वसूला गया। (१०)

नगरी का जंगल सत्याग्रह जिस समय प्रारंभ हुआ, उस समय तहसील के सभी वरिष्ठ नेता अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने गये हुए थे। वापस धमतरी आये तब इस घटना की जानकारी हुई तब सुंदरलाल शर्मा, नारायणराव मेघावाले , नत्थूजी जगताप, मास्टर मोहम्मद अब्दुल करीम तत्काल स्थानीय स्वयं सेवकों के साथ, जिनमें पं. शिवबोधन प्रसाद, पं. गिरधारी लाल तिवारी, सेठ रामलाल अग्रवाल, रामजीवनलाल सोनी, श्यामलाल सोनी, ठा. बल्देवसिंह, शोभाराम देवांगन, नोहरसिंह यदु, लाल साहेब, रामगोपाल चौबे, बिहारी लाल तिवारी, मोहनलाल मेहता तथा राष्ट्रीय विद्यालय के स्वयं सेवक नगरी के लिए प्रस्थान किये। इनके नगरी पहुंचने से लोगों के उत्साह में वृद्धि हुई। इन नेताओं ने उन्हें सलाह दिया कि प्रांतीय एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की स्वीकृति तक सत्याग्रह स्थगित रखें। उन्हें आश्वासन दिया गया कि यथाशीघ्र स्वीकृति प्राप्त कर ली जावेगी। यह उल्लेख करना आवश्यक होगा कि अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन के प्रस्ताव के अनुसार सत्याग्रह प्रारंभ करने तथा आदेशित करने का कार्य केवल गांधी जी को दिया गया था । तहसील के नेताओ के बाद पं.रविशंकर शुक्ल नगरी पहुंचकर पुलिस बर्बरता की निंदा की और लोगों के प्रति सहानुभूति प्रकट की।

सत्याग्रह को रोकने में ये नेता सफल तो हो गये, परन्तु चुपचाप रहने वाले नहीं थे। पुलिस बल के साथ ये भी नगरी में डेरा डालकर बैठ गये। प्रशासन की अन्याय पूर्ण कार्यों की तीव्र आलोचना की। गांव–गांव घूम–घूमकर सार्वजनिक सभाओं के माध्यम से जन–जागरूकता लाने का कार्य किया। परिणाम स्वरूप वन विभाग को अपनी कार्यप्रणाली में परिवर्तन लाना पड़ा। कम मजदूरी पर काम करवाना बंद कर, उचित मजदूरी दी जाने लगी ओर बेगार–बंद करना पड़ा। (११)

सन् १९३० ई. में गांधी जी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया गया। तब मध्यप्रांत

कांग्रेस कमेटी ने जनवरी १९२२ ई. के नगरी जंगल सत्याग्रह से प्रभावित होकर पूरे प्रांत में जंगल सत्याग्रह करने का निर्णय लिया कि हजारों की संख्या में लोग कुल्हाड़ी लेकर जंगलों में प्रवेश करेंगे और लकड़ी काटकर ब्रिटिश हुकूमत का विरोध करेंगे। जंगल सरकारी संपत्ति रही है और उन्हें काटना गैर कानूनी रहा है। इसके लिए शी p स्थि नेताओं की स्वीकृति आवश्यक थी। प्रांतीयस्तर के नेता स्वीकृति के लिए इलाहाबाद गये। जहाँ पं. मोतीलाल नेहरू एवं अन्य शीर्षस्थ नेताओं ने शंका व्यक्त किया कि अहिंसक आंदोलन में कुल्हाड़ी का क्या काम? नेताओं को समझाया गया कि कुल्हाड़ी मनुष्यों पर नहीं पेड़ों पर गिरेगी। काफी विचार—विमर्श बाद जंगल सत्याग्रह करने की अनुमति दी गयी। (१२) फलतः १९३० के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान पूरे मध्यप्रांत (छ.ग. सम्मिलित) में जगह—जगह जंगल—सत्याग्रह किया गया। जो जनवरी १९२२ नगरी के जंगल सत्याग्रह से प्रेरित था।

इस प्रकार नगरी—सिहावा जंगल सत्याग्रह स्वंतत्रता आंदोलन की बड़ी महत्वपूर्ण घटना है। जिसने मार्गदर्शन का कार्य किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान पूरे मध्यप्रांत में जगह—जगह जंगल—सत्याग्रह के द्वारा विदेशी हुकूमत का विरोध किया गया। अंग्रेजी शासन द्वारा सत्याग्रह को दबाने के लिए जिस क्रूरता का परिचय दिया गया उससे अंचल के लोगों में नयी स्फूर्ति एवं चेतना जागृत हुई। स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेकर मातृभूमि को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। श्यामलाल सोम इस सत्याग्रह के जनक थे, जिन्होने १९४७ तक स्वतंत्रता आंदोलन के प्रत्येक गतिविधियों में भाग लिया। जिनके नेतृत्व में अंचल के लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। ऐसे व्यक्तित्व के योगदान को आजादी के ६९ वर्ष बाद भी नजर अंदाज कर यथोचित स्थान नहीं दिया जाना मातृभूमि के लिए समर्पित महापुरूषों का अपमान है ।

सदर्भ सूची

(१) राणा, जी.आर., इतिहास के झरोखे में धमतरी, ९ अप्रैल १९९९, १४ मई १९९९ साप्ताहिक देशबंधु सोम, लीलाधर, (सुपुत्र श्यामलाल सोम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) व्यक्तिगत साक्षात्कार दिनांक १८.०८.२०१३
(२) गुप्त, प्यारेलाल, प्राचीन छत्तीसगढ़, पृ. १६४, १९७३
(३) देवांगन शोभाराम, भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में धमतरी तथा तहसील का सक्रिय योगदान (हस्तलिखित पाण्डुलिपि), पृ. १५४, १९७०
(४) मिश्र, रमेन्द्रनाथ, ब्रिटिशकालीन छ.ग. का प्रशासनिक इतिहास, पृ. १६१, १९८१
(५) शुक्ल, अशोक, छ.ग. का राजनैतिक इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन, पृ. १२६, १९८३
(६) देवांगन,शोभाराम, पूर्वोक्त, पृ. १५८, १९७०
(७) देवांगन,शोभाराम, उपरोक्त, पृ.. १५९, १९७०
(८) स्मारिका, संपादक, बघेल नरेश सिंह, धाता, शासकीय महाविद्यालय नगरी, पृ. ४५ मार्च २००३ लेख सोम निर्मला — श्यामलाल सोम के जंगल सत्याग्रह का इतिहास
(९) देवांगन,शोभाराम, पूर्वोक्त , पृ. १६१, १९७०
(१०)देवांगन,शोभाराम, उपरोक्त , पृ. १५८, १९७०
(११)देवांगन,शोभाराम, उपरोक्त , पृ. १५९, १९७०
(१२)स्मारिका, स्मरण, मध्यप्रदेश शासन पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र शताबदी समारोह भोपाल, पृ. ११, २००१.

ISSN 2394-5303

International Multilingual Research Journal

Printing Area

Issue-01, Vol-01, January 2015

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

Dr. H. Thakur

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

❖ 'प्रींटींग एरीया' हे मासिक मालक व प्रकाशक अर्चना राजेंद्र घोडके यांच्या हर्षवर्धन पब्लिकेशन प्रायव्हेट लिमीटेड, लिंबागणेश, जि. बीड महाराष्ट्र येथे मुद्रीत करुन संपादक डॉ. बापू गणपत घोलप यांनी मु.पो.लिंबागणेश, ता.जि.बीड–४३११२६ येथे प्रकाशित केले.

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126

Mobi. 09850203295, 07588057695

❖ Editorial Board ❖

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar **(Japan)**
2) M.Saleem, Sialkot **(Pakistan)**
3) Dr. Momin Mujtaba **(Saudi Arebia)**
4) Dr. Anupama Alvikar **(Turkey)**
5) N.Nagendrakumar **(Sri Lanka)**
6) Dr. Wankhede Umakant **(Maharashtra)**
7) Dr. Dixit Kalyani **(Lucknow)**
8) Dr. Basantani Vinita **(Pune)**
9) Dr. Upadhya Bharat **(Sangali)**
10) Dr. J. David Livingston **(Thirupathy)**
11) Dr. Kadu S. V. **(Akola)**
12) Jubraj Khamari **(ORISSA)**
13) Krupa Sophia Livingston **(Tamilnadu)**
14) Dr. Wagh Anand **(Aurangabad)**
15) Dr. Ambhore Shankar **(Jalna)**
16) Dr. Ashish Kumar **(Delhi)**
17) Dr. Lata Kumar, Meerut **(U.P.)**
18) Dr. Rajesh Chandra Paliwal **(Uttrakhand)**
19) Dr. Jayshri Jambusia **(Gujrat)**
20) Prof. Ghatkar D. T. **(Latur)**
21) Prof.Surwade Yogesh **(Satara)**

❖ Advisory Committee ❖

1) Dr. Chodhari N.D. **(Kada)**
2) Dr. Yallawad Rajkumar **(Parli v.)**
3) Dr. Yerande V. L.**(Nilanga)**
4) Dr. Shinde Sunil **(Parbhani)**
5) Dr. Awasthi Sudarshan **(Parli v.)**
6) Ghante Pradipkumar , **Solapur (MS)**
7) Punit Kumar, **Lucknow (U.P.)**
8) Dheeraj Kumar Pandey, **Varanasi (U.P.)**
9) Prof. Machale Ravinda **(Parli v.)**
10) Vipin Panday, **Kanpur (U.P.)**
11) Dr.V.Aruna, **Chennai (Tamilnadu)**
12) Dr. Avineni Kishor, **Kuppam(Kerala)**
13) Prof. Deshmukh Suryakant **(Parli v.)**
14) 23) Dr. Dhaigude R. B. **(Parli v.)**
15) Dr. Rajendra Acharya **(Parli v.)**
16) Dr. Manoj Kr Sharma **(Haryana)**
17) Dr. Arbind Kumar Choudhary **(Assam)**
18) Dr. Piku Chowdhury **(KOLKATA)**
19) Aparna D. Kulkarni **(Pune)**
20) Dr. Maheswar Panda **(Orissa)**
21) Dr. Vidya Gulbhile **(M.S.)**

❖ ❖ ❖

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university,institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Vidyawarta is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at Beed (Maharashtra, India)

❖ ❖ ❖

अक्षरजुळवणी व पृष्ठरचना: अर्चना घो. ॥ मुखपृष्ठ शेख जहिर आणि अशोक कळवणकर, पुणे

Printing Area

All the participants and members will get their One copy of Vidyawarta by registered post on their address. Plz Send your full Postal Address With Pin code & Mobile Number,Email Etc.

Payment mode by Online (NEFT) Or M.O. Or Chaque

Article Publication Fee : 800 /- (For One Copy)

Next Par Copy 300/-

One Year Subscription Fee : 1200/-

For the article publication fees can be sent in fauour of

Harshwardhan Publication Pvt. Ltd.
State Bank of India, Parli Vaijnath
Dist. Beed (Maharashtra)
A/C No: 33 65 97 13 509
IFSC Code : SBIN0003406

Ghodke Archana Rajendra
Bank Of Maharashtra, Parli V.
Dist. Beed (Maharashtra)
A/C No: 60 12 79 78 241
IFSC Code : MAHB0000044

Editoral Contact:
Harshwardhan Publications Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed (M.s.) Pin-431126
075 88 05 76 95 / 098 50 20 32 95
vidyawarta@gmail.com
Printingareahp@gmail.com

http://www.vidyawarta.blogspot.com

Printing Area

|| Index ||

01) A Life-Text of the Development of Identity in Benazir....
Dr Khedkar K. P, Parli -v, Dist. Beed. || 09

02) The Kailash Temple - A Master Piece of Ancient Indian...
Prof. Bindge S.M. , Nanded. || 13

03) A STUDY OF JOB RELATED STRESS AMONG ADHOC TEACHERS IN ..
Indu and Sandeep Babbar, Delhi || 16

04) A Comparative Study on Quality of Work Life, Job Satisfaction ..
Ashok Gaur , Vallabh Vidyanagar, Gujrat || 19

05) Role of Teachers in Human Rights Education: Indian Scenario..
Dr. Rajesh K. Mahajan, Hoshiarpur || 26

06) Portrayal of Women in Women Magazines: A Comparative Study...
Dr. Sunita Kaushal, Chandigarh || 30

07) E-GOVERNANCE IN INDIA – PROBLEMS ANDACCEPTABILITY....
Mr. Dharmendra Kumar Meena, Durgapur (Raj.) || 35

08) GLOBALIZATION AND LEGAL PROFESSION: A CRITIQUE...
Mr. Rahul Mishra || 38

09) RATIONAL EMOTIVE THERAPY : DEVELOPMENT AND MODERN USES...
DR. RITU MITTAL, Haldwani || 45

10) A Critical Study of Indian Writer Bhabani Bhattacharya's Novel...
Dr. P. S. Nargesh, (Dhar) M.P. || 49

11) READING INTEREST AND FAMILY ENCOURAGEMENT: A RESEARCH...
Dr.(Mrs.) Prabha Vig, Komal Sharma, Chandigarh || 52

12) RELIGION OF THE ZELIANGRONG TRIBE OF NORTH EAST INDIA
Dr. ATHOI KAMEI || 58

13) Impact of ICT and their services in Academic libraries
Mrs. Pushpa Sharma, Ghaziabad, U.P. || 62

http://www.vidyawarta.blogspot.com

14) ROLE OF HIGHER EDUCATION IN WOMEN EMPOWERMENT
Dr. MANOJ PRATAP SINGH, PRIYANKA SINGH, KANPUR || 67

15) A STUDY OF VIOLENCE AGAINST WOMEN IN TELL IT TO THE TREES..
SWATI SHARMA, Haridwar || 69

16) Cost and returns from broiler production in Azamgarh
L.C. VERMA, O.P. SINGH AND S.K.S. RAGHUVANSI, Varanasi || 75

17) Indian Financial System & Indian Banking Sector: A Review
Priyanka Singh, & Dr. Shikha Trivedi, Indore || 80

18) A Study of Vocational Interest of Intermediate Girls In ...
Shushum Shivhare , Alwar, Rajasthan. || 88

19) नव्वदोत्तरी ग्रामीण मराठी कवेतून घडणारे समाजदर्शन
प्रा. डॉ. आर. एम. केदार,गाडेगाव (तेल्हारा) || 93

20) `वाचन` एक ज्ञान प्रक्रिया
प्रा. डॉ. शंकर राऊत,आकोट जि- अकोला || 95

21) भारतीय शास्त्रीय संगीतातील `बंदिश` एक चिंतन
डॉ. शिरिश कडू, अकोला || 97

22) बँकींग सेवांमधील ATM Card व Credit Card धारकातील लिंगभेद
श्रीमती संपदा काळे, डॉ.अनघा पाठक, कोल्हापूर. || 99

23) महिलांचे आर्थिक समक्षीकरण व जलस्वराज प्रकल्प
प्रा. श्रीमती पाटील प्रमिला जयवंतराव, कोल्हापूर. || 104

24) कौटूंबिक हिंसाचारापासून महिलांचे संरक्षण अधिनियम २००५
प्रा. रविंद्र अर्जुन पवार, वाशिम || 109

25) महाराष्ट्रातील दलीत महीलांवरील अत्याचार - एक दृष्टिक्षेप
नरसिंग आबासाहेब पवार, औरंगाबाद. || 110

26) कुमारी मातांवर प्रतिबंध व पुर्नवसन, एक अहवाल
प्रा. वसंत मोतीराम राठोड, वाशिम || 114

27) भारतीय संस्कृतीचा मराठी संस्कृतीवर होणारा प्रभाव
प्रा. त्रिभुवन पल्लवी राजेंद्र || 115

28) आधुनिक युग में प्राचीन मूल्य की उपादेयता
डॉ. डी.एस. मरावी, जांजगीर || 117

29) समकालीन कथाकार कैलाश बनवासी
डॉ श्रीमती कृष्णा चटर्जी, लता मारकंडे, दुर्ग(छ.ग.) ||120

30) आधुनिक कबीर
प्रा.डॉ. बेबले ए.जे., भोकरदन जिल्हा जालना. ||122

31) इस्पात उद्योग में पूँजी प्रबंधन विश्लेषण स्टील अथॉरिटी...
डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता , डॉ. गोविन्द प्रसाद गुप्ता,दुर्ग,(छ.ग.) ||125

32) ओ वक्तव्य, ओ उद्गार, ओ घोषणाएं : नागार्जुन
डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी, उरई, जालौन(उ.प्र.) ||135

33) गठबन्धन सरकार : समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ
डॉ० विप्लव, Bulandshahr ||140

34) मतदान व्यवहार का अध्ययन एवं विश्लेषण छत्तीसगढ़ राज...
Dr. Shrimati Rima Rani Das, Balodabazar ||146

35) देवास जिले के सूक्ष्म उद्योगों की प्रगति का विश्लेषण
डॉ. भारत सिंह गोयल, श्रीमती ज्योति नवीन मोहरी , उज्जैन (म.प्र.) ||152

36) अज्ञेय कृत नयी काव्यालोचना एवं सप्तकीय भूमिकाएं : एक विश्लेशण
डॉ. माधुरी पाण्डेय, कटनी (म.प्र.) ||155

37) गुण्डाधुर एवं १९१० ई. का बस्तर का अदिवासी आन्दोलन
डॉ सरिता उइके, कांकेर (छ.ग.) ||159

38) वृहत्तर आर्य समाज में आर्येत्तर जनजातियों – जातियों का संस्तरीकरण
डॉ. मंजुला पाण्डेय, मरवाही, जिला बिलासपुर ||162

39) अन्तर्राष्ट्रीय संगठनो
रजनीकांत आर. राठोड, शहेरा, (गुजरात) ||167

40) तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल
प्रा.सुलभा शेंडगे, लातूर ||170

41) हो लोक साहित्य में सृष्टि पर्व (मागेपोरोब) गीत का विशेष महत्व
दिनेश हाईबुरू, राँची विश्वविद्यालय, राँची। ||172

42) ध्वनि प्रदूषण कारण और निदान
डॉ. अभय सिन्हा, जॉजगीर (छ.ग.) ||176

43) केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में किसान जीवन का यथार्थ
प्रा.उमाटे साईनाथ तुकाराम ,किनवट जि.नांदेड ||179

44) असहयोग आंदोलन में धमतरी जिला का योगदान || 181
डॉ.(श्रीमती) हेमवती ठाकुर, जिला धमतरी (छ.ग.)

45) महिला सशक्तिकरण वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाएं || 186
Smt. Cresencia Toppo, sitapur, Dist. Surguja (C.G.)

46) संतालों में सेंदरा || 191
डुमनी माई मुर्मू, राँची विश्वविद्यालय, राँची

47) बुन्देलखण्ड क्षेत्र की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियां || 193
डॉ० अरूण कौशिक, ऊषा राय

48) मध्यप्रदेश के पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र के आर्थिक विकास का अध्ययन् || 196
डॉ सुनील शर्मा, जिला–खरगोन म०प्र०

49) उपनिषद कालीन सामाजिक चेतना–प्राचीन भारत के संदर्भ में। || 198
जुरन सिंह मानकी, रांची, झारखण्ड।

50) झारखण्ड की बिरहोर जनजातियों का जनसंख्या || 200
ललसिंह बोयपाई, रांची विश्वविद्यालय, रांची।

51) स्वामी विवेकानन्द का मानव सम्बन्धी अवधारणा... || 201
शांति नाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

Interdisciplinary Multilingual Referred Journal
Contact : 098 50 20 32 95

http://www.vidyawarta.blogspot.com

International Multilingual Research Journal
विद्यावार्ता ™

दूसरी ओर इन्हीं वर्गों की कमाई पर उच्च वर्ग वैभव-विलासमय, ऐशो-आराम का जीवन बीता रहा है । यही कारण है कि केदार जी कविता किसान,मजदूर और श्रमिक वर्ग के जीवन की त्रासदियों की बोलती तस्वीरें खींचती हैं । जिनमें उक्त वर्ग के जीवन की मजबूरियों, विवशताओ, विकृतियों एवं संघर्षों के गहरे रंग उकेरे हैं ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि केदारनाथ अग्रवाल जनजीवन को अपन्नी कविता का विषय बनाते है गांव के किसान,मजदूर, श्रमिक उन्नकी कविताओं में प्रमुखता से विद्यमान हैं । अतः उन्नकी प्रतिबध्दता मूलतः शोषितों, श्रमशील कृषकों,मजदूरों और श्रमिकों के प्रति हैं । वे शोषित, पीड़ित जनता के उत्थान एवं खुशहाली के लिए प्रतिबध्द हैं । उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कविवर केदारनाथ अग्रवाल के काव्य की भाव-भूमी जनवादी भाव -बोध एवं प्रगतिशील चेतना से युक्त कवि की हैं ।

➢ संदर्भ ग्रंथ :-

१फूल नहीं रंग बोलते हैं -केदारनाथ अग्रवाल पृ .क्र ७४

२) हैं केदार खरी -खरी -केदारनाथ अग्रवाल पृ .क्र ७४

३गुलमेंहदी -केदारनाथ अग्रवाल पृ .क्र ७४

❖❖❖

Interdisciplinary Multilingual Referred Journal

Contact : 098 50 20 32 95

Vidyawarta

44

असहयोग आंदोलन में धमतरी जिला का योगदान

डॉ.(श्रीमती) हेमवती ठाकुर

सहायक प्राध्यापक इतिहास

बाबू छोटेलाल शास.स्नात.महा.

जिला धमतरी (छ.ग.)

===========****************===========

६ जुलाई सन् १९९८ को मध्यप्रदेश शासन के अंतर्गत धमतरी को एक राजस्व जिला का दर्जा दिया गया था । वर्तमान में छत्तीसगढ़ के २७ राजस्व जिलों में से एक प्रमुख जिला है। प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का केन्द्र धमतरी गोंडवाना का गढ़ था । खाईयुक्त किले का अवशेश आज भी स्पश्टतः दिखाई देता है । गोंड़ राजाओं की राजधानी धमतरी मराठा शासन काल में एक परगना था । ब्रिटिश शासन काल में सन् १८५५ में तहसील बनाया गया । २७ जुलाई सन् १८८१ ई को नगरपालिका परिशद् का गठन किया गया । छत्तीसगढ़ का सबसे पुराना तहसील और नगरपालिका होने का गौरव प्राप्त है । १५ अगस्त २०१४ को मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह द्वारा नगरनिगम बनाने की घोशणा की गयी । इस प्रकार धमतरी का इतिहास एंव संस्कृति बहुत महत्वपूर्ण रहा है ।

स्वतंत्रता आंदोलन में धमतरी जिला का अविस्मिरणीय योगदान रहा । स्वतंत्रता आदोलन की प्रत्येक गतिविधियों में जिले के वीर सपूतों ने बढ़—चढ़ कर भाग लिया और कठोर जेल यातनाएँ सहन की। सन् १९०५ ई. का बंगाल विभाजन की घोषणा ने लोगों को उद्वेलित कर दिया । यद्यपि यहाँ जन जागरूकता १९ वीं शताबदी के उत्तरार्द्ध से ही परिलक्षित होने लगी थी सन् १९२० का कंडेल नहर सत्याग्रह धमतरी जिला का स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में ही नहीं

बल्कि पूरे देश के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में अविस्मरणीय रहा है । असहयोग आंदोलन का प्रारंभ होने के पूर्व अंग्रेजी शासन के साथ असहयोग कर सम्पूर्ण देश के लिए मार्गदर्शन का कार्य किया ।

जिला मुख्यालय धमतरी से १८ कि.मी. दूर ग्राम कंडेल स्थित है । सन् १९१२—१५ ई. में महानदी नहर योजना के अंतर्गत रूद्री बैराज बनाया गया । जहाँ से नहर नाली द्वारा आस—पास के गांवों के खेतों में सिंचाई की जाती थी । कंडेल गांव के खेतो में भी इसी नहर नाली से सिंचाई की जाती थी । सिंचाई विभाग के अधिकारी गांव के किसानों के साथ १० वर्ष के लिए सिंचाई कर संबंधी समझौता करना चाहते थे। जिसे गांव वालों ने मनाकर दिया क्योंकि जितनी राशि में समझौता करते, उतनी राशि में हमेशा के लिए तालाब बनाया जा सकता था । यह गांव के किसानों के द्वारा अंग्रेजी प्रशासन के साथ किया गया असहयोग था । गांव वालों द्वारा सिंचाई कर संबंधी समझौता करने से इंकार कर देने से अंग्रेजों ने इसे अपना अपमान समझा। एक रात नहर नाली काटकर पानी खेतों में बहा दिया । जिस रात को यह कार्य किया गया उस रात मूसलाधार बारिश हुई । घनघोर बारिश होने के बाद भी कोई किसान नहर नाली काट कर पानी चोरी करे, यह असंभव था। सिंचाई विभाग के अधिकारियों ने गांव के किसानों पर पानी चोरी का आरोप लगाकर ४,३०४.०० रूपये जुमनि की राशि थोप दी । गांव के किसानों ने बैठक रखी और गांव के मालगुजार बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव के नेतृत्व में विरोध करने का निर्णय लिया, जो कंडेल नहर सत्याग्रह के नाम से देश में विख्यात है।

जुमनि की राशि ४,३०४.०० रूपये वसूलने के लिए गांव वालों की मवेशियों को कुर्क कर नीलाम करने आस—पास के गांवों के पशु बाजारों में ले जाया गया, लेकिन प्रशासन कामयाब नहीं हुई । गांव वालों पर अत्याचार कर ज्यादती करने लगे। वरिष्ठ नेताओं को इसकी जानकारी दी गयी । नेताओं ने बैठक कर निर्णय लिया गया कि सत्याग्रह कांग्रेस के नियमों के अनुसार चलाया जाए और जानकारी गांधी जी को दी जाए। प्रशासन ने दमनचक्र चलाते हुए बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव और उनके चचेरे भाई लालजी श्रीवास्तव को बंदी बना दिया । पूरा अंचल देशभक्ति से ओतप्रोत था । ब्रिटिश प्रशासन का दमनचक्र बढ़ते जा रहा था । गांधी जी को सत्याग्रह के बारे में पूर्ण जानकारी देने और धमतरी लाने के लिए पं. सुदरलाल शर्मा और नत्थूजी जगताप २ दिसम्बर १९२० ई को कलकत्ता के लिए रवाना हुए। गांधी जी असहयोग आंदोलन चलाने के लिए माहौल बनाने देश के विभिन्न स्थानों का दौरा कर रहे थे। गांधी जी कलकत्ता से दक्षिण भारत चले गये थे। जहाँ धमतरी के दोनों नेताओं की मुलाकात हुई । कंडेल नगर सत्याग्रह के बारे में विस्तार से जानकारी देने के साथ धमतरी आने के लिए अनुरोध किया, गांधी जी सहर्ष तैयार हो गये ।

गांधी जी के धमतरी आने की खबर प्रशासन को लगी तब रायपुर के डिप्टीकमिश्नर ने जाँच समिति गठित कर तत्काल जाँच के आदेश दिये । जाँच में आरोप को निराधार पाया गया, फिर भी राशि ४,३०४.०० रूपये वसूलने का प्रयास किया गया । राशि को तीन चौथाई, आधा फिर एक चौथाई कर दिया गया । परन्तु गांव वालों ने देने से स्पष्ट इंकार कर दिया । अंततः पूरी राशि माफ कर दी गयी । इस प्रकार कंडेल गांव के किसानों द्वारा किया गया सिंचाई कर या नहर कर सत्याग्रह सफलता पूर्वक समाप्त हुआ । गांधी जी का असहयोग आंदोलन विषयक प्रस्ताव पारित होने पूर्व कंडेल गांव के किसानों ने अंग्रेजों के साथ अहसयोग कर मार्गदर्शन का कार्य किया । यही कारण था कि नागपुर अधिवेशन में असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव भारी बहुमत से पारित हुआ जो नेता जैसे मि. जिन्ना , विपिनचंद पाल आदि असहयोग के , पक्ष में नहीं थे, वह भी अहसयोग आंदोलन के पक्ष में प्रस्ताव पारित करने में सहयोग दिये । यह कहीं न कहीं कंडेल नहर सत्याग्रह का प्रभाव रहा होगा ।

कंडेल नहर सत्याग्रह की सफलता पूर्वक समाप्ति के पश्चात दिसम्बर १९२० ई में कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन हुआ जहाँ असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव भारी बहुत से पारित हुआ । असहयोग आंदोलन का दो प्रकार का कार्यक्रम था (१) ध्वंसात्मक (नकारात्मक) (२) रचनात्मक (सकारात्मक)। दोनों ही प्रकार के कार्यक्रमों में धमतरी जिला का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

जनवरी १९२१ ई. में नागपुर में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की गयी । धमतरी जिले के २५—३० उत्साही कार्यकर्ताओं ने वहाँ प्रशिक्षण प्राप्त किया और गांव—गांव में जाकर आजादी की अलख जगाया। इनमें गिरधारीलाल श्री श्यामलाल सोम, हरखराम सोम, परदेशी राम, शोभाराम, रामदुलारे कुंभकार, विशम्भर पटेल इत्यादि प्रमुख थे।

सरकारी पदवी एवं पदों का त्याग :—

नत्थू जी जगताप २४ गांवों के मालगुजार थे। उन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा दरबारी की पदवी दी गयी थी । लोकप्रिय दरबारी माने जाते थे। असहयोग आंदोलन प्रारंभ होते ही उन्होंने दरबारी की पदवी का त्याग कर प्रशासन के साथ—असहयोग किया । मालगुजार बाजीराव कश्दत्त और सेठ उस्मान अब्बा ने ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के पद का त्याग कर देश सेवा का परिचय दिया । जिले में कई लोगों ने वकालत छोड़ा, तो कईयों ने सरकारी नौकरी का परित्याग किया ।

सरकारी स्कूलों का बहिश्कार :—

असहयोग आंदोलन प्रारंभ होते ही असहयोग विशयक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जिले के कई विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल एवं कालेजों का बहिस्कार किया । खुशाल राव पवार, बिसाहूराव बाबर ने नागपुर हिस्लाप कालेज, श्यामलाल सोम हरखराम सोम, बाली ठाकुर विशम्भर पटेल, बी.टी. आई रायपुर, शंकरराव हिर्शीकर नागपुर मेडिकल कालेज , भोपालराव पवार, हीरजी शाह, अंजोर राव कृदत्त इत्यादि विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार किया और आजादी की लड़ाई में शामिल हो मातृभूमि की सेवा में लग गये ।

कौंसिल बहिष्कार :—

सन् १९१९ के अधिनियम के द्वारा प्रांतों में द्वैत शासन की व्यवस्था की गयी थी । इसे लागू करने चुनाव होना था । रायपुर जिला में दो निर्वाचन क्षेत्र बनाया गया था । पहला उत्तरी क्षेत्र और दूसरा दक्षिणी क्षेत्र । दक्षिणी क्षेत्र के अंतर्गत वर्तमान धमतरी और महासमुंद जिला शामिल था । यहाँ पहली बार जब चुनाव की तिथि घोशित की गयी एक भी उम्मीदवार सामने नहीं आये और शासन के साथ असहयोग किये । दिसम्बर माह में चुनाव की तारीख तय की गयी, जिसमें धमतरी के बाजीराव कृदत्त निर्वाचित हुए। लेकिन होली त्योहार के अवसर पर गांधी जी की गिरफ्तारी के विरोध में पद से त्याग पत्र दे दिया । त्याग पत्र देने और असहयोग करने के कारण सार्वजनिक स्थान में सम्मानित कर "लोकप्रिय की उपाधि से विभूषित किया गया । तीसरी बार फिर चुनाव की तारीख घोषित की गयी, एक भी उम्मीदवार सामने नहीं आये। इस प्रकार कौंसिल बहिष्कार कार्यक्रम में धमतरी जिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना :—

स्वतंत्रता आंदोलन के अंतर्गत असहयोग आंदोलन के तहत् रचनात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत राश्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गयी । धमतरी में जुलाई १९२० ई. में ही एक "नूतन सार्वजनिक माध्यमिक शाला की स्थापना कर असहयोग आंदोलन विशय प्रस्ताव पारित होने के पूर्व इस दिशा में कार्य किया गया । परन्तु अर्थाभाव के कारण विद्यालय को १० महीनें में ही बंद करना पड़ा। इस कमी को पूरा करने और विद्यार्थियों को शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराने बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव के द्वारा पुनः प्रयास किया गया । उन्होंने जुलाई १९२१ में अपने स्वयं के खर्च पर धमतरी के कोष्टापारा स्थित निवास स्थान में राष्ट्रीय माध्यमिक शाला की स्थापना की । राष्ट्रीय माध्यमिक शाला में बनारस, दिल्ली और देश के विभिन्न भागों के अध्यापक अध्यापन के लिए आते थे । यहाँ कताई—बुनाई, कारीगरी के साथ—साथ देशभक्ति का पाठ पढ़ाया जाता था । यहाँ के विद्यार्थियों ने मादक पदार्थों की दुकानों पर शांतिपूर्वक पिकेटिंग कर इस सामाजिक बुराई को दूर करने के साथ—साथ एक स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया । राष्ट्रीय शिक्षण समिति जबलपुर द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार परीक्षा ली जाती थी । हिस्लाप कालेज नागपुर की पढ़ाई छोड़कर आने वाले बिसाहू राम बाबर अवैतनिक शिक्षक रहे। इसी विद्यालय से पढ़कर निकले भोपालराव पवार, विनायकराव जाचक, शोभाराम देवांगन और स्वयं बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव अवैतनिक अध्यापक रहे। डा. प्यारेलाल सिंह छ:माह इस राष्ट्रीय विद्यालय के अवैतनिक प्रधान पाठक रहे । इस विद्यालय से पढ़कर

निकले विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़—चढ़कर भाग लिया और त्याग एवं देशभक्ति का परिचय दिया । धन के अभाव के कारण सन् १९२४ ई. में इस विद्यालय को भी बंद करना पड़ा ।

राष्ट्रीय पंचायत का गठन :—

राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना असहयोग आंदोलन का प्रमुख रचनात्मक कार्यक्रम था। जिसमें धमतरी जिला पीछे नहीं रहा । फरवरी १९२१ ई में मालगुजार बाजीराव कृदत्त नें अपना निवास स्थान मराठा पारा स्थित रामनिवास को अदालती कार्यवाही के लिए समर्पित कर दिया । जिसे कचहरी के नाम से जाना जाता था, विभिन्न प्रकार के विवादों का नि:शुल्क निपटारा किया जाता था ।

स्वदेशी प्रचार एवं खादी केन्द्र की स्थापना :—

असहयोग आंदोलन में विदेशी वस्तुओं का बहिस्कार और स्वदेशी प्रचार का कार्य किया गया । कई बैलगाड़ी विदेशी माल जब्त कर जला दिये गये । अपने—अपने घरों में खादी के प्रयोग पर बल दिये । जिले के प्रमुख नेता अपने घरों में खादी कपड़ा की बुनाई करते और खादी वस्त्र ही धारण करते थे।

स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार—प्रसार की दिशा में बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव ने अपने भवन में अपनी जमा पूंजी ३० हजार रूपये और माता के गहने बेचकर ३०—४० चरखें मंगवाये। आस—पास के गांवों के युवा, वृद्ध महिलाएँ और पुरूष चरखा चलाने आते थे। बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव स्वयं चरखा चलाते थे। लोग चरखा चलाते समय देश प्रेम की भावना से ओत—प्रोत रहते और गाना गाते थे ।

नई धरन हँस्या नई धरन टँगिया
लेबो सुराज हम लेबो सुराज ।
बैरी के लोहा ला मरत ले सेंकबों
लेबो सुराज हम लेबो सुराज ।।

तहसील कांग्रेस कमेटी के उपमंत्री दाउ डोमारसिंह नंदवंशी इस कार्य में हमेशा आगे रहते थे। उन्होंने अपने हाथ से सूत कातकर धोती तैयार की, जिसे रायपुर के खादी प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इससे लोगों को प्रेरणा मिली और अधिक से अधिक संख्या में लोग चरखा चलाने आने लगे। दो—तीन महीने में ही चरखों की संख्या १५०—२०० हो गयी । यहाँ तैयार कपड़े की मांग दूर—दूर तक थी, परन्तु धन की कमी के कारण बंद करना पड़ा ।

मद्य निशेध :—

जनवरी १९२१ में रायपुर जिले के आबकारी दुकानों की नीलामी की गयी, तब धमतरी तहसील था परन्तु धमतरी के दुकानों की नीलामी नहीं हो पायी क्योंकि यहां के सकिय कार्यकर्ताओं ने नीलाम होने ही नहीं दिया और शासन प्रशासन के साथ असहयोग किया । ऐसी स्थिति में प्रशासन ने मुख्यालय से २८ मील दूर घने जंगलों से आच्छादित ग्राम गट्टासिल्ली को नीलामी के लिए चुना, और सभी ठेकेदारों को वहाँ आमंत्रित किया । इसकी खबर धमतरी के प्रमुख नेताओं के पास पहुंची । रातों—रात दो बैलगाड़ी में सवार होकर नारायणराव मेघावाले, शोभाराम देवांगन, डा. बल्देव सिंह और खिलाफत कमेटी के मंत्री मोहम्मद अबदुल करीम स्वयं सेवकों के साथ प्रात: ९ बजे गट्टासिल्ली पहुंचे। वहाँ उपस्थित ठेकेदारों को बोली न लगाने के लिए समझाया गया । ठेकेदार मान गये और अंग्रेजी प्रशासन की नीति विफल रही।

धमतरी में नूर मोहम्मद पठान को कचहरी के पास झोपड़ी बनाकर मादक पदार्थ बेचने के लिए ठेका दिया गया था। लेकिन उत्साही देशभक्तों द्वारा एवं राष्ट्रीय विद्यालय के छात्रों द्वारा लगातार पिकेटिंग करने के कारण मजबूर होकर दुकान बंद करना पड़ा। मद्य निशेध कार्यक्रम धमतरी जिला में सफलता पूर्वक संचालित हुआ, जिसका प्रभाव परम्परागत व्यवसाय करने वाली कलार जाति पर पड़ा । मद्य निशेध कार्यक्रम से प्रभावित होकर इस व्यवसाय को हमेशा के लिए छोड़कर त्याग का परिचय दिया और नशामुक्ति समाज के निर्माण में सहभागिता प्रदाय किया, जो समाज के लिए अनुकरणीय है ।

असहयोग आंदोलन के दौरान धमतरी जिले में हिन्दू—मुस्लिम एकता का अद्‌भुत उदाहरण देखने को मिला। धमतरी में खिलाफत समिति कर गठन किया गया, तब इसका अध्यक्ष किसी मुस्लिम को नहीं बल्कि नत्थूजी जगताप को बनाया गया। जामा मस्जित के उस स्थान पर आसन दिया गया, जहाँ इस्लाम के विद्वानों को बिठाया जाता था । आज भी हिन्दू—मुस्लिम एकता

धमतरी जिले में बेमिसाल है । शांति, भाई—चारा और आपसी सौहार्द के साथ रहते है ।

जनवरी १९२१ ई का नगरी—सिहावा जंगल सत्याग्रह धमतरी जिला में असहयोग आंदोलन के दौरान की महत्वपूर्ण घटना है । नगरी सिहावा की आदिम जातियों ने अंग्रेजों की वन नीति एवं उनके द्वारा किया जाने वाला बर्बरता पूर्वक व्यवहार के खिलाफ आवाज उठाया । वन एवं वनोपज उनके जीविकोपार्जन का प्रमुख साधन था । जिससे वे अपनी सारी आवश्यकताएँ पूरी करते थे । उसे कानून के दायरे में लाकर प्रतिबंध लगाना ठीक नहीं था। अत: श्यामलाल सोम के नेतृत्व में एवं हरखराम सोम, बाली ठाकुर, विशंम्भर पटेल, शोभाराम साहू, पंचम ठाकुर इत्यादि लोगों के जंगल कानून का उल्लघन कर सत्याग्रह किया, जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास अपने तरह का पहला आंदोलन था । जिसके जनक श्यामलाल सोम थे ।

अहसयोग आंदोलन के दौरान आंदोलन को दबाने प्रशासन के द्वारा कठोर दमन चक्र चलाया गया। लाठी डंडे चलाये गये , कठोर यातनाएँ दी गयी । इन नेताओं में पं. नारायणराव मेघावाले, बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव, नत्थूजी जगताप, पं. सुन्दरलाल शर्मा, श्यामलाल सोम, शिवसिंह वर्मा, पं. गिरधारीलाल तिवारी, हीरजी शाह, विशम्भर पटेल, श्यामलाल सोम इत्यादि प्रमुख थे। जेल की सजा काटकर जेल से बाहर आने के बाद ये पुन: स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हो जाते थे। इनमें जोश और जज्बा था, हौसला बुलंद था ।

धमतरी जिला में असहयोग आंदोलन चरमसीमा पर था, परन्तु ५ फरवरी १९२२ ई को चौरा—चौरी घटना के बाद गांधी जी ने सत्याग्रह स्थगित कर दिया । जिसका प्रभाव धमतरी पर भी पड़ा और आंदोलन की गति धीमी पड़ गयी परन्तु अंग्रेजी शासन के खिलाफ विरोध जारी रहा ।

इस प्रकार असहयोग आंदोलन में धमतरी जिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा। ध्वंसात्मक एवं रचनात्मक दोनों ही प्रकार के कार्यक्रमों से संबंधित कई घटनाएँ घटित हुई । जिसमें वीर सपूतों एवं देश भक्तों ने बड़े जोश और उत्साह के साथ भाग लेकर कठोर जेल यातनाएँ सहन की । देश को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया और मातृभूमि की सेवा की ।

संदर्भ सूची

१. अग्रदूत, गणतंत्र दिवस विशेषांक, पृं.—१५, २६ जनवरी १९८४
२. बाबर, गुणवंत्र राव, वरिष्ठ नागरिक, व्यक्तिगत साक्षात्कार दिनांक १२—०८—२००७
३. कृदत्त पंडरी राव, सस्थापक सदस्य राश्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, व्यक्तिगत साक्षात्कार, दिनांक १०—०४—२००८
४. देवांगन शोभाराम भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में धमतरी तथा तहसील का सक्रिय योगदान (हस्तलिखित पाण्डुलिपि) पृ. १४३ १९७०
५. देवांगन रामनारायण, सुपुत्र देवांगन शोभाराम, व्यक्तिगत साक्षात्कार, दिनांक १६—०९—२००८
६. महाकौशल, दीपावली विशेशांक, पृं. ३४ — १९७४
७. नेल्सन ए.ई. संपादक, रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृं. २८६ १९०९
८. साहू दुलेश्वर, वरिष्ठ नागरिक कंडेल, व्यक्तिगत साक्षात्कार दिनांक १८—०५—२००१
९. शर्मा रामगोपाल, स्वतंत्रता आंदोलन में रायपुर जिले का योगदान, पृ. ४५
१०. शुक्ला डॉ. शांता, छत्तीसगढ़ का सामाजिक — आर्थिक इतिहास, पृं. १०१, १९८८
११. श्रीवास्तव बहादुरलाल, स्वतंत्रता आंदोलन में धमतरी का योगदान

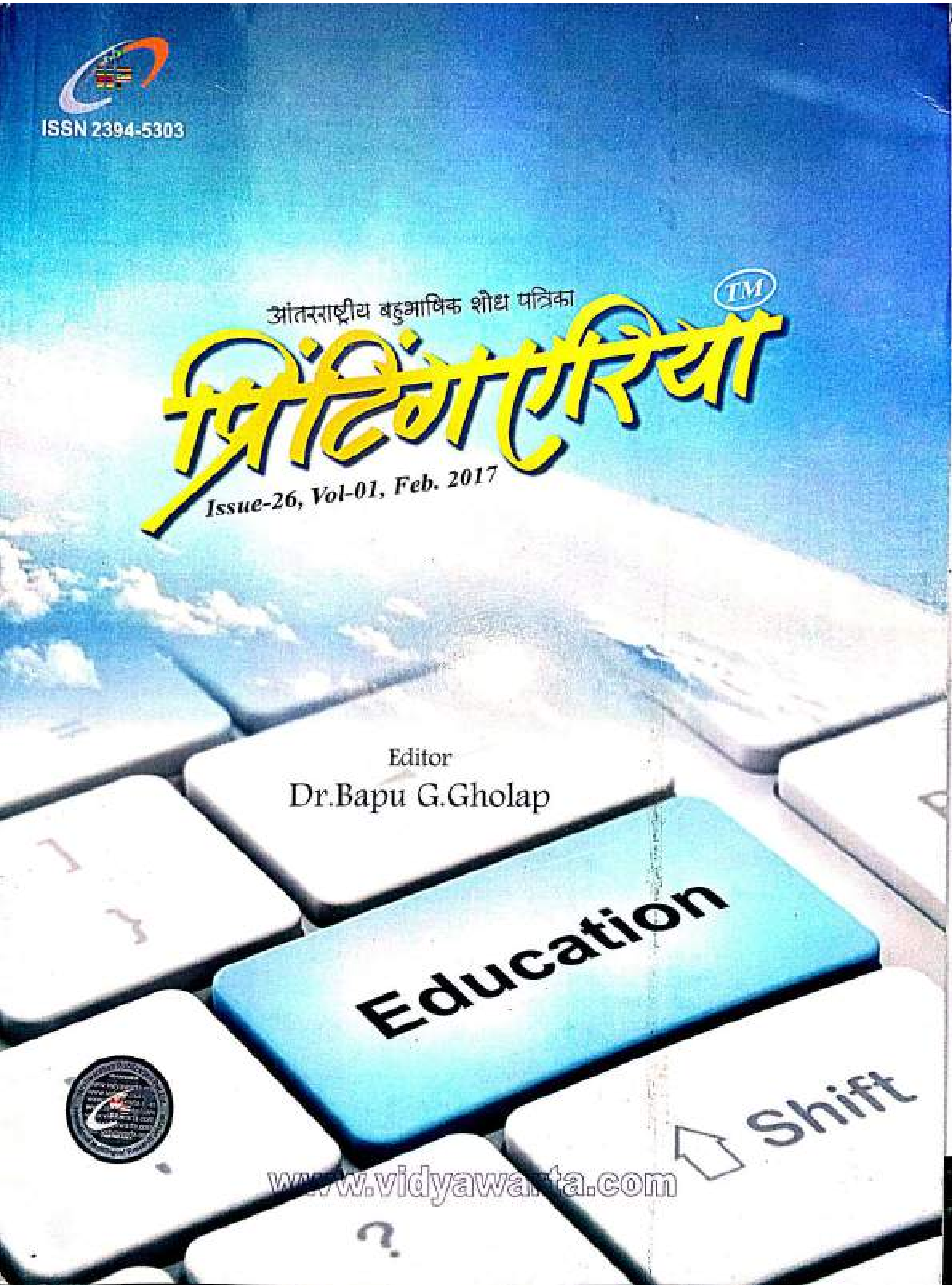
ISSN 2394-5303
आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका
प्रिंटिंग एरिया
TM
Issue-26, Vol-01, Feb. 2017
Editor
Dr.Bapu G.Gholap
Education
Shift
www.vidyawarta.com

Dr. H. Thakur

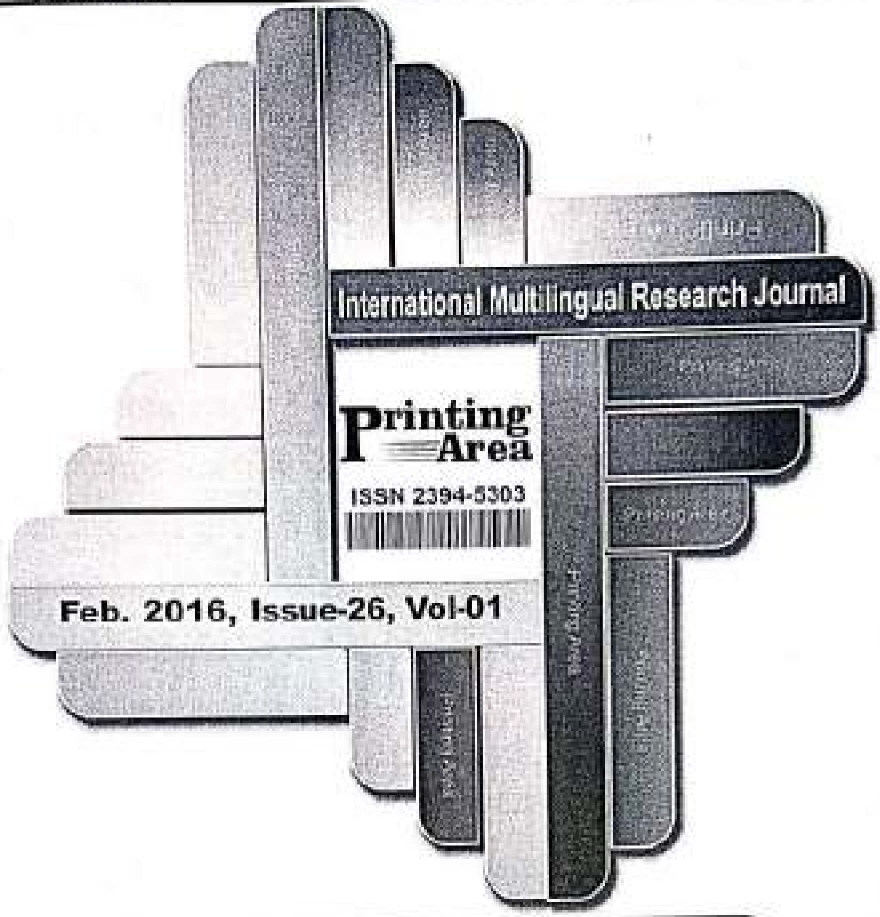

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
Mobi. 09850203295, 07588057695

❖ Editorial Board ❖

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar , Japan
2) M .Saleem, Sialkot , Pakistan
3) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
4) Dr. Vinita Basantani , Pune
5) Prof.Surwade Yogesh , Satara
6) Dr. Pankaj Kumar U.P
7) Prof. Ganesh Khandare,Mangrulpir
8) Dr. Wankhede Umakant , M .S.
9) Dr. Viplav, U.P
10) Manoj kumar Singh , New Delhi
11) Dr. Falguni C. Shastri , Gujrat
12) Dr. Nilendra Lokhande (Mumbai)
13) A. Durga Prasad, Telangana
14) Prof. Ramakant Choudhari, Dhule
15) Dr. Neeraj Shukla (UK)

❖ Advisory Committee ❖

1) Dr. Yerande V. L.., Nilanga
2) Dr. Yallawad Rajkumar , Parli v.
3) Dr. Durga Kant Chaudhary, U.K.
4) Dr. Shinde Sunil , Parbhani
5) Dr. Awasthi Sudarshan , Parli v.
6) Dr. Rajeshchandra Pandey, U.P.
7) Mr.M.Muthu , Chennai
8) Dr. Rakhi Tyagi, (Meerut) U.P.
9) Archana Mankar, Nashik
10) Dr. Chodhari N.D. , Kada
11) Shatrughan Jha, Haridwar
12) Dr. Sarad Kumar Mishara, U.P.
13) MD. Shahbaz Khan, Bhagalpur
14) Dr. Deepak Patil,Jalgaon
15) Dr.Umeshchandra Shuklas

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university,institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Vidyawarta is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India).

❖❖❖

अक्षरजुळवणी व पृष्ठरचनाः अर्चना घो. ॥ मुखपृष्ठ शेख जहिर आणि अशोक कळवणकर, पुणे

http://www.printingarea.blogspot.com

16) Medicinal plants used for the treatment of Ear problems by rural and tribal .....
Eanguwar Srinivas Reddy, Shivraj Kashinath Bembrekar(M.S) || 64

17) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि लोकशाही
सूर्यवंशी राजेंद्र हिरामण, जि.लातूर || 68

18) बंजारा जमातीचा इतिहास
फड ज्ञानोबा दशरथ || 70

19) पं. जवाहरलाल नेहरूंचे वाचन
डॉ. घ. ना. पांचाळ, जि. परभणी || 72

20) सुफी संत परंपरा आणि धर्म
सचिन गुंडीराम डेंगळे, जि. लातूर || 73

21) भुयुद्धनिती किंवा भूसामरिकता (Geostrategy)
प्रा. डॉ. संजय प्रभाकर ढाके., जि. धुळे || 76

22) महाविद्यालयीन युवक-युवतींचा पर्यावरणविषयी जाणीवेचा अभ्यास
डॉ. एस. जे. शेख, चोपडा || 79

23) दया पवार यांची कविता : एक आकलन
प्रा. विठ्ठल भानुसे, जि. बुलढाणा || 81

24) लातूर जिल्ह्यातील साक्षरता एक भौगोलिक आवलोकन
प्रा.डॉ.जनार्धन केशवराव वाघमारे, जि.लातूर || 85

25) भारतातील महिला सबलीकरण चळवळी : एक समीक्षणात्मक विश्लेषण
प्रा.डॉ. लक्षटे रत्नाकर बाबूराव, जि.नांदेड || 87

26) अलग-अलग वैतरणी में जीवन मूल्य संक्रमण
प्रा. अशोक डी. तायडे, जि. नंदुरबार || 96

27) भ्रष्टाचार एक समस्या : कारण एवं समाधान
डॉ. सन्जू सजवाण नेगी, बादशाहीथौल (टि.ग.) || 98

28) हिन्दी साहित्य और वैश्विक चेतना
डॉ. राजेश कुमार सिंह, वृंदावन मथुरा || 101

29) भीष्म साहनी की प्रासंगिकता
रणजीत कुमार सिन्हा, पश्चिम मेदिनीपुर || 103

30) भूमण्डलीकरण के दौर मे विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन
डॉ. रूक्मिणी चौधरी, गोरखपुर || 106

http://www.printingarea.blogspot.com | www.vidyawarta.com/03

33) समष्ठि पर प्राचीन एवं आधुनिक स्त्री लेखन/आंदोलन || 115
डॉ. प्राची सिंह, मध्य प्रदेश

34) राष्ट्रभाषा और हिंदी मीडिया || 120
डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील, धुले

35) क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि || 122
डॉ अनिलानन्द, मथुरा, उ.प्र.

36) पारदर्शी एवं उत्तरदायी सूचना का अधिकार : सुशासन का अधिकार || 128
डॉ. जोगेन्द्र कुमार, लखनऊ

37) राजकीय किशोरी बालगृह की बालिकाओं के जीवन स्तर का अध्ययन..... || 134
डा. आशा राणा, काशीपुर

38) सन्त काव्य परम्परा में सतनामी साथ सम्प्रदाय || 138
डॉ. संजीव कुमार, मथुरा (उ.प्र.)

39) संचार क्रांति और समाचार पत्र || 140
प्रा. शेखर ना. खडसे, बुलढाणाप्रो. डॉ. ज्योति व्यास, अमरावती

40) छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले की ग्राम वासीखाई की सामाजिक दशा || 143
डॉ. हेमवती ठाकुर,कु. भगवती, धमतरी (छ.ग.)

41) हिन्दी साहित्य में नारी लेखन || 147
डॉ. राजेश कुमार सिंह, वृंदावन मथुरा

42) जनपद टिहरी गढ़वाल में महिलाओं की पृष्ठभूमि..... || 149
दिनेश सिंह नेगी, टिहरी गढ़वाल

43) कर्मफलभोग की अनिवार्यता || 156
रत्नेश पाण्डेय, अम्बेडकरनगर

44) विष्णुपुराणोक्त: कर्मकाण्डविमर्श: || 159
डॉ. अनिलानन्द:, मथुरा

45) भवभूतेरनुसारं शिक्षायाः अर्थः उद्देश्यञ्च || 162
Miss MENAKARANI SAHOO, Jajpur

46) मेघदूते सौन्दर्यम् || 165
SUBHRAJYOTI SITARAM, PONDICHERRY UNIVERSITY

47) पञ्चतन्त्र में राष्ट्रीय भावना || 165
रामकुमार गौतम, डॉ. एस.एस. गौतम

48) निर्गुण काव्य में संत रज्जब का दार्शनिक चिन्तन || 172
डॉ. पद्मा सिंह, भानसिंह जाटव

www.vidyawarta.com/03 _ http://www.printingarea.blogspot.com

'कालचक' प्रथम प्रयास के रुप में आयी। इसका निर्माण विनय नारायण ने किया था। इसने वीडियो पत्रकारिता जगत में धूम मचा दी। 'लहरे' रणभूमि विजय (रामायण, महाभारत पर आधारित चेनाई) टिंकल टाईम विद अंकल (बालपत्रिकाओं पर आधारित)

९) केबल —

पत्रकारिता आधुनिक युग में सामान्य केबल इंटरनेट से जोड दिया गया है। टि. वी. सेट से एक्सेल केबल को जोडने की विधि से यह कार्य किया जाता है। आज केबल के माध्यम से भारत में अन्य देशो के समाचार भी मिल रहे है। केबल सुयंक्तिकरण के दौर में कार्यकमों की उपलब्धि संभव कर दी है।

संदर्भ ग्रंथ —

पत्रकारिता के विविध आयाम — डॉ. यू. जी. गुप्ता, प्र. क. ११८

पत्रकारिता के विविध आयाम — डॉ. यू. जी. गुप्ता, प्र. क. १२१

पत्रकारिता के विविध आयाम — डॉ. यू. जी. गुप्ता, प्र. क. १२६

जनसंचार कल, आज और कल — डॉ. अस्थाना प्र. क. ११३

❑❑❑

40

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले की ग्राम बासीखाई की सामाजिक दशा

डॉ. हेमवती ठाकुर
सहायक प्राध्यापक, इतिहास,
बाबू छोटेलाल शास.स्नात.महा. जि. धमतरी (छ.ग.)

कु. भगवती
एम.ए., इतिहास, द्वितीय सेमेस्टर,
बाबू छोटेलाल शास.स्नात.महा., जि. धमतरी (छ.ग.)

"भारत गांवो का देश रहा है । भारत गांव में बसा हुआ है और वह गांव में ही रहता है। भारत को समझना है तो गांवों में जाना होगा और गांवों की संस्कृति को समझना भी होगा" यह कथन प्रसिद्ध पाश्चाप विद्वान मैक्समूलर का है। जिन्होंने अपनी पुस्तक इन्डिया वान्ट केन इट टिच अस में किया है जिसका "हिन्दी अनुवाद हम भारत से क्या सीखें" ? शीर्षक से जुलाई १९६४ में इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था । वास्तव में गांवों की अपनी अगल पहचान होती है । गांवों में रहने वाले लोगों की अपनी अलग ही जीवन शैली होती है । आज वैश्वीकरण के दौर में भी गावों के लोग सदियों पुरानी रीति—रिवाजों और परम्पराओं को अक्षुण्ण बनाये हुए है । उनमें मौलिकता विद्यमान है । ऐसा ही एक छोटा सा गांव बासीखाई है। जहाँ गोड़ जनजाति के लोग निवास करते है ।

ग्राम बासीखाई, छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिला में नगरी तहसील के अंतर्गत ग्राम पंचायत डोकाल का आश्रित गांव है । जिला मुख्यालय धमतरी से ३० कि.मी. की दूरी पर स्थित है । घने जंगलों से घिरा हुआ यह गांव प्रकृति की गोद में बसा हुआ है । गांव के चारों ओर छोटे—छोटे गांवों की सीमा लगी हुई है, जिनमें पूर्व में झुरातराई, पश्चिम में बाजार कुर्रीडीह उत्तर में पीपरछेड़ी और दक्षिण में ग्राम कोर्रा की सीमाएँ है जिस प्रकार प्राय: सभी गावों एवं नगरों के

नामकरण के पीछे तथ्य छिपा रहता है उसी प्रकार इस छोटे से गांव के नामकरण के पीछे तथ्य छिपा हुआ है। गांव के बुजुर्गों के अनुसार पास के गांव कुरीडीह में साप्ताहिक बाजार हुआ करती थीं, जो आज भी होती है । दैनिक उपयोग की वस्तुएँ क्रय करने एवं वनोपज के अलावा कृषि उत्पाद विक्रय करने दूर–दूर से विभिन्न गावों के लोग समुह में बाजार आते थे । उन दिनों गांवों की बसाहट दूर–दूर हुआ करती थी । यातायात के साधनों का अभाव था, लोग पैदल ही आना–जाना करते थे । अधिक दूरी पर बाजार होने के कारण लोग खाद्य पदार्थ बासी लेकर जाते थे । रास्ते में एक छोटा सा नाला पड़ता था । जहाँ पर लोग बैठ कर बासी खाया करते थे, जिसके कारण उस स्थान को बासीखाई के नाम से जाना जाने लगा । बासी छत्तीसगढ़ की विशेष खाद्य पदार्थ है । पका हुआ चावल को पानी और पका हुआ चावल का माढ़ डालकर रातभर रखते हैं। जिसे दूसरे दिन सब्जी या चटनी के साथ खाते हैं। प्रारंभ में उस स्थान पर एक–दो परिवार के लोग रहने लगे । धीरे–धीरे आस–पास के गांवों के लोग आकर बसने लगे । जिससे एक नई बस्ती बन गयी और वही बस्ती आज बासीखाई गांव के नाम से जाना जाने लगा है ।

गांव में कुल ३६ परिवार के २८५ लोग निवास रहते है । सर्वाधिक संख्या गोंड़ जनजाति के लोगों की है जिनके २६ परिवार के २२९ लोग निवास करते हैं । बूढ़ादेव इनका आराध्यदेव है, ये दूल्हादेव, ठाकुरदेव आदि को पूजते हैं । नवाखाई और गौरी–गौरा इनका मुख्य पर्व है । ये सहज, सरल और संतुष्ट होते है । कृषि एवं वनोपज का संग्रहण कर विक्रय करके जीविकोपार्जन करते है । छत्तीसगढ़ राज्य की विशेष पिछड़ी जनजाति कमारों की कुल संख्या गांव में ३२ है । इनके आराध्य देव भी बूढ़ादेव हैं , दूल्हादेव को भी मानते है । इनके गोत्र गोंड़ो जैसा ही है , इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इनके पूर्वज गोंड़ ही रहे होंगे । ये कृषि कार्य भी करते हैं और महुआ से शराब बनाकर विक्रय करने के अलावा, वन एव वनोपज से प्राप्त आय के द्वारा जीवन निर्वाह करते है । दो यादव परिवार गांव में निवास करते हैं । यह परिवार गांव में गौचारण का कार्य करता है । इनके घरों की महिलाएँ घरेलू कार्य करती थीं, परन्तु अब कृषि –मजदूरी भी करने लगी है । एक गाड़ा (गंधर्व) परिवार निवासरत है जो कृषि मजदूरी का कार्य करते है । इनका आराध्य देव भी बूढ़ादेव है । इनके गोत्र भी गोंड़ो के गोत्र जैसे होते हैं । गांव में गोंड़, गांड़ा और कमार इन तीनो में बहुत समानताएँ है । इनके देव एक है, गोत्र में समानता है । इनके रीति–रिवाजों में भी ज्यादा विशेष अंतर नहीं है । संभवतः ये गोंड़ो की उपसाखाये हो सकती है ।

गांव में आवास पहले लकड़ी से बनाते थे । लकड़ी के कमरे के उपर पैरा , खदर (सूखा हुआ घास) ढंकते थे । समय के साथ आवास में बदलाव आया और मिट्टी के घर बनाये जाने लगे , जिसमें आवश्यकता के अनुसार कमरे बनाये जाते है । जिनमें रसोई कक्ष, मवेशियो, शयन कक्ष के लिए कमरे प्रायः प्रत्येक घरों में हुआ करती है । वर्तमान में आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोग ईट–सीमेंट का प्रयोग कर पक्का मकान बनानें लगे है । घरों में फर्नीचर के नाम पर लकड़ी का बना पीढ़ा और चारपाई (खाट) हुआ करती थी, परन्तु वर्तमान में कई प्रकार के फर्नीचर का प्रयोग किया जाता है । जिनमें कुर्सी, टेबल, पलंग आदि जो आकर्षक एवं कलात्मक भी होती है । बर्तनों में पहले मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग किया जाता था । केवल सम्पन्न घरों में कांसा और पीतल के बर्तन होते थे । परन्तु अब प्रायः सभी घरो में विभिन्न प्रकार के बर्तनों का उपयोग किया जाता है , जिनमें स्टील का प्रचलन अधिक है ।

खान–पान में व्यापक परिवर्तन हुआ है । पहले लोग चावल, कोदो, कुटकी, मड़िया (रागी) का उपयोग अधिक करते थे । इनमें सबसे अधिक चावल का उपयोग किया जाता था । रात्रि में भात एवं दिन में बासी और पेज (पका चावल पानी सहित) बनाकर खाते थे । गर्मियों में मड़िया (रागी) का पेज बनाकर पीते थे कहा जाता है कि इससे शरीर को ठंडकता मिलती है और कार्यक्षमता बढ़ती है, शरीर में पानी की कमी नहीं होती और ज्यादा प्यास भी नहीं लगती। यहाँ के लोग डुमर (गुलर) का पेज भी बनाते थे । महुआ का फूल तथा करूकांदा की रोटी बनाकर खाते थे । विभिन्न पशु–पक्षियों के मांस का सेवन करते थे।

कई प्रकार के भाजी जिनमें मुख्यत: गुडरू, सिलियारी, केनी, कुसुम, चरौटा, कोचई, मुनगा, कोलियारी, बोहार आदि का उपयोग करते थे । मादक पदार्थ के रूप में लोग तम्बाखू, गांजा और महुआ से बना हुआ शराब का सेवन करते थे । नाले का पानी पीते थे । वाह्य संपर्क होने के कारण वर्तमान में गांव के लोगो के खानपान में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा है । अब कुएं एवं हैंडपंप का पानी पीने लगे है । वेश–भूषा के क्षेत्र में भी बहुत परिवर्तन हुआ है । पुरूष पहले लंगोट एवं पटका (गमछा) पहनते थे । महिलाएँ भी कमर के ऊपर और नीचे पटका ही धारण करती थी। ब्लाउज का प्रचलन नहीं था । आज पुरूष पेंट, कमीज और महिलाएँ साड़ी, ब्लाउज, लड़कियाँ सलवार कमीज एव अन्य परिधान का उपयोग करने लगी है । आभूषण पहले केवल सम्पन्न लोग ही पहनते थे । महिला और पुरूष दोनों आभूषण पहनते थे । पुरूष कानों में बाली और हाथों में कड़ा पहनते थे । महिलाएँ गले में माला (डोरा) ,रूपया माला, सूता, पैरों में चूड़ा, लच्छा एवं अंगुलियों में बिछिया पहनती थीं । आभूषण सोने, चांदी, तांबा , पीतल होते थे । पहले सोनारों (सर्वणकार) द्वारा निर्मित आभूषण पहनते थे परन्तु अब मशीनों द्वारा निर्मित विविध प्रकार के आभूषणों को पहनने लगे है । सौंदर्य प्रसाधन के नाम पर पहले लकड़ी के कंघी से लोग ज्यादा परिचित थे । महिलाएँ बालों को गूंथकर, सुन्दर जुडा बनाती थीं । इत्र एवं हाथ का बना काजल प्रयोग करती थीं । परन्तु अब वर्तमान में सौंदर्य प्रसाधन से संबंधित विभिन्न वस्तुओं जैसे फैन्सी चूड़ियाँ, पाउडर, सुगंधित तेल, लिपिस्टिक इत्यादि का प्रयोग किया जाने लगा है ।

मनोरंजन का प्रमुख साधन गांव में आखेट करना, पासा खेलना, गीत और नृत्य था । लोग बांस गीत गाते थे । सुआ नृत्य गांव का प्रमुख नृत्य था और आज भी है । किसी भी तीज, त्योहार के अवसर पर समुह में नृत्य कर उल्लास पूर्वक त्योहार मनाते है । बच्च पारंपरिक खेल गिल्ली डंडा, पिटुल, खेल कर मनोरंजन करते थे । वर्तमान में रामायण पाठ, भजन के अलावा मनोरंजन के आधुनिक साधनों का प्रयोग किया जाने लगा है । जिसमें सबसे अधिक दूरदर्शन का प्रयोग होता है । गांव में विवाह पहले बड़े बुजुर्गो की पसंद से होती थी । वर्तमान में युवक–युवती की पसंद नापसंद भी पूछा जाता है । दोनों की सहमति होने पर विवाह सम्पन्न होता है । गांव में विवाह परम्परानुसार होता है, सारे वैवाहिक रस्म परिवार के सदस्यों और स्वजातीय समाज प्रमुखों के द्वारा किया जाता है । समाज के सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य रहती है । और वही शादी सम्पन्न करवाते है । भोजन आदि व्यवस्था की देख–रेख भी उन्हीं के द्वारा की जाती है । पहले बाल विवाह हुआ करता था । युवती जब यौवनावस्था को प्राप्त करती थी , तब गौना करते थे । परन्तु वर्तमान में विवाह के बाद तुरंत लड़की की बिदाई कर देते है। दहेज प्रथा का प्रचलन बिलकुल नहीं रहा है । पहले गोड़ों में वर पक्ष की ओर से वधु पक्ष को वधु मूल्य देने का रिवाज था । जिसे अब बंद कर दिया गया है । विवाह कार्य को सम्पन्न करवाने में स्वजातीय समाज का पूरा–पूरा सहयोग रहता है । उनके सहयोग से ही विवाह सफलता पूर्वक सम्पन्न होता है । गांव में विवाह संस्कार के पश्चात जन्म संस्कार को बड़े धूम–धाम और हर्षोल्लास के साथ मनाते है ।

गर्भधारण के सातवें महीने में सधौरी खिलाते है, जिसमें सात प्रकार का पकवान खिलाया जाता है । नवजात के जन्म के बाद छट्ठी का कार्यकम रखा जाता है । पहले ५ दिन तक प्रसूता को भोजन नहीं दिया जाता था , केवल दोपहर में जड़ी–बूटी की दवाई का पानी ही देते थे । खाना देना छट्ठी के दिन से शुरू करते थे, अब ऐसा नहीं रह गया है । नवजात के जन्म होने पर पहले थाली बजाकर गांव में सूचना देते थे, अब फटाका फोड़ा जाता है । लड़की हो या लड़का दोनों में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाता था और आज भी नहीं किया जाता । छट्ठी के दिन नवजात का नामकरण कर सामूहिक भोज दिया जाता है । इसमें स्वजातीय समाज की उपस्थिति अनिवार्य रहती है । नाते–रिश्तेदारों को भी आमंत्रित किया जाता है ।

ग्राम बासीखाई में तीसरा महत्वपूर्ण संस्कार होता है वह है मृतक संस्कार जिसमें सामाजिक सहभागिता जरूरी रहती है और सारे कार्य उन्हीं के द्वारा किया जाता है । दूर दराज के रिश्तेदारों को

अंतिम कार्यक्रम (नहावन) के लिए सूचना देने का कार्य भी समाज के द्वारा किया जाता है । नहावन (शुद्धिकरण) का कार्य ३ दिन ५ दिन या ७ दिन में किया जाता है। उस दिन नाई और धोबी को बुलाकर शुद्धिकरण के कार्य को सम्पन्न किया जाता है । मृतक भोज की व्यवस्था की जाती है , जो स्वजातीय बंधुओं की देखरेख में सम्पन्न की जाती है । पूरे गांव को भोज के लिए आमंत्रित किया जाता है । समधान पक्ष के द्वारा बिस्सर नेंग (पगड़ी रस्म) का कार्य किया जाता है । आराध्यदेव की पूजा कर पुरूष, पुरूषों के साथ और महिलाएं , महिलाओं के साथ पीला चावल, गुलाल का टीका लगाकर एक दूसरे का जोहार (अभिवादन) करते है । जन्म, विवाह, मृत्य के अलावा किसी भी प्रकार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों को ब्राम्हण या पुरोहित के द्वारा नही करवाया जाता । सारे कार्य समाज प्रमुखो द्वारा किया जाता है ।

गांव में किसी प्रकार की समस्या जैसे — लड़ाई—झगड़ा या अन्य किसी प्रकार का विवाद की स्थिति में गांव में बैठक बुलाकर मुखिया ठाकुर के द्वारा निपटारा किया जाता है। किसी भी गांव की सामाजिक दशा का अध्ययन तब तक अधूरा ही रहेगा जब तक वहां की महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश न डाला जाये । गांव में महिलाओं की स्थिति प्रारंभ से ही अच्छी रही है । आधुनिक शिक्षा से कोसों दूर रहने के बावजूद महिलाएँ पुरूषों के साथ मिलकर कार्य करती है। उनके प्रत्येक कार्य में मदद करती हैं । दोनो एक—दूसरे के पूरक होते है । परिवार के प्रत्येक कार्य में महिलाओं की बराबर सहभागिता रहती है । यद्यपि घरेलू कार्य महिलाएँ करती है , लेकिन अन्य सभी कार्यों में हर कदम पर पुरूषों को सहयोग करती हैं । महिलाएँ परिवार रूपी धुरी की केन्द्र बिंदु होती हैं । आर्थिक —सामाजिक क्षेत्र में सर्वाधिक भागीदारी रहती है । कृषि मजदूरी करने एवं सामाजिक कार्यों को सम्पन्न करवाने में गांव के महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है । एक माता के रूप में वह पूजनीय और आरदरणीय होती है । उनके ही सलाह से परिवार को संचालित किया जाता है , किसी भी कार्य को गति दी जाती है पत्नि के रूप में वह परिवार की कुल वधु होती है । वह कुल की मान—मर्यादा का ख्याल रखते हुए कार्य करती है । बेटी और बहन के रूप में वह घर की शान होती है । कहा जाता है जिस घर में बेटियाँ होती है वह घर भरा हुआ रहता है । इससे स्पष्ट है महिलाओं का समाज में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । नातेदारी—रिश्तेदारी का निवर्हन करते हुए मर्यादित जीवन निर्वाह करती है । वर्तमान में राजनीति के क्षेत्र में इनकी सहभागिता प्रारंभ हो चुकी है।

बासीखाई , धमतरी जिला का एक छोटा सा गांव है । जहाँ कुल ३६ परिवार के २८५ लोग निवास करते हैं । गोंड़ जनजाति की संख्या सर्वाधिक है । गांव के लोग अपनी रीति—रिवाजों और परम्पराओं का निर्वहन करते है । उनमें मौलिकता विद्यमान है । ग्रामीणों की अपनी जीवन जीने की शैली है । वैश्वीकरण के प्रभाव से गांव अछूता नहीं रह गया है। ग्रामीणों की खान—पान, वेश—भूषा, रहन—सहन, मनोरंजन के साधन आदि पर व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा है । आधुनिक शिक्षा का प्रवेश गांव में होने के कारण लोग गांव से निकलकर शहरों में शिक्षा ग्रहण कर रहे है । जो ग्राम बासीखाई में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन के क्षेत्र में मध्यस्थता का कार्य करने लगे है ।

गांव की सबसे बडी विशेषता ग्रामीणों में आपसी सहयोग एवं सामूहिकता की भावना है । जो ग्रामीण समाज में सदियों से चली आ रही है । यह गांव में होने वाली तीन प्रमुख संस्कारों जन्म, विवाह एवं मृत्यु संस्कार के समय देखा जा सकता है । एक सशक्त समाज एवं राष्ट्र निर्माण के लिए अनुकरणीय है । २१वी सदी के परिवर्तन के इस दौर में ग्रामीणों द्वारा विविध क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों को स्वीकारते हुए मौलिकता को अक्षुण बनाये हुए है ।

संदर्भ सूची

१. श्रीमती समारी बाई (वरिष्ठ नागरिक), व्यक्तिगत साक्षात्कार , दिनांक ०३.०९.२०१६

२. श्रीमती फिरंतीन बाई (वरिष्ठ नागरिक), व्यक्तिगत साक्षात्कार, दिनांक ०४.०९.२०१६

३. श्री मानसाय (वरिष्ठ नागरिक), व्यक्तिगत साक्षात्कार, दिनांक ०४.०९.२०१६

४. व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर उद्धृत

❑❑❑

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta
UGC
Jr.No.62759
UGC Approved Refereed Journal

विद्यावार्ता®

International M... Research Journal
Issue-22, ... to June 2018

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Dr. M. Thakur

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2018
Issue-22, Vol-05

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा जोतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

UGC Approved
Jr.No.62759

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

Editorial Board & Advisory Committee

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arebia)
4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
8) Jubraj Khamari (Orissa)
9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
16) Tadvi Ajij (Jalgaon)
17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
18) Dr. Maske Dayaram (Hingoli)
19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bangal)
23) Dr.M.M.Joshi, (Nainital)
24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
25) Dr.Seema Sharma (Indor)
26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
27) Dr. Yallawad Rajkumar (Parli v.)
28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
30) Dr. Prema Chopde (Nagpur)
31) Dr Watankar Jayshree
32) Dr. Saini Abhilasha,
33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
35) Dr. Pandey Piyush (Delhi)
36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
46) Dr. Chaudhari Ramakant (Jalg

Indexed

International Multilingual Research Journal
Vidyawarta
Jr.No.62759
UGC Approved Refereed Journal

IMPACT
5.131
iijif
FACTOR

Govt.of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at Beed (Maharashtra, India)

http://www.printingarea.blogspot.com

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

|| Index ||

01) ROLE OF MEDIA IN DALIT EMPOWERMENT WITH SPECIAL ....
Babita Kumari Nayak || 09

02) SOCIAL REALITY IN UPAMANYU CHATTERJEE'S THE MAMMARIES ......
LEELADHAR BUDHLAKOTI || 13

03) A Study of Value Pattern of College Students under Different ....
CHETANKUMAR RAMANBHAI CHAUHAN ||18

04) OVERVIEW ON IND AS
SUSHMA GUPTA || 22

05) Problems of Collection, Documentation and Preservation of ......
Dr. Madhumita Handique || 26

06) TEACHING LEARNING IN DISTANCE AND OPEN LEARNING MODE
Dr. Prakriti James || 30

07) The Concept of Spirituality in the Indic Religions: Hinduism .....
Dr. Naveen K. Mehta || 33

08) Dalit Literature, Dalits andthe Women with Special ....
Shweta Maurya || 39

09) THE IMPACT OF VOCATIONAL EDUCATION AND TRAINING (VET) ....
Dr. Ashwinkumar Amrutlal Patel || 43

10) Problems and Innovation in teaching learning English as a .....
Dr. Chetna Pathak || 50

11) "A COMPARATIVE STUDY ON CONSUMER AWERENESS AND ......
Prashantkumar M. Pilot, Dr. Suresh P. Machhar || 54

12) Plight of Dalit Women in Baby Kamble's 'The Prisons We Broke'
Sunil Ramteke || 58

13) REPRESENTATIONS OF GENDER AND SEXUALITY: TRACING ......
Sasmita Kumari Sahu || 62

14) A study on consumer buying behavior towards Indian ..... || 69
Ms Jasleen Sardar, Ms Himani Sardar

15) Teachers' perception on Math empowerment || 77
Ms. Sunita M. Shah

16) RETENTION PRACTICES OF EMPLOYEES IN HELATHCARE INDUSTRY ...... || 82
Mrs. SONALI SHAH

17) EFFECTIVENESS OF BRAND PREFERENCE ON CONSUMERS WITH ...... || 86
Dr. SHAIKH TABASSUM HAMEED

18) Effect of Globalization on Indian Management Practices || 84
Prof. Dr. P.M. Taley

19) TACKLING UNDERACHIEVEMENT--------BRINGING SUPPORT ..... || 90
Dr. Renu Sohta

20) Pageant of Historical and Political Vistas of Pre- ...... || 96
Dr. Sunita Rani

21) राजाराम मोहन रॉय - यांचे कायद्या संबंधी विचार
प्रा.डॉ.मानवते उत्तम हुसनाजी || 101

22) क्रीडा क्षेत्रातील व्यक्तीसाठी समतोल आहार
प्रा.डॉ. मोरे एस. जी. || 103

23) 'निरंजन घाटे यांची विज्ञान कादंबरी'
शिवचरण प्रभाकर गिरी || 106

24) बारोमास : एक परामर्श
डॉ. नागनाथ लक्ष्मण आवले || 109

25) स्त्रीत्त्व आणि मानव समाज
प्रा. डॉ. भुसारे सुनंदा रामचंद्र || 112

26) कवी कुसुमाग्रजांच्या विशाखा कवितासंग्रहातील कवितांचे स्वरूप
प्रा.गजानन आनंता देवकर || 114

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

27) भटक्या विमुक्त जमातीच्या साहित्याचे स्वरूप
प्रा. डॉ. नविन के. गिलबिले || 117

28) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर व धम्मक्रांती
प्रा. मारोती यु. टिपले, || 120

29) 'बुढाई' कादंबरीचे ग्रामीण व वाङ:मय मूल्ये
प्रा.डॉ.माधव कांडणगिरे || 122

30) विदर्भातील अस्पृश्योध्दार आंदोलन — वैदर्भीय नेत्यांचे योगदान
प्रा. निशांत वामनराव खोब्रागडे || 126

31) महिला सबलीकरण : एक दृष्टीक्षेप
प्रा.रविन्द्र अर्जुन पवार || 129

32) ई—प्रशासन
प्रा. शेंडे दत्तु दादसाहेब || 133

33) हिंदी उपन्यास में तृतीय लिंगी विमर्श
डॉ. हणमंत पवार || 136

34) त्रासदी में झुलसनेवाली बहुलतावादी संस्कृति की रचनात्मक अभिव्यक्ति : 'काला पहाड़'
डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील || 138

35) भारतीय संत कबीर एवं तुकाराम की जनचेतन वाणी
डॉ. महेशभाई जे. पटेल || 141

36) मध्ययुगीन स्त्रीसंतांचा स्त्रीशक्तीचा जागर
प्रा.डॉ. संगिता शेळके || 143

37) आँचलिक उपन्यासों में राष्ट्रीयता
डॉ. शहनाज महेमुदशा सय्यद || 145

38) महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' में संगीत
अमित कुमार || 149

39) काव्य प्रयोजन और आधुनिक हिन्दी कविता
डॉ. विजय कुमार प्रधान || 151

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

40) सोशल मीडिया का मुद्रा स्फीति पर प्रभाव || 155
डॉ. एच. एस. भाटिया, श्रीमती पिंकी गर्ग

41) बदलते परिवेश में कामकाजी मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक...... || 158
कमरूद्दीन

42) भारतीय सिनेमा में संगीत का विकासक्रम || 163
विकास शर्मा

43) आचार्य रजनीश और शिक्षा के लक्ष्य || 166
सत्येन्द्र पाल सिंह, डा. आराधना पाण्डे

44) रूढ़ी – नवगांव जंगल सत्याग्रह || 170
डॉ.(श्रीमती) हेमवती ठाकुर

International Multilingual Research Journal

Printing Area

9850203295 7588057695

Editor Dr.Bapu G.Gholap

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

निष्कर्ष–

आचार्य रजनीश के शिक्षा पर विचार मनुष्य के स्वभाविक एवं समरस विकास के उन्मुखीकरण से परिपूर्ण है, आचार्य रजनीश के अनुसार, "शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य स्वतन्त्र चिन्तन का विकास करना है।" शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित कर मनुष्य को इस योग्य बन जाये कि, जिसमें स्वतन्त्र चिन्तन विकसित हो, स्वतन्त्र अभिव्यक्ति का विकास करने की क्षमता, जिसमें वास्तविक धर्म का बोध हो, मूल्यों का संवर्द्धन करने में सक्षम, एवं महत्वाकाँक्षा से मुक्त मनुष्य बनाना आचार्य रजनीश की शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त कर मनुष्य एवं समाज को दोशमुक्त बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची–

१ –लाल, रमन बिहारी २०११, शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग मेरठ।

२–ओशो, शिक्षा नये प्रयोग, डायमंड बुक्स प्रा. लि. नई दिल्ली।

३–ओशो :– शिक्षा में क्रान्ति, डायमंड बुक्स प्रा. लि.,नई दिल्ली।

४–नीरज सुरेश, "शिक्षा में कान्ति" रेबल पब्लि हाउस प्रा.लि. कोरे गाँव पुणे।

५–ओशो, संभोग से समाधि की ओर, १९७८।

६–बोधिसत्त्व, स्वामी नरेन्द्र, ओशो, शिक्षा और जागरण. दिल्ली : डायमण्ड पाकेट बुक्स

७–ओशो, भारत के जलते प्रश्न।

८–ओशो, शिक्षा और विद्रोह। दैनिक जागरण; सप्तरंग, अंतस और अध्यात्म, २५ सितम्बर, २०१३

९–हिन्दुस्तान; धर्मक्षेत्रे, हल्द्वानी, मंगलवार ८ मार्च,२०१६

१०–झंकार, दैनिक जागरण लखनऊ, रविवार, १८ मार्च २०१८

□□□

44

रूद्री – नवगांव जंगल सत्याग्रह

डॉ.(श्रीमती) हेमवती ठाकुर
सहा.प्रा.इतिहास
बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव
शास.स्नात.महा. धमतरी (छ.ग.)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ के धमतरी जिला का अविस्मरणीय योगदान रहा है। राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक ३० पर महानदी के किनारे बसा जिला मुख्यालय धमतरी से ११ कि.मी. दूर रूद्री बस्ती है । जहाँ जिला प्रशासन का कार्यालय है । पूरे जिले की प्रशासन यहीं से संचालित होती है । यहाँ से २ कि.मी. की दूरी पर एक छोटा सा गांव है, जिसे नवागांव के नाम से जाना जाता है। यह जनजातीय बहुल गांव है, जहाँ गोंड जनजाति की संख्या सर्वाधिक है । पहले यहाँ घना जंगल था, गांव को बेन्द्रानवागांव के नाम से जाना था, परन्तु वर्तमान में रूद्री नवगांव के नाम से जाना जाने लगा है।

सन् १९३० में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान नवागांव की सीमा से लगी हुई शासकीय रूप से घास काट कर जंगल कानून का उल्लंघन कर जंगल सत्याग्रह किया गया । सर्वप्रथम जंगल सत्याग्रह २१ जनवरी १९२२ ई. को जिले के नगरी–सिहावा अंचल में किया गया। जहाँ अंचल के सैकड़ों युवाओं ने श्यामलाल सोम और उनके सहयोगियों की अगुवाई में उमरगांव लखनपुरी के जंगल में (वर्तमान में सीतानदी अभ्यारण के अंतर्गत शामिल वनक्षेत्र) घास काटकर विदेशी हुकूमत का विरोध किया। जिस स्थान पर सत्याग्रह किया गया, उसे वर्तमान में झण्डा भर्री सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। इस सत्याग्रह के द्वारा लोगों ने ब्रिटिश प्रशासन को जबर्दस्त चुनौती दी। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान बड़े पैमाने मे

जंगल सत्याग्रह किया गया। इसके लिए मध्यप्रांत कांग्रेस समिति ने राष्ट्रीय स्तर के नेताओं से स्वीकृति ली। नेताओं ने जंगल सत्याग्रह के लिए शंका जाहिर की, कि अहिंसक सत्याग्रह में औजार का क्या काम? उन्हे ऐसा लगने लगा था कि कहीं आंदोलन हिंसक न हो जाए। उन्हें समझाने का प्रयास किया गया कि औजार का उपयोग केवल जंगल में घास या लकड़ी काटने के लिए किया जाएगा। पूरी तरह आश्वस्त होने के बाद ही राष्ट्रीय स्तर के नेताओं ने जंगल सत्याग्रह की अनुमति प्रदान की। फलत: सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान बड़े पैमाने पर जंगल कानून का उल्लंघन कर अंग्रेजी शासन का विरोध किया गया। इस दौरान तहसील कार्यकारिणी समिति को सत्याग्रह समिति में बदल दी गई । सत्याग्रह के संचालन के लिए समिति बनाई गई एक मई १९३० ई. को धमतरी नगरी के लौह पुरूश नत्थूजी जगताप के बाड़े में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की गई । जहाँ जिले भर के स्वयं सेवकों को अहिंसक सत्याग्रह करने के लिए प्रशिक्षण दिया गया। ३ माह में १५०० स्वयं सेवकों को प्रशिक्षित किया गया। तहसील सत्याग्रह समिति ने निर्णय लिया कि नवागांव के वन विभाग के शासकीय कूप से घास काट कर जंगल कानून का उल्लंघन किया जावेगा , पांच सत्याग्रहियों का जथा घास काटने कूप में प्रवेश करेंगे जिसमें चार ग्रामीण स्वयं सेवक और एक नागरिक स्वयं सेवक होंगे। २२ अगस्त १९३० को सत्याग्रह प्रारंभ किया जायेगा, जो प्रतिदिन जारी रहेगा। इस कार्य को सुचारूप से संचालित करने के लिए नारायणराव मेघावाले को सर्वाधिकारी नियुक्त किया गया। तहसील सत्याग्रह समिति को भंग कर दी गई, और पूरी जवाबदारी नारायणराव मेघा वाले को सौंप दी गई।

२१ अगस्त १९३० ई. को धमतरी नगर में एक बड़ी सभा की गई । जिसमें सर्वाधिकारी नारायणराव मेघावाले ने विशाल जनसमुंह को सबोंधित किया। जिसमें उन्होंने देश की विषम परीस्थितियों पर चिंता व्यक्त की। तत्पश्चात २२ अगस्त शासकीय कूप से घास काट कर कानून का उल्लंघन करके सत्याग्रह करने के लिए पहले जत्थे की घोषणा की। नवागांव के शासकीय कूप में घास काट कर कानून का उल्लंघन करके सत्याग्रह करने के लिए पहले जत्थे की जिम्मेदारी नत्थूजी जगताप को सौंपी गई । उन्हे तिलक लगाकर फूल माला पहनाकर, आरती लेकर , केशरिया रंग का पट्टा, एक बैज और हँसिया प्रदान किया गया। अहिंसक रहकर सत्याग्रह करने की जवाब देही दी गई। नत्थूजी जगताप को जब प्रथम जत्थे की नेतृत्व सौंपा गया, तब सभा स्थल में उपस्थित लोगों ने उनका उत्साहवर्धन किया । जंगल सत्याग्रह करने की सूचना प्रशासन को दे दी गई । सूचना मिलते ही प्रशासन सतर्क हो गई , २२ अगस्त १९३० को जिस दिन नत्थूजी जगताप के नेतृत्व में पहला जत्था शासकीय कूप से घास काट कर जंगल कानून का उल्लंघन करके सत्याग्रह करते , उसी दिन प्रात: सूर्योदय के पहले घर से सोते हुए नत्थूजी जगताप और सत्याग्रह के सर्वाधिकारी नारायणराव मेघावाले को गिरफ्तार कर रायपुर जेल में डाल दिया गया । जेल जाने के पहले नारायण राव मेघावाले ने बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया अर्थात बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव को सर्वाधिकारी नियुक्त किया । बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव सर्वाधिकारी बनने के बाद धैर्य रखने की। अपील की इसी दिन कचहरी के पास सभा को संबोधित करके प्रशासन की कार्यवाही की कड़ी निंदा की। सत्याग्रह करने के लिए अगले जत्थे का नेतृत्व करने की जवाबदारी गोविंदराव डाभावाले को सौंपी, गोविंदराव और उनके जत्थे के स्वयं सेवकों का तिलक लगाकर अभिनंदन किया गया। केशरिया पट्टा, बैज, हँसिया प्रदान कर नवागांव की ओर सैकड़ों लोग प्रस्थान किये। जय घोष करते, नारा लगाते, देश भक्त गीत श्शलेबो सुराज रे लेबो सुराज , तीन रंग के बाबा गांधी के झण्डा लेबो सुराज रे लेबो सुराज गाते हुए जुलूस का काफिला आगे बढ़ती गई। जुलूस नवगांव पहुंची वैसी ही जत्था के कूप के पास पहुंचते ही सब–इंस्पेक्टर अब्दुलमाजीद हाजी ने धारा १४४ लगाने की घोषणा की। पांच से अधिक व्यक्तियों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया । तब बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव ने जनसमुह से धैर्य बनाये रखने की अपील की और जुलूस को आगे बढने से रोक दिया । जत्थे के स्वयं

सवकों को शासकीय कूप से घास काटने के लिए निर्देशित किया। जैसे घास काटा गया, स्वयं सेवकों को गिरफ्तार कर लिया गया। स्वयं सेवकों द्वारा घास काटते ही नवागांव जंगल सत्याग्रह की शुरूवात हुई , जो लगभग छः माह तक चलती रही।

२३ अगस्त १९३० ई. को ही बाबू छोटेलाल श्रीवास्वत को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके अलावा रामलाल अग्रवाल, अमृत लाल खरे, शिक्षक नगरपालिका पूर्व माध्यमिक शाला धमतरी, शंकरराव जी कथलकर , सुपरवाईजर डिस्टिक्ट कौंसिल को गिरफ्तार कर रायपुर जेल में बंद कर दिया गया। इन्हें केवल संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी के पूर्व बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव ने लीलर गांव के मालगुजार दिनकर राव हिशीकर को सर्वाधिकारी नियुक्त किया। जत्था रवाना होने के पहले पं. गिरधारीलाल तिवारी और भोपालराव पवार की अध्यक्षता में एक आम सभा रखी गई। सभा में विदेशी शासन के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया गया। जत्थे के स्वयं सेवकों का अभिनंदन कर घास काट कर कानून का उल्लंघन करने के लिए निर्देशित किया गया। सभा के तत्काल बाद भोपाल राव पवार, पं. गिरधारी लाल तिवारी को गिरफ्तार कर लिया गया। लोग जुलूस के रूप में नवागांव की ओर प्रस्थान किए। जैसे ही घास काटने की कोशिश की गई, पुलिस ने तत्काल स्वयं सेवकों को गिरफ्तार कर लिया।

२४ अगस्त १९३० ई. के जत्थे का नेतृत्व नगरी के श्यामलाल सोम को सौंपा गया। सोम को सत्याग्रह करने से पहले प्रातः घर से गिरफ्तार कर लिया गया। फिर भी नगरी अंचल के स्वयं सेवकों का नवागांव आना जारी रहा। सत्याग्रहियों के उत्साह में कोई कमी नहीं रही। अंचल के स्वयं सेवक बड़ी संख्या में नवागांव पहुँचने लगे। तहसील कांग्रेस कमेटी के मंत्री शोभाराम देवांगन को ५ सितम्बर १९३० ई. को गिरफ्तार कर उनके घर की तालासी ली गई। कुछ संदेहास्पद कागजात एवं पुस्तकें जप्त की गई।

नवागांव जंगल सत्याग्रह में भाग लेने वाले लोगो में बड़ा उत्साह था , प्रशासन द्वारा कांग्रेस कमेटी की ओर से एक पाम्पलेट जारी कर जगह—जगह चस्पा करवा दिया गया। अब पांच लोगो के जत्थे द्वारा जंगल कानून का उल्लंघन न करके धारा १४४ का उल्लंघन करके सामूहिक सत्याग्रह किया जायेगा । दूर—दराज से लोग नवागांव पहुंचने लगे, लगभग १०००० लोग एकत्रित हो गये तहसील के बड़े नेता जेल में थे । सत्याग्रहियों के मार्गदर्शन के लिए कोई ऐसा नेतश्त्व नहीं था, फिर भी स्वयं सेवको ने प्रशिक्षण के दौरान दिये गये मार्गदर्शन को याद किया कि नेताओं ने प्रशिक्षण के दौरान पांच स्वयं सेवकों के जत्थे द्वारा ही सत्याग्रह करने की सलाह दी थी। अन्य किसी भी रूप में सत्याग्रह न करने के निर्देश उनके द्वारा दिये गये थे। उपस्थित लोगों को खतरे का अहसास हो गया था , ऐसी स्थिति में जत्था द्वारा ही घास काटने की तैयारी की गई । लोग उस क्षेत्र से बाहर जाने लगे, इसी दौरान पुलिस प्रशासन द्वारा जनता को तितर—बितर करने के लिए लाठी चलाई गई । घटना ९ सितम्बर दोपहर २ बजे के लगभग की थी । पुलिस की लाठी चार्ज से भगदड़ हो गई , जनता इधर उधर बचाव में दौड़ने लगी । इसी बीच पुलिस का सब—इंस्पेक्टर जमीन पर गिर गया, जिससे एक नुकीला पत्थर उनकी आँख मे लगी, आँख से खुन निकलने लगी। जिसे देख कर शासकीय अधिकारी जनता द्वारा मारपीट करने से खुन निकलना समझ कर लाठी प्रहार तेज करने का आदेश दे दिया गया । पुलिस प्रशासन द्वारा निहत्थी जनता पर लाठियों से प्रहार किया गया । गोलियां चलाई गई, गोली चलाने से लमकेनी गांव का मींधू कुंभकार गोलियों का शिकार हो गया, जिससे वह वहीं पर गिर गया । जिसे चार पाई में रख कर रायपुर जेल ले जाया गया, जहाँ जेल में उनकी मौत हो गई। रतू गोड जो लमकेनी गांव का निवासी था, उसे भी गोली लगी जख्मी हालत में रायपुर जेल ले जाया गया। जहाँ से सजा काटने के बाद वापस गांव आ गया

पुलिस प्रशासन द्वारा इतना अधिक अमानुशिक अत्याचार किया गया कि अपनी जीवन बचाने के लिए भागती हुई जनता पर भी लाठियों से प्रहार किया गया। महिलाओं को भी नहीं छोडा गया, नवागांव में लाठी प्रहार एवं गोलियों की बौछार के बाद १० सितम्बर १९३० ई. से छः माह तक धमतरी एवं

आस–पास के गांवों में धारा १४४ लगा दी गई। सैकड़ों लोगों को बंदी बनाकर धमतरी के हवालात में बंद कर दिया गया। अदालती कार्यवाही होने के बाद छः–छः माह की सजा दी गई। कई बड़े नेताओं को एक–एक साल की सजा एवं अर्थदण्ड के रूप में राशि वसूली गई। धमतरी जिले से तीस हजार रूपये की राशि अर्थदण्ड के रूप में वसूल की गई । कई लोगों को बेंत की सजा दी गई। इस दौरान जिन मालगुजारों ने सत्याग्रह को कुचलने में सहयोग किया, उन्हें अंग्रेजी शासन द्वारा पुरूस्कृत किया गया। यह देश का दुर्भाग्य रहा है कि हमेशा अवसरवादियों ने देश के मान–सम्मान पर कुठाराघात करके अपने स्वार्थ के लिए दुश्मन का साथ दिया। जो रूद्री–नवागांव जंगल–सत्याग्रह के समय भी रहा।

इस प्रकार रूद्री नवागांव सत्याग्रह स्वतंत्रता आंदोलन का एक स्वर्णिम अध्याय है । जिसमें ब्रिटिश प्रशासन को हिलाकर रख दिया। यद्यपि कठोर दमन चक्र के द्वारा आंदोलन को दबाने का प्रयास किया गया, लेकिन देश भक्त सत्याग्रहियों के मन में स्वतंत्रता की दीपक जल रही थी, उसे बुझाने में ब्रिटिश प्रशासन असफल रही। जिसके परिणाम स्वरूप १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्रता रूपी दीपक जगमगा उठी ।

संदर्भ सूची

१. देवांगन शोभाराम, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में धमतरी नगर एवं तहसील का सक्रिय योगदान (हस्तलिखित पाण्डुलिपि)

२. ध्रुव रामजी, व्यक्तिगत साक्षात्कार , दिनांक ०४.११.२०१७

३. कुलदीप हेमलाल, पौत्र मंशाराम (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) व्यक्तिगत साक्षात्कार दिनांक २९.०१. २०१७

४. मिश्र डीपी, स्मरण, मध्यप्रदेश शासन, पं. द्वारिका प्रसार मिश्र, शताब्दी समारोह समिति भोपाल, प्रथम संस्करण २००१

५. शुक्ल अशोक, छत्तीसगढ़ का राजनैतिक इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन, युगबोध प्रकाशन रायपुर , १९८३

६. शर्मा जे. पी., मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आंदोलन, छत्तीसगढ़ के विशेश संदर्भ में १९२० – १९४७ , दुर्ग पब्लिकेशन दिल्ली , १९८९

७. शर्मा डॉ.रामगोपाल, रायपुर जिले में स्वतंत्रता आंदोलन १८५७ – १९४७, साई प्रकाशन धमतरी, रायपुर मध्यप्रदेश १९९४

❑❑❑

Bull. Cal. Math. Soc., **107**, (3) 193–204 (2015)

RELIABILITY MODELING AND ANALYSIS OF SINGLE UNIT SYSTEM WITH ENVIRONMENTAL FAILURE AND PM AT MOT

HEMANT KUMAR SAW[1] AND V.K. PATHAK[2]

(*Received ?? January 2015*)

Abstract : In this study we develop a Reliability model of single unit system in manufacturing plant. There are three modes of failures e.g. minor failure, major failure and environmental failure. The occurrence of minor failure brings the unit into degraded state whereas occurrence of major and environmental failure leads to complete failure of the system .After pre specific time known as Maximum operation time (MOT) the system undergoes for preventive maintenance (PM) directly from normal mode. There is a single server who visits the system immediately whenever needed to carry out preventive maintenance and repair. The unit works as good as new after preventive maintenance and repair. The failure and maximum operation times of the unit are distributed exponentially while the distributions of PM and repair times are taken as arbitrary. Using semi Markov process and regenerative point techniques expression for various reliability characteristics are obtained and expected profit is calculated. The tabular representation of MTSF, availability and profit with respect to maximum rate of operation time has also been shown for a particular case.

1. Introduction. Failure play important role in reliability. There are three basic type of failures-wear out failure, random failure and infant mortalities. But with the increase in complexity of present system we cannot neglect the effect of various failures such as major failure, catastrophic failure, minor failure, critical human failure and environmental failures etc. The environmental failure mainly occurs due to the operation of the system in unusual conditions which were not considered at the designing state of system.

In the field of reliability modeling large number of researchers, Gopalan, et al (1995), Rijwan et al (2000), Kumar et al. (2010), Nakagawa et al (1975), Parasar et al (2007), etc analyzed large number of system considering various concepts such as different failure modes, repair facilities, replacements, inspections, different operations stages. In most of these models it is assumed that the operating unit enters directly into the complete failed state with constant failure rate. But in practice, there are many situations where a unit operates on various degraded stages before its complete failure and thus it may fail completely, either directly from normal mode or via partial failure or via environmental failure. Furthermore continuous operation of a unit for a long time causes defects in the unit and increases the maintenance cost. Also, the continued operation and ageing of the systems gradually reduce their performance, reliability and safety. It can be seen from literature that preventive maintenance can slow the deterioration process

Bull. Cal. Math. Soc., **107**, (5) 411–420 (2015)

ECONOMIC AND PERFORMANCE EVALUATION OF A STOCHASTIC MODEL WITH HARDWARE FAILURE AND HUMAN ERROR

HEMANT KUMAR SAW[1] AND V.K. PATHAK[2]

(*Received 2 October 2015*)

Abstract. Human plays a pivotal role in the design, development and operational phases of engineering systems. Reliability evaluation of system without taking into consideration the human element does not provide a realistic picture. Hence, there is a definite need for incorporating the occurrence of human errors in system reliability evaluation. The proposed study we developed a stochastic Reliability model of single unit system in manufacturing plant. System has been investigated under the assumption that unit works in three different states: normal state, partial failed state and total failed state. The system suffers three types of failures viz; Hardware failure, Critical human failure and Non-critical human failure. After pre specific time known as Maximum operation time (MOT) the system undergoes for PM from partial failed state. There is a single server who visits the system immediately whenever needed to carry out preventive maintenance and repair. The unit works as good as new after preventive maintenance and repair. The failure and maximum operation times of the unit are distributed exponentially while the distributions of PM and repair times are taken as arbitrary. Using semi Markov process and regenerative point techniques expression for various reliability characteristics are obtained and expected profit is calculated. A special case for the proposed system was given in which human error is not considered. The results indicated that the system without human failure is greater than the system with human failure with respect to the MTSF, steady state availability and the profit.

1. Introduction. Gupta R.et al. (2006) have studied Stochastic analysis of a compound redundant system involving Human Failure. Goel, L.R., et al.(1984) studied Stochastic analysis of a two-unit parallel system with partial and catastrophic failures and preventive maintenance, Kadyan, M.S., et al. (2004) analyzed Stochastic analysis of non identical units reliability models with priority and different modes of failure Mahmood, M., et al.(1987) have studied Availability Analysis of a Repairable System with Common Cause Failure and One Standby Unit, Dhillon, B.S., et al. (1992) analyzed Stochastic Analysis of Standby System with Common Cause Failure and Human Error. Gupta, P.P., et al.(1986) studied Cost Analysis of a 2-unit Standby Redundant Electronic System with Critical Human Errors. Kumar, R.S., et al. (2010) have analyzed Reliability and cost benefit analysis of a three stage Operational warranted sophisticated system with various minor and major faults. Singh, S.K., et al. (1995) studied stochastic analysis of a two-unit cold standby system subject to maximum operation and repair time. Haggag, M.Y. (2011). Profit Analysis of Two-Dissimilar-Unit Cold Standby System with Three States under Human Failure. In these papers no attention was paid towards the effect of

Journal of the Calcutta Mathematical Society, **12**, (1) 47-61 (2016)

RELIABILITY, AVAILABILITY COST (RAC) ANALYSIS OF THREE UNIT SYSTEMS

V.K. PATHAK[1], H.L. MANKER[2], HEMANT KUMAR SAW[3] AND SEEMA SAHU[4]

(*Received 20 May 2016*)

Abstract : In this study we develop a Reliability model of three unit systems. The system consists of three units one main unit and two associate units. Here the associate units are dependent upon main unit and the system is operable when the main unit and at least one associate unit are operable. The system is taken in down mode when the main unit is not functioning. Main unit functions with help of associate units. As soon as a job arrives, all the units work with load. It is further assumed that only one job is taken for processing at a time. There is a single repairman who repairs the failed units on first come first served basis. Using semi Markov process and regenerative point techniques expressions for various reliability characteristics are obtained and expected profit is calculated. The tabular representation of MTSF, availability and profit with respect to maximum rate of operation time has also been shown for a particular case. In the end use of C program is made to evaluate values of MTSF, Availability and Busy Periods to calculate the expected profit.

Introduction : Standby redundant systems represent one approach to improving system reliability. Spare parts and back systems are examples of standby redundancy. Barlow and Proschan (1975), carried out pioneer work in the field of Reliability and Life Testing of Probabilistic models. Then on, redundant system with parallel configuration was discussed by the likes of Osaki (1980). Chandrashekhar et al (1995) performed the same study taking the Erlangian distribution in repair time. In recent years various reliability models have been formulated for predicting, estimating or optimizing the probability of survival, the mean life or more generally the life distribution of components or systems. Industries are trying to develop more and more automation in their industrial processes in order to meet the ever increasing demands of society. The complexities of industrial systems as well as their products are increasing day by day. A parallel work in this field was done by Bandor (Murari and Goel, 1984) by performing analysis of cold standby system with preventive maintenance and replacement of standby unit. Singh et al (2000) studied reliability characteristics of an integrated steel plant. This kind of analysis is of immense help to the owners of small scale industry. Also the involvement of preventive maintenance and replacement of standby unit in the models increase the reliability of the functioning units to great extent. In the last, the result is interpreted with the help of 'C' program.

The aim of this paper is to analyzing a system with three units namely one main unit A and two associate units B and C. Here the associate unit B and C are dependent upon main unit

A and the system is operable when the main unit and at least one associate unit are operable. The system is taken as down mode when the main unit is not functioning. Main unit functions with help of associate unit B and C. As soon as a job arrives, all the units work with load. It is further assumed that only one job is taken for processing at a time. There is a single repairman who repairs the failed units on first come first served basis Using semi Markov process and regenerative point techniques expression for various reliability characteristics are obtained and expected profit is calculated. The tabular representation of MTSF, availability and profit with respect to maximum rate of operation time has also been shown for a particular case. In the end use of C program is made to evaluate values of MTSF, Availability and Busy Periods to calculate the expected profit.

Materials and Method. In this study, the stochastic reliability of the system is analysed by using semi-Markov process and regenerative point techniques expression for various reliability measures like Mean time to system failure. (MTSF) the steady state Availability, Busy period of the server due to repair of failed unit at $t = 0$. Busy period of the server due to Preventive maintenance at $t = 0$. Expected down time at $t = 0$. Expected number of visit by server at $t = 0$. Profit incurred to the system

Assumptions

(a) The system consists of one main unit A and two associate units B and C.

(b) The main unit A works with the help of associate units B and C.

(c) There is a single repairman which repairs the failed units on priority basis.

(d) After a random period of time the whole system goes for preventive maintenance

(e) All units work as new after repair.

(f) The failure rates of all the units are taken to be exponential whereas the repair time distributions are arbitrary.

(g) Switching devices are perfect and instantaneous.

Symbols and Notations

p_{ij} = Transition probabilities from S_i to S_j

μ_i = Mean sojourn time at time t

E_0 = State of the system at epoch $t = 0$

E = set of regenerative states

$q_{ij}(t)$ = Probability density function of transition time from S_i to S_j

$Q_{ij}(t)$ = Cumulative distribution function of transition time from S_i to S_j

$\pi_i(t)$ = Cdf of time to system failure when starting from state $E_0 = S_i \in E$

$\mu_i(t)$ = Mean Sojourn time in the state $E_0 = S_i \in E$

$B_i(t)$ = Repairman is busy in the repair at time $t/E_0 = S_i \in E$

$r_1/r_2/r_3/r_4$ = Constant repair rate of Main unit A / Unit B/ Unit C / Shut down state

$\alpha/\beta/\gamma$ = Failure rate of Main unit A / Unit B / Unit C

$g_1/g_2/g_3$ = Probability density function of repair time of Main unit A / Unit B / Unit C

$\bar{G}_1/\bar{G}_2/\bar{G}_3$ = Cumulative distribution function of repair time of Main unit A / Unit B / Unit C

$g_4(t)/\bar{G}_4(t)$ = Pdf / Cdf of repair time of Shut down state.

$a(t)$ = Probability density function of preventive maintenance.

$b(t)$ = Probability density function of preventive maintenance completion time.

$\bar{A}(t)$ = Cumulative distribution functions of preventive maintenance.

$\bar{B}(t)$ = Cumulative distribution functions of preventive maintenance completion time.

[s] = Symbol for Laplace-stieltjes transforms.

[c] = Symbol for Laplace-convolution.

Symbols used for states of the system

$A_0/A_g/A_r$ — Main unit 'A' under operation/good and non-operative mode/repair mode

$B_0/B_r/B_g$ — Associate Unit 'B' under operation/repair/good and non-operative mode

$C_0/C_r/C_g$ — Associate Unit 'C' under operation/repair/good and non-operative mode

P.M. — System under preventive maintenance.

S.D. — System under shut down mode. Up states : $S_0 = (A_0, B_0, C_0)$; $S_2 = (A_0, B_r, C_0)$; $S_3 = (A_0, B_0, C_r)$

Down States : $S_1 = (A_r, B_0, C_0)$, $S_4 = (S.D.)$; $S_5 = (P.M.)$

Transition Probabilities. Simple probabilistic considerations yield the following non-zero transition probabilities

1. $p_{01} = \int_0^\infty \alpha e^{-(\alpha+\beta+\gamma)t} \bar{A}(t)\,dt = \frac{\alpha}{x_1}[1 - a^*(x_1)]$,

2. $p_{03} = \int_0^\infty \beta e^{-(\alpha+\beta+\gamma)t} \bar{A}(t)\,dt = \frac{\beta}{x_1}[1 - a^*(x_1)]$.

3. $p_{02} = \int_0^\infty \gamma e^{-(\alpha+\beta+\gamma)t}\bar{A}(t)dt = \frac{\gamma}{x_1}[1 - a^*(x_1)]$,

4. $p_{03} = \int_0^\infty a(t)e^{-(\alpha+\beta+\gamma)t}dt = a^*(x_1)$

5. $p_{20} = \int_0^\infty e^{-(\alpha+\gamma)t}g_2(t)dt = g_2^*(\alpha+\gamma)$,

6. $p_{24} = \int_0^\infty (\alpha+\gamma)e^{-(\alpha+\gamma)t}\bar{G}_2(t)dt = 1 - g_2^*(\alpha+\gamma)$,

7. $p_{30}(t) = \int_0^\infty e^{-(\alpha+\beta)t}g_3(t)dt = g_3^*(\alpha+\beta)$,

8. $p_{34}(t) = \int_0^\infty (\alpha+\beta)e^{-(\alpha+\beta)t}\bar{G}_3(t)dt = 1 - g_3^*(\alpha+\beta)$,

9. $p_{10} = p_{40} = p_{50} = 1$ where $x_1 = \alpha+\beta+\gamma$ (6.1-6.9)

And mean sojourn time are given by

10. $\mu_0 = \frac{1}{x_1}[1 - a^*(x_1)]$,

11. $\mu_1 = \int_0^\infty \bar{G}_1(t)dt$,

12. $\mu_2 = \frac{1}{\alpha+\gamma}[1 - g_2^*(\alpha+\gamma)]$,

13. $\mu_3 = \frac{1}{\alpha+\beta}[1 - g_3^*(\alpha+\beta)]$

14. $\mu_4 = \int_0^\infty \bar{G}_4(t)dt$

15. $\mu_5 = \int_0^\infty \bar{B}(t)dt$. (6.10-6.15)

Mean time to System failure. Time to system failure can be regarded as the first passage time to the failed state. To obtain it we regard the down state as absorbing. Using the argument as for the regenerative process, we obtain the following recursive relations:

$$\pi_0(t) = Q_{01} + Q_{02}(t)\,\boxed{s}\,\pi_2(t) + Q_{03}(t)\,\boxed{s}\,\pi_3(t) + Q_{05}(t)$$

$$\pi_2(t) = Q_{20}(t)\,\boxed{s}\,\pi_0(t) + Q_{24}(t)$$

$$\pi_3(t) = Q_{30}(t)\,\boxed{s}\,\pi_0(t) + Q_{34}(t) \qquad (7.1\text{-}7.3)$$

Taking Laplace-stieltjes transform of above equations and writing in matrix form

We get

$$\begin{bmatrix} 1 & -\tilde{Q}_{02} & -\tilde{Q}_{03} \\ -\tilde{Q}_{20} & 1 & 0 \\ -\tilde{Q}_{30} & 0 & 1 \end{bmatrix} \begin{bmatrix} \pi_0 \\ \pi_2 \\ \pi_3 \end{bmatrix} = \begin{bmatrix} \tilde{Q}_{01} + \tilde{Q}_{04} \\ \tilde{Q}_{24} \\ \tilde{Q}_{34} \end{bmatrix}$$

$$D_1(s) = \begin{vmatrix} 1 & -\tilde{Q}_{02} & -\tilde{Q}_{03} \\ -\tilde{Q}_{20} & 1 & 0 \\ -\tilde{Q}_{30} & 0 & 1 \end{vmatrix} = 1 - \tilde{Q}_{20}\tilde{Q}_{02} - \tilde{Q}_{03}\tilde{Q}_{30}$$

and $$N_1(s) \begin{vmatrix} \tilde{Q}_{01} + \tilde{Q}_{04} & -\tilde{Q}_{02} & -\tilde{Q}_{03} \\ \tilde{Q}_{24} & 1 & 0 \\ \tilde{Q}_{34} & 0 & 1 \end{vmatrix} = (\tilde{Q}_{01} + \tilde{Q}_{04} + \tilde{Q}_{02}\tilde{Q}_{24} + \tilde{Q}_{03}\tilde{Q}_{34}) \qquad (7.4\text{-}7.5)$$

Now letting $s \to 0$ and noting that $\lim_{t\to\infty} Q_{ij}(t) = p_{ij}$, we get,

$$D_1(0) = 1 - p_{02}p_{20} - p_{03}p_{30} \quad \text{and} \quad N_1(0) = p_{01} + p_{04} + p_{02}p_{24} + p_{03}p_{34}$$

The mean time to system failure when the system starts from the state S_0 is given by

$$\text{MTSF} = E(T) = -\left[\frac{d}{ds}\tilde{\pi}_0(s)\right]_{s=0} = \frac{D_1'(0) - N_1'(0)}{D_1(0)} \qquad (7.6)$$

To obtain the numerator of the above equation, we collect the coefficients of relevant of m_{ij} in $D_1'(0) - N_1'(0)$.

$$\text{Coeff. of } (m_{01} + m_{02} + m_{03} + m_{04}) = 1$$
$$\text{Coeff. of } (m_{20}) = p_{02}$$
$$\text{Coeff. of } (m_{30} + m_{34}) = p_{03}$$

From equation (7.6)

$$\text{MTSF} = E(T) = -\left[\frac{d}{ds}\tilde{\pi}_0(s)\right]_{s=0} = \frac{D_1'(0) - N_1'(0)}{D_1(0)} = \frac{\mu_0 + \mu_2 p_{02} + \mu_3 p_{03}}{1 - p_{02}p_{20} - p_{03}p_{30}} \qquad (7.7)$$

Availability Analysis. Let $M_i(t)$ $(i = 0, 1, 2,)$ denote the probability that system is initially in regenerative state $S_i \in E$ is up at time t without passing through any other regenerative state or returning to itself through one or more non regenerative states i.e. either it continues to remain in regenerative S_i or a non regenerative state including itself. By probabilistic arguments, we have the following recursive relations

$$M_0(t) = e^{-(\lambda+\beta+\gamma)t}\bar{A}(t), \quad M_2(t) = e^{-(\alpha+\gamma)t}\bar{G}_2(t), \quad M_3(t) = e^{-(\alpha+\beta)t}\bar{G}_3(t), \qquad (8.1\text{-}8.3)$$

Recursive relations giving point wise availability $A_i(t)$ given as follows :

$$A_0(t) = M_0(t) + \sum_{i=1,2,3,5} q_{0i}(t) \boxed{c} A_i(t);$$

$$A_1(t) = q_{10}(t) \boxed{c} A_0(t)$$

$$A_2(t) = M_2(t) + \sum_{i=0,4} q_{2i}(t) \boxed{c} A_i(t);$$

$$A_3(t) = M_3(t) + \sum_{i=0,4} q_{3i}(t) \boxed{c} A_i(t);$$

$$A_4(t) = Q_{40}(t) \boxed{c} A_0(t);$$

$$A_5(t) = q_{50}(t) \boxed{c} A_0(t); \qquad (8.4\text{-}8.9)$$

Taking Laplace transformation of above equations and writing in matrix form, we get

$$q_{6\times6}[A_0^*, A_1^*, A_2^*, A_3^*, A_4^*, A_5^*]^T = [M_0^*, 0, M_2^*, M_3^*, 0, 0]^T$$

where

$$\begin{bmatrix} 1 & -q_{01}^* & -q_{02}^* & -q_{03}^* & 0 & -q_{05}^* \\ -q_{10}^* & 1 & 0 & 0 & 0 & 0 \\ -q_{20}^* & 0 & 1 & 0 & -q_{24}^* & 0 \\ -q_{30}^* & 0 & 0 & 1 & -q_{34}^* & 0 \\ -q_{40}^* & 0 & 0 & 0 & 1 & 0 \\ -q_{50}^* & 0 & 0 & 0 & 0 & 1 \end{bmatrix}_{6\times6} \qquad (8.9a)$$

Therefore

$$D_2(s) = \begin{bmatrix} 1 & -q_{01}^* & -q_{02}^* & -q_{03}^* & 0 & -q_{05}^* \\ -q_{10}^* & 1 & 0 & 0 & 0 & 0 \\ -q_{20}^* & 0 & 1 & 0 & -q_{24}^* & 0 \\ -q_{30}^* & 0 & 0 & 1 & -q_{34}^* & 0 \\ -q_{40}^* & 0 & 0 & 0 & 1 & 0 \\ -q_{50}^* & 0 & 0 & 0 & 0 & 1 \end{bmatrix}_{6\times6}$$

$$= 1 - q_{01}^* q_{10}^* - q_{02}^*(q_{20}^* + q_{24}^* q_{40}^*) - q_{03}^*(q_{30}^* + q_{34}^* q_{40}^*) - q_{05}^* q_{50}^* \qquad (8.10)$$

If $s \to 0$ we get $(D_2(0)) = 0$ which is true.

Now,

$$N_2(s) = \begin{bmatrix} M_0^* & -q_{01}^* & -q_{02} & -q_{03}^* & 0 & -q_{06}^* \\ 0 & 1 & 0 & 0 & 0 & 0 \\ M_2^* & 0 & 1 & 0 & -q_{24}^* & 0 \\ M_3^* & 0 & 0 & 1 & -q_{34}^* & 0 \\ 0 & 0 & 0 & 0 & 1 & 0 \\ 0 & 0 & 0 & 0 & 0 & 1 \end{bmatrix}_{6\times 6}$$

Solving this Determinant, we get

$$N_2(s) = M_0^* + M_2^* q_{02}^* + M_3^* q_{03}^* \tag{8.11}$$

If $s \to 0$ we get

$$N_2(0) = \mu_0 + \mu_2 p_{02} + \mu_3 p_{03} \tag{8.12}$$

To find the value of $D_2'(0)$ we collect the relevant coefficient m_{ij} in $D_2(0)$ we get

$$\text{Coeff. of } (m_{01} = m_{02} = m_{03} = m_{06}) = 1 = L_0$$

$$\text{Coeff. of } (m_{10}) = p_{01} = L_1$$

$$\text{Coeff. of } (m_{20} = m_{24}) = p_{02} = L_2$$

$$\text{Coeff. of } (m_{30} = m_{34}) = p_{03} = L_3$$

$$\text{Coeff. of } m_{45} + p_{02}p_{24} + p_{03}p_{34} = L_4$$

$$\text{Coeff. of } m_{60} = p_{06} = L_6 \tag{8.13-8.18}$$

Thus the solution for the steady-state availability is given by

$$A_0^*(\infty) = \lim_{s \to 0} sA_0^*(s) = \frac{N_2(0)}{D_2'(0)} = \frac{\mu_0 L_0 + \mu_2 L_2 + \mu_3 L_3}{\sum\limits_{i=0,1,2,3,4,5} \mu_i L_i} \tag{8.19}$$

Busy period analysis

(a) Busy period of the Repairman in performing Normal repair in time (0, t]

Let $W_i(t)$ ($i = 1, 2, 3$) denote the probability that the repairman is busy initially with normal repair in regenerative state S_i and remain busy at epoch t without transiting to any other state or returning to itself through one or more regenerative states.

By probabilistic arguments we have

$$W_1(t) = \bar{G}_1(t),\ W_2(t) = \bar{G}_2(t),\ W_3(t) = \bar{G}_3(t) \tag{9.1-9.3}$$

Developing similar recursive relations as in availability, we have

$$B_0(t) = \sum_{i=1,2,3,4,5} q_{0i}(t) \boxed{c} B_i(t);$$

$$B_1(t) = W_1(t) + q_{10}(t) \boxed{c} B_0(t);$$

$$B_2(t) = W_2(t) + \sum_{i=0,3,4} q_{2i}(t) \boxed{c} B_i(t);$$

$$B_3(t) = W_3(t) + \sum_{i=0,3,4} q_{3i}(t) \boxed{c} B_i(t);$$

$$B_4(t) = q_{40}(t) \boxed{c} B_0(t);$$

$$B_5(t) = q_{50}(t) \boxed{c} B_0(t); \quad (9.4\text{-}9.9)$$

Taking Laplace transformation of above equations and writing in matrix form, we get

$$q_{6\times 6}[B_0^*, B_1^*, B_2^*, B_3^*, B_4^*, B_5^*]' = [0, w_1^*, w_2^*, w_3^*, 0, 0]' \quad (9.10)$$

Where $q_{6\times 6}$ is denoted by (8.3a) and therefore $D_2^*(s)$ is obtained as in the expression of availability.

Now,

$$N_3(s) = \begin{bmatrix} 0 & -q_{01}^* & -q_{02} & -q_{03}^* & 0 & -q_{05}^* \\ W_1^* & 1 & 0 & 0 & 0 & 0 \\ W_2^* & 0 & 1 & 0 & -q_{24}^* & 0 \\ W_3^* & 0 & 0 & 1 & -q_{34}^* & 0 \\ 0 & 0 & 0 & 0 & 1 & 0 \\ 0 & 0 & 0 & 0 & 0 & 1 \end{bmatrix}_{6\times 6}$$

So, we get the value of this determinant after putting $s \to 0$ is

$$N_3(0) = (\mu_1 p_{10} + \mu_2 p_{20} + \mu_3 p_{30})$$

$$= \mu_1 L_1 + \mu_2 L_2 + \mu_3 L_3 = \sum_{i=1,2,3} \mu_i L_i \quad (9.11)$$

Thus, in the long run, the fraction of time for which the repairman is busy with normal repair of the failed unit is given by

$$B_0^{1*}(\infty) = \lim_{t\to\infty} B_0^{1*}(t) = \lim_{s\to\infty} sB_0^{1*}(s) = \frac{N_3(0)}{D_2'(0)} = \frac{\sum_{i=1,2,3} \mu_i L_i}{\sum_{i=0,1,2,3,4,5} \mu_i L_i} \quad (9.12)$$

(b) Busy period of the Repairman in preventive maintenance in time (0, t]

By probabilistic arguments we have

$$W_1(t) = \bar{B}(t) \qquad (9.13)$$

Developing similar recursive relations as in B(a), we have

$$B_0(t) = \sum_{j=1,2,3,5} q_{0j}(t) \boxed{c} B_j(t),$$

$$B_1(t) = q_{10}(t) \boxed{c} B_0(t),$$

$$B_2(t) = \sum_{j=0,4} q_{2j}(t) \boxed{c} B_j(t),$$

$$B_3(t) = \sum_{j=0,4} q_{3j}(t) \boxed{c} B_j(t),$$

$$B_4(t) = q_{40}(t) \boxed{c} B_0(t),$$

$$B_5(t) = W_5(t) + q_{50}(t) \boxed{c} B_0(t) \qquad (9.14\text{-}9.19)$$

Taking Laplace transformation of above equations and writing in matrix form, we get

$$q_{6\times 6}[B_0^*, B_1^*, B_2^*, B_3^*, B_4^*, B_5^*]' = [0, 0, 0, 0, 0, W_5^*]'$$

Where $q_{6\times 6}$ is denoted by (9.9a) and therefore $B_0^*(s)$ is obtained as in the expression of availability.

Now,

$$N_4(s) = \begin{bmatrix} 0 & -q_{01}^* & -q_{02} & -q_{03}^* & 0 & -q_{05}^* \\ 0 & 1 & 0 & 0 & 0 & 0 \\ 0 & 0 & 1 & 0 & -q_{24}^* & 0 \\ 0^* & 0 & 0 & 1 & -q_{34}^* & 0 \\ 0 & 0 & 0 & 0 & 1 & 0 \\ W_5^* & 0 & 0 & 0 & 0 & 1 \end{bmatrix}_{6\times 6}$$

Solving this Determinant, In the long run, we get the value of this determinant after putting $s \to 0$ is

$$N_4(0) = p_{05}\mu_5 = p_5 \bar{T}_5 \qquad (9.20)$$

Thus, in the long run, the fraction of time for which the system is under preventive maintenance is given by :

$$B_2^{pr}(\infty) = \lim_{t \to \infty} B_2^{pr}(t) = \lim_{s \to 0} sB_2^{pr}(s) = \frac{N_4(0)}{D_2'(0)} = \frac{\mu_2 L_2}{\sum_{i=0,1,2,3,4,5} \mu_i L_i} \qquad (9.21)$$

(e) Busy period of the Repairman in Shut Down repair in time (0, t]

By probabilistic arguments we have

$$W_4(t) = \bar{G}_4(t) \qquad (9.22)$$

Developing similar recursive relations as in 9(b), we have

$$B_0(t) = \sum_{i=1,2,3,5} q_{0i}(t) \boxed{c} B_i(t);$$

$$B_1(t) = q_{10}(t) \boxed{c} B_0(t);$$

$$B_2(t) = \sum_{i=0,4} q_{2i}(t) \boxed{c} B_i(t);$$

$$B_3(t) = \sum_{i=0,4} q_{3i}(t) \boxed{c} B_i(t);$$

$$B_4(t) = W_4(t) + q_{40}(t) \boxed{c} B_0(t);$$

$$B_5(t) = q_{50}(t) \boxed{c} B_0(t); \qquad (9.23\text{-}9.28)$$

Taking Laplace transformation of above equations and writing in matrix form, we get

$$q_{6\times 6}[B_0^*, B_1^*, B_2^*, B_3^*, B_4^*, B_5^*]' = [0, 0, 0, 0, W_4^*, 0]'$$

Where $q_{6\times 6}$ is denoted by (9.9a) and therefore $D_2'(s)$ is obtained as in the expression of availability.

Now,

$$N_5(s) = \begin{bmatrix} 0 & -q_{01}^* & -q_{02}^* & -q_{03}^* & 0 & -q_{05}^* \\ 0 & 1 & 0 & 0 & 0 & 0 \\ 0 & 0 & 1 & 0 & -q_{24}^* & 0 \\ 0 & 0 & 0 & 1 & -q_{34}^* & 0 \\ W_4^* & 0 & 0 & 0 & 1 & 0 \\ 0 & 0 & 0 & 0 & 0 & 1 \end{bmatrix}_{6\times 6}$$

In the long run, we get the value of this determinant after putting $s \to 0$ is

$$N_3(0) = \mu_4(p_{02}p_{24} + p_{03}p_{34}) = \mu_4 L_4 \tag{9.29}$$

Thus the fraction of time for which the system is under shut down is given by :

$$B_0^{S^*}(\infty) = \lim_{t\to\infty} B_0^S(t) = \lim_{s\to 0} sB_0^{S^*}(s) = \frac{N_3(0)}{D_2(0)} = \frac{\mu_4 L_4}{\sum\limits_{i=0,1,2,3,4,5} \mu_i L_i} \tag{9.30}$$

Particular cases

When all repair time distributions are n-phase Erlangian distributions i.e.

Density function $\qquad g_i(t) = \dfrac{nr_i(nr_i t)^{n-1}e^{-nr_i t}}{n-1!}$ and

Survival function $\qquad \bar{G}_i(t) = \sum\limits_{j=0}^{n-1} \dfrac{(nr_i t)^j e^{-nr_i t}}{j!}$ $\qquad$ (10.1-10.2)

And other distributions are negative exponential

$$a(t) = \theta e^{-\theta t},\ b(t) = \eta e^{-\eta t},\ \bar{A}(t) = e^{-\theta t},\ \bar{B}(t) = e^{-\eta t} \tag{10.3-10.6}$$

For $n = 1$, $g_i(t) = r_i e^{-r_i t}$, $\bar{G}_i(t) = e^{-r_i t}$ if $i = 1, 2, 3, 4$

$$g_1(t) = r_1 e^{-r_1 t},\ g_2(t) = r_2 e^{-r_2 t},\ g_3(t) = r_3 e^{-r_3 t},\ g_4(t) = r_4 e^{-r_4 t}$$

$$\bar{G}_1(t) = e^{-r_1 t},\ \bar{G}_2(t) = e^{-r_2 t},\ \bar{G}_3(t) = e^{-r_3 t},\ \bar{G}_4(t) = e^{-r_4 t} \tag{10.7-10.14}$$

Also $\qquad p_{01} = \dfrac{\alpha}{r_1 + \theta},\ p_{02} = \dfrac{\beta}{r_1 + \theta},\ p_{03} = \dfrac{\gamma}{r_1 + \theta},\ p_{04} = \dfrac{\theta}{r_1 + \theta}$

$p_{25} = \dfrac{r_2}{\alpha + \gamma + r_2},\ p_{26} = \dfrac{\alpha + \gamma}{\alpha + \gamma + r_2}$

$p_{35} = \dfrac{r_3}{\alpha + \beta + r_3},\ p_{36} = \dfrac{\alpha + \beta}{\alpha + \beta + r_3},\ \mu_0 = \dfrac{1}{r_1 + \theta},\ \mu_1 = \dfrac{1}{r_1},$

$\mu_2 = \dfrac{1}{\alpha + \beta + r_2},\ \mu_3 = \dfrac{1}{\alpha + \gamma + r_3} =,\ \mu_4 = \dfrac{1}{r_4},\ \mu_5 = \dfrac{1}{\eta}$ $\qquad$ (10.15-10.30)

$$MTSF = \frac{\mu_0 + p_{01}\mu_1 + p_{02}\mu_2}{1 - p_{01}p_{10} - p_{02}p_{20}}, \quad A_0(\infty) = \frac{\mu_0 L_0 + \mu_1 L_1 + \mu_2 L_2}{\sum_{i=0,1,2,3,4,5} \mu_i L_i}$$

$$B_0^{r}(\infty) = \frac{\sum_{i=1,2,3} \mu_i L_i}{\sum_{i=0,1,2,3,4,5} \mu_i L_i},$$

$$B_0^{p}(\infty) = \frac{\mu_5 L_5}{\sum_{i=0,1,2,3,4,5} \mu_i L_i},$$

$$B_0^{s}(\infty) = \frac{\mu_4 L_4}{\sum_{i=0,1,2,3,4,5} \mu_i L_i} \qquad (10.31\text{-}10.35)$$

Where

$$L_0 = 1, \; L_1 = p_{01}; \; L_2 = p_{02}; \; L_3 = p_{13};$$
$$L_4 = p_{13}p_{34} + p_{23}p_{24}; \; L_5 = p_{05}; \qquad (10.36\text{-}10.41)$$

Profit Analysis

The profit analysis of the system can be carried out by considering the expected busy period of the repairman in repair of the unit in (0,t].

Therefore,

$G(t)$ = Expected total revenue earned by the system in (0,t]-Expected repair cost of the failed units-Expected repair cost of the repairman in preventive maintenance-Expected repair cost of the Repairman in shut down

$$= C_1\mu_{up}(t) - C_2\mu_{b1}(t) - C_3\mu_{b2}(t) - C_4\mu_{b3}(t)$$
$$= C_1A_0 - C_2B_0^{r} - C_3B_0^{p} - C_4C_0^{s} \qquad (11.1)$$

Where

$$\mu_{up}(t) = \int_0^t A_0(t)dt, \quad \mu_{b1} = \int_0^t B_0^{r}(t)dt;$$
$$\mu_{b2}(t) = \int_0^t B_0^{p}(t)dt, \quad \mu_{b3}(t) = \int_0^t B_0^{s}(t)dt \qquad (11.2\text{-}11.5)$$

C_1 is the revenue per unit time and C_2, C_3, C_4 are the cost per unit time for which the system is under simple repair, preventive maintenance and shut down repair respectively.

© Program

```
#include<stdio.h>
main( )
{
float etta,alp,beta,gamma,thita;
float r1,r2,r3,r4;
float L0,L1,L2,L3,L4,L5;
float MTSF;
float P01,P02,P03,P05;
float P20,P24;
float P30, P34;
float y1=0,y2=0,y3=0,y4=0,y5=0,y6=0;
float A;
float B1,B2,B3;
printf("alpha= ");
scanf ("%f",&alp);
printf("beta= ");
scanf ("%f",&beta);
printf("gamma= ");
scanf ("%f",&gamma);
printf("thita= ");
scanf ("%f",&thita);
printf("etta= ");
scanf ("%f",&etta);
printf("r1= ");
```

```
scanf ("%f",&r1);
printf("r2= ");
scanf ("%f",&r2);
printf("r3= ");
scanf ("%f",&r3);
printf("r4= ");
scanf ("%f", &r4);
y0=1/(alp+beta+gamma+thita);
y1=1/r1;
y2=(1/(alp+beta+r2));
y3=(1/(alp+beta+r3));
y4=1/r4;
y5=1/etta;
L1=P01=0;
L1=P01=(alp/alp+beta+gamma+thita);
L2=P02=0;
L2=P02=(beta/alp+beta+gamma+thita);
L3=P03=0;
L3=P03=(gamma/alp+beta+gamma+thita);
L5=P05=0;
L5=P05=(thita/alp+beta+gamma+thita);
P20=0;
P20=(r2/alp+beta+r3);
P21=0;
```

```
P24=(alp+gamma/alp+gamma+r2);
P30=0;
P30=(r3/alp+beta+r3);
P34=0;
P34=(alp+beta/alp+beta+r3);
L0=1;
L4=(P02*P24+P03*P34);
MTSF=(y0+y2*P02+y3*P03)/(1-P02*P20-P03*P30);
A=(y0*L0+y2*L2+y3*L3)/(y0*L0+y1*L1+y2*L2+y3*L3+y4*L4+y5*L5);
printf("\nMTSF=%f",MTSF);
printf("\n\nAvailability Analysis = %f", A);
return 0;
}
```

Table 1 : Variation in MTSF vis-a-vis failure rate of main unit for varying values of α

α	α1	α2	γ,θ,η,β	$r_2 r_4$	r_3, r_5	MTSF	MTSF1	MTSF2
0.01	0.1	0.001	0.002	0.01	0.001	113.80208	9.350672	26.955257
0.02	0.2	0.002	0.002	0.01	0.001	61.337563	5.314274	20.163548
0.03	0.3	0.003	0.002	0.01	0.001	32.614502	3.35257	22.027822
0.04	0.4	0.004	0.002	0.01	0.001	24.516527	2.318226	18.528139

Table 2 : Variation in Availability vis-a-vis failure rate of main unit for varying values of α

α	α1	α2	γ,θ,η,β	$r_2 r_4$	r_3, r_5	Availability	Availability1	Availability2
0.01	0.1	0.001	0.002	0.01	0.001	13.230258	2.076309	0.278114
0.02	0.2	0.002	0.002	0.01	0.001	9.264318	1.041542	0.26163
0.03	0.3	0.002	0.002	0.01	0.001	5.172041	0.028835	0.251071
0.04	0.4	0.004	0.002	0.01	0.001	4.147388	0.021387	0.228383

Graphical Representation

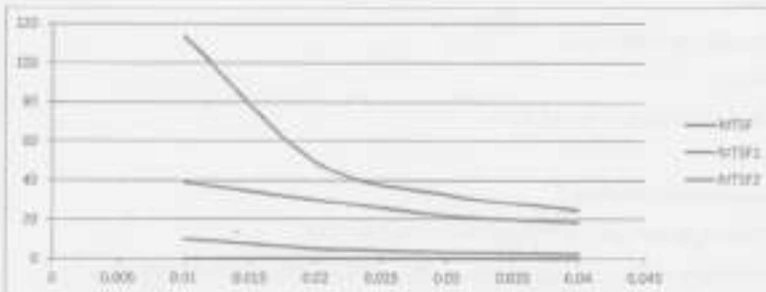

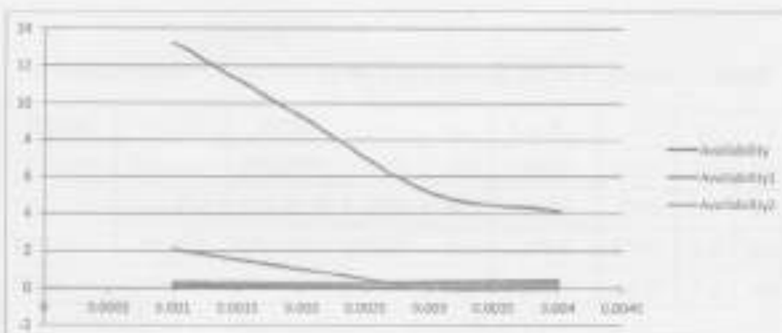

Discussion. It is seen from the graphs that value of MTSF decreases with increase in the failure rate of main unit. The same can be predicted in the case of Availability. It is also seen that with the application of preventive maintenance technique Availability increases to some extent.

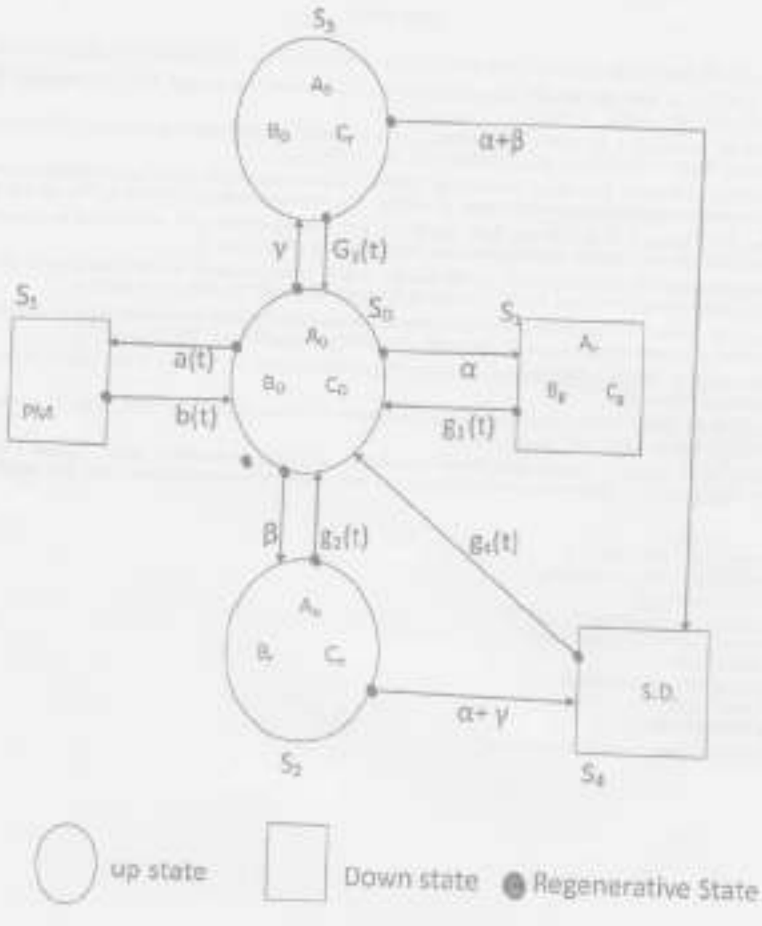

Figure 1 : State transition diagram

References

Barlow, R.E. and Proshan (1975) : Statistical Theory of Reliability and Life Testing Probability Models.

Osaki (1980) : A two unit parallel redundant system with bivariate exponential life. Microelectron and Reliability Vol. **20**, pp 521.

Murari, K. and Goel, L.R. (1984) : Comparison of two unit cold standby reliability models with three types of repair facilities. Microelectron and Reliability, Vol. **24**, pp 35.

Bandar M.C.; Kumar Ashok and Suresh, K. (2004) : Cost analysis of two dissimilar unit standby system with preventive maintenance and replacement of standby unit. Microelectron and Reliability, Vol. **34**, pp 171.

Gupta, R.; Tyagi, P.K. and Goel, L.R. (1995) : A cold standby system with arrival time of server and correlated failures and repairs. Microelectron and Reliability, Vol. **35**(4), pp 739.

Chandrashekhar, P.; Natarajan, R. and Yadavalli, V.S.S. (2004) : A study on a two unit standby system with Erlangian repair time. *Asia Pacific Journal of Operation Research*, Vol. **21**, no. 3, pp 271.

Singh, S.K. (2000) : On the estimation and computational analysis of reliability characteristics of a standard mill system of an integrated steel plant. Stochastic Modeling and Application. Vol. 3(1), pp.58.

Muller, M.A.V. (2005) : Probabilistic Analysis of Repairable Redundant Systems. Ph.D. thesis, University of Pretoria, South Africa.

Pathak, V.K. (2012) : Wind mill system having one main unit and three associative Units. *Journal of National Academy of Mathematics*. Vol. **26**, pp 35.

Pathak, V.K. (2013) : Comparative study of reliability parameter of a system under different types of distribution functions. *African Journal of Mathematics and Computer Science Research*, Vol. **7**(4) pp 47.

[1,4]ASSISTANT PROFESSOR
BCS GOVT. P.G. COLLEGE,
DHAMTARI (C.G.)

[2]ASSISTANT PROFESSOR
GOVT. GHG. P.G. COLLEGE
BALOD (C.G.)

[3]ASSISTANT PROFESSOR
BRDS GOVT. COLLEGE
KHAIRAGARH (C.G.)

E-MAIL : [illegible]@gmail.com

Smi-4965

39

समेकित बाल विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन मे आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की भूमिका धमतरी जिला के विशेष संदर्भ मे

डॉ.अनिता राजपुरिया,
प्राध्यापक समाजशास्त्र,बी.सी.एस.शा.स्ना.महा.धमतरी
श्रीमति मीनाक्षी देवांगन,
शोधार्थी, शा.दू.ब.महिला स्ना. स्वशासी महा. रायपुर

****

समेकित बाल–विकास सेवा जा महिला एवं बाल–विकास विभाग की फलैगशिप सेवा है जो २अक्टूबर १९७५ से प्रारंभ की गयी । यह परियोजना विश्व की सबस बड़ी संचालित परियोजना है । इस योजना मे १६३ बाल–विकास परियोजनाएं है । १६३ बाल–विकास परियोजनाओं मे से ६३ ग्रामीण, ८३ आदिवासी १४ शहरी बाल–विकास परियोजनाएं है । इन योजनाओं के क्रियान्वयन मे आंगनबाड़ी कार्यकर्ता की महत्वपूर्ण भूमिका है । देश के स्वस्थ विकास हेतु देश की जनसंख्या का स्वस्थ होना जरूरी है देश की आबादी की जरूरतों की पूर्ति हेतु कुशल चिकित्सक, नर्सो, स्वास्थ्य केन्द्रो की सम्पूर्ण देश मे बहुत कमी है। आगंनबाड़ी कार्यकर्ता इस कमी को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । वे केन्द्र एवं राज्य सरकार की अन्य परियोजनाओं एवं उनके लक्ष्य सभी के लिए स्वास्थ्य को पूर्ण करने मे सबसे महत्वपूर्ण कड़ी के रुप मे कार्य कर रही है अत: समेकित बाल विकास कार्यक्रमों के तहत् आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की भूमिका का अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र मे किया गया है ।

स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के बावजूद आज भी ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों मे जनसंख्या के दृष्टिकोण से चिकित्सकों की एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की भारी कमी है । छत्तीसगढ़ राज्य मे २१ लाख परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे है जो कि राज्य की कुल जनसंख्या का ४५ प्रतिशत है राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण –३ के आंकड़ों के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य मे शिशु मृत्यु दर, मातृ मृत्यु दर, कुपोषित बच्चों एवं माताओं की संख्या राष्ट्रीय स्तर के आंकड़ों की अपेक्षा काफी अधिक है जो कि एक चिन्ता का विषय है।

राज्य मे कुपोषित माताओं एवं बच्चों की संख्या काफी अधिक होने के कई कारण है जैसे अशिक्षा, खाद्–असुरक्षा, शासकीय योजनाओं की पूर्ण जानकारी न होना, गरीबी इत्यादि । राज्य मे महिलाओं और बच्चों के पोषण स्तर को सुधारने के अनेक प्रयास किये जा रहे है । इन लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु भारत सरकार महत्वपूर्ण योजना समेकित बाल–विकास योजना के तहत् ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों मे आगंनबाड़ी व मिनी आंगनबाड़ी केन्द्रों का संचालन कर रही है जिसमे योजना के क्रियान्वयन हेतु आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की जाती है ।जिससे आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अपने सूझ बूझ से गांव के गर्भवती माताओं,बच्चों शिशुवती माताओं ,किशोरी को स्वास्थ्य के बारे पूर्ण रुप से जानकारी देती है ।

समेकित बाल विकास योजनाओं द्वारा निम्न उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है

०–६ वर्ष के आयु वर्ग के बच्चो के पोषाहार और स्वास्थ्य स्तर मे सुधार लाना ,बच्चो के उचित मानसिक,शारीरिक और सामाजिक विकास के लिए भूमिका तैयार करना ,मृत्युता,रूग्णता के पोषण और स्कूल से निकाले जाने की घटनाओं को कम करना ,बाल विकास को बढ़ाव देने के लिए विभिन्न विभागों के बीच नीति और कार्यान्वयन के बीच प्रभाव समन्वय स्थापित करना, बच्चे की सामान्य स्वास्थ्य और पोषाहार और स्वास्थ्य टीका के माध्यम से माता की क्षमता को बढ़ाना समेकित बाल विकास योजनाओं का उद्देश्य ६ वर्ष से कम आयु के बच्चों तथा गर्भवती और शिशुवती माताओं को पूरक पोषाहार रोग प्रतिरोधन स्वास्थ्य परीक्षण सेवाएं और परामर्श सेवाएं,बच्चो को अनौपचारिक स्कूल पूर्व शिक्षा और महिलाओं को पोषाहार और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है । पिछले

ग्रामिणो और आदिवासी क्षेत्रों तथा शहरी गन्दी बस्तियों मे चुनिन्दा ब्लाको मे परियोजनाएं शुरु की जा रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

१.समेकित बाल विकास सेवाओ के लक्ष्य को प्राप्त करने मे आंगनबाडी कार्यकर्ताओ का योगदान ।

२. स्वास्थ्य स्तर के सुधार कार्यकमो मे आंगनबाडी कार्यकर्ताओ की अहम् भूमिका ।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

१. समेकित बाल विकास सेवाओ के लक्ष्य को प्राप्त करने मे आंगनबाडी कार्यकर्ताओ का योगदान रहा है।

२. स्वास्थ्य स्तर के सुधार कार्यकमो मे आंगनबाडी कार्यकर्ताओ की अहम् भूमिका रही है।

शोध साहित्य की पूर्वालोकन

एस. लाल (१९८२) का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एकीकृत बाल–विकास सेवा एंव योजनाओ के तहत् गम्भीर रूप से कुपोषित बच्चों और महिलाओं के विकास के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य करती है । एस.घोष (१९९२) ने अपने अध्ययन मे यह निष्कर्ष दिया कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अपने कार्यो को इतनी कुशलता पूर्वक करती है कि उनके द्वारा दिये गए पोषण आहार को गर्भवती माताओ, शिशुवती माताओं व बच्चे विश्वास के साथ ग्रहण करते है।मृ कपिल, डी नायर,एस. चतुर्वेदी (१९९३) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि एकीकृत महिला एवं बाल–विकास विभाग में स्थानीय स्तर पर कार्यरत् आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ०–६ वर्ष के बच्चों व गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषण व प्राथमिक शिक्षा के लिए उचित रूप से सेवा प्रदान करती है।डा.आर.डोंगर, पी.आर.देशमुख और बी.एस. गर्ग (२००८) – के अध्ययन में यह बताया है कि कुपोषण की बहुआयामी समस्या को कम करने के लिए महिला एवं बाल–विकास परियोजना द्वारा आंगनबाड़ी कार्यकर्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओ की विशिष्ट क्षेत्र गतिविधियों के लिए और अधिक ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है ।

अध्ययन पद्धति एवं क्षेत्र परिचय

शोध अध्ययन का क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य का धमतरी जिला है । धमतरी जिला छत्तीसगढ़ के मध्य में स्थित है । धमतरी जिला ०६ जुलाई १९९८ से अस्तित्व मे आया। इसके पूर्व मे रायपुर जिला की तहसील के रुप मे मान्यता प्राप्त थी। धमतरी जिला का निर्माण तीन तहसील धमतरी,कुरुद, और नगरी के रुप मे हुई थी तथा कुछ समय के बाद मे मगरलोड़ को चौथा तहसील के रुप मे मान्यता प्रदान की गई। धमतरी जिला मे तीन विधान सभा क्षेत्र शामिल है। धमतरी जिला मे (०–६) वर्ष आयु के बच्चों की जनसंख्या१,००, ५७५ है जिससे लड़के ५१,०७३ व लड़कियाँ ४९,५०२ है धमतरी जिला मे बाल लिंग अनुपात १००० पुरुषों पर ९६९ महिलाएं है। वर्तमान मे धमतरी जिला मे कुल १०५० आंगनबाडी केन्द्र है जिनमे कमशः धमतरी मे २८७,कुरुद मे २६९ ,नगरी मे ३१७ एवं मगरलोड मे १७७ आंगनबाडी केन्द्र संचालित है।चारो विकासखण्ड के आंगनबाडी कार्यकर्ताओं के कार्य का प्रस्तुत अध्ययन हेतु उद्धेश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा चयनित ५० आंगनबाडी कार्यकर्ताओं से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक तथ्यो का संकलन किया गया है। तथ्य संकलन हेतु प्रत्येक उत्तरदाता से प्रत्यक्ष सम्पर्क करके गहन साक्षात्कार के माध्यम से अध्ययन हेतु तथ्यों का संकलन किया गया है

शोध विषय की प्रकृति को देखते हुए साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया है और उसकी सहायता से अध्ययन विषय के विभिन्न पक्षों से सम्बधित जानकारी प्राप्त की गयी है।

तलिका क्रमांक ०१

शासन के द्वारा संचालित योजनाओ की प्रभावशीलता विषयक राय

क्रमांक	योजनाओं का प्रभावशील	आवृति	प्रतिशत
१	कम	४	८.००
२	सामान्य	१७	३४.००
३	अधिक	२६	५२.००
४	बहुत अधिक	३	६.००
५	बिल्कुल कम	०	००
	योग	५०	१००

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शासन के द्वारा संचालित योजनाओ का प्रभावशील के बारे मे

आंगनबाडी कार्यकर्ताओ के द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार आधे से कुछ अधिक अर्थात् ५२.०० प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि यह योजना अधिक प्रभावशील है। एक तिहाई से कुछ अधिक अर्थात् ३४.०० प्रतिशत आंगनबाडी कार्यकर्ता उत्तरदाताओं ने विचार व्यक्त किया कि यह योजना सामान्य प्रभावशील है। ८.०० प्रतिशत आंगनबाडी कार्यकर्ता उत्तरदाताओं ने कहा कि यह योजना कम प्रभावशील है एवं ६.०० प्रतिशत आंगनबाडी कार्यकर्ता उत्तरदाताओं ने विचार व्यक्त किया कि यह योजना बहुत अधिक प्रभावशील है उत्तरदाताओं ने इन योजनाओं के कियान्वयन हेतु किये कार्य के परिणाम स्वरूप यह विचार व्यक्त किया है।

तलिका कमांक १(अ)

समेकित बाल विकास कार्यकम मे ग्रामिण महिलाएं एवं किशोरीयो की सहभागिता विषयक रायें

कमांक	सहभागी होना	आवृति	प्रतिशत
१	पूर्णत:	९	१८.००
२	बहुत हद तक	२३	४६.००
३	सामान्य हद तक	१३	२६.००
४	कुछ हद तक	५	१०.००
५	बिलकुल नही	०	००
	योग	५०	१००

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शासन के द्वारा संचालित समेकित बाल विकास कार्यकम मे गांव की महिलाएं एवं किशोरीयो की पूर्ण रूप से सहभागिता होने के संबंध मे आंगनबाडी कार्यकर्ताओ उत्तरदाताओं के द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार आधे से कुछ कम ४६.०० प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत हद तक ,एक चौथाई से कुछ अधिक २६.००प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सामान्य हद तक, १८.०० प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पूर्णत: एवं ५.०० प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार कम हद समेकित बाल विकास कार्यकमों मे गांव की महिलाओं एवं किशोरीयों के सहभागी होने संबंधी विचार व्यक्त किये उत्तरदाता आंगनबाडी कार्यकर्ताओं का यह मानना है कि आज सभी ग्रामीण महिलाए इन कार्यकमो मे रूचि ले रही है तथा इनसे लाभान्वित हो रही है।

तलिका कमांक १(ब)

समेकित बाल विकास कार्यकम हेतु जागरूकता लाने मे सफल होने विषयक रायें

कमांक	जागरूकता लाने मे सफल होने होना	आवृति	प्रतिशत
१	पूर्णत:	१२	२४.००
२	बहुत हद तक	२८	५६.००
३	सामान्य हद तक	९	१८.००
४	कम हद तक	१	२.००
५	बिलकुल नही	०	००
	योग	५०	१००

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शासन के द्वारा संचालित विकास योजनाओं के प्रति लोगो को जागरूक करने मे सफल होने के संबंध मे आधे से कुछ अधिक अर्थात् ५६.०० उत्तरदाताओं ने बहुत हद तक सफल होने, २४.०० प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पूर्णत सफल होने ,१८.००प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सामान्य हद तक सफल होने एवं मात्र २.०० प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कम हद तक जागरूक लाने मे सफल होने की बात कही है। ऐसी कोई भी आंगनबाडी कार्यकर्ता उत्तरदाता नही है जिसने समेकित बाल विकास कार्यकम हेतु जागरूकता लाने मे सफल न हो पाने की बात कही सभी उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके प्रयासो से जागरूकता अवश्य आयी है।

तलिका कमांक २

समेकित बाल विकास कार्यकम मे स्वास्थ्य स्तर मे सुधार आने विषयक रायें

कमांक	स्वास्थ्य स्तर मे सुधार	आवृति	प्रतिषत
१	पूर्णत:	१३	२६.००
२	बहुत हद तक	३०	६०.००
३	सामान्य हद तक	६	१२.००
४	कम हद तक	१	२.००
५	बिलकुल नही	०	००
	योग	५०	१००

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ६०.०० प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बहुत हद तक ,एक चौथाई से कुछ अधिक २६.००प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पूर्णत:, १२.०० प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सामान्य हद तक एवं मात्र २.००प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कम हद तक समेकित बाल विकास कार्यकम मे बच्चों एवं महिलाओं के आंगनबाडी से सम्बधित योजनाओं से